RNI.No. — GUJHIN/2012/45192

सूरत भूमि

हिन्दी दैनिक

संपादक : संजर आर. मिश्रा

श्री 1008 महामंडलेश्वर
श्री स्वामी रामानंद दासजी महाराज
श्री रामानंद दास अन्नक्षेत्र सेवा ट्रस्ट, तपोवन आश्रम

स्व. पं.पू.1008 श्री रामानन्द जी
तपोवन मंदिर, मोरा गांव, सूरत

वर्ष-9 अंक: 276 ता. 14 अप्रेल 2021, बुधवार, कार्यालय :114, न्यु प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेंट, डिंडोली, उधना सूरत (गुजरात) मो. 9327667842, 9825646069 पृष्ठ: 8 कीमत: 2:00 रुपये

ho@suratbhumi.com /Suratbhumi.com /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi

सुप्रीम कोर्ट ने पोर्शे कार हादसा मामले में सुनाया बड़ा फैसला, बीमा कंपनी के दावे को ठहराया सही

नई दिल्ली। करीब 14 साल पहले इंडिया गेट पर सुबह के समय एक पोर्शे कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई थी। इस मामले में अब सुप्रीम कोर्ट ने बीमा दावे को नामंजूर करने के बीमा कंपनी के फैसले को सही ठहराया है। अदालत ने कहा कि कार चालक ने शराब पी रखी थी, ऐसे में बीमा कंपनी द्वारा दावे से मुकरना उचित है। यह लक्जरी कार पर्ल बेवरेजेज लिमिटेड कंपनी की थी। इसे अमन बांगिया चला रहा था। कथित तौर पर वह कार को बेतरतीब ढंग से चला रहा था। तभी कार इंडिया गेट पर चिल्ड्रन पार्क के पास फुटपाथ से टकराकर क्षतिग्रस्त हो गई जिसके बाद उसमें आग लग गई थी। यह हादसा 22 दिसंबर, 2007 को सुबह-सुबह हुआ था।

एनसीडीआरसी ने बीमा कंपनी के फैसले को ठहराया था गलत-जस्टिस यूयू ललित, जस्टिस इंदिरा बनर्जी और जस्टिस केएम जोसेफ की पीठ ने राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निपटान आयोग (एनसीडीआरसी) के फैसले को खारिज कर दिया। एनसीडीआरसी ने अपने फैसले में कहा था कि बीमा कंपनी इफको टोकियो जनरल इंश्योरेंस लिमिटेड इस मामले में बीमा अनुबंध की धारा (2सी) का सहारा लेते हुए किसी व्यक्ति के शराब या कोई अन्य नशीला पदार्थ लेकर वाहन चलाने के आधार पर बीमा दावे को खारिज नहीं कर सकती। एनसीडीआरसी ने अपने फैसले में कहा था कि बीमा कंपनी द्वारा दावा खारिज करना गलत था। इससे पहले राज्य उपभोक्ता विवाद निपटान आयोग (एसीडीआरसी) ने कार की मालिक कंपनी की शिकायत को इस आधार पर खारिज कर दिया था कि इस बात के प्रमाण हैं कि कार चलाने वाला व्यक्ति शराब के प्रभाव में था। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस जोसेफ ने एनसीडीआरसी के आदेश के खिलाफ 181 पृष्ठ का फैसला लिखा।

कोरोना वायरस से बिगड़ रहे देश में हालात, राज्यपालों से बात करेंगे उपराष्ट्रपति नायडू-पीएम मोदी

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बुधवार को कोविड-19 से उपजी मौजूदा परिस्थितियों के मद्देनजर विभिन्न राज्यों के राज्यपालों से संवाद करेंगे। सूत्रों ने यह जानकारी दी। देश में बढ़ते कोरोना संक्रमण के चलते कई जगह हालात काफी खराब होने लगे हैं और ऐसे में इस प्रकार की यह पहली बैठक हो रही है, जिसमें प्रधानमंत्री मोदी और उपराष्ट्रपति, राज्यपालों से संवाद करेंगे। सूत्रों के मुताबिक, इस संवाद के दौरान कोरोना से बचाव संबंधी उपायों का जनता द्वारा पालन करना प्रमुख मुद्दा रहेगा।

प्रधानमंत्री ने पिछले दिनों मुख्यमंत्रियों के साथ संवाद किया था और उस दौरान कहा था कि लोगों की लापरवाही और प्रशासन की सुस्ती के कारण कोरोना के ताजे मामलों में वृद्धि हुई है। उन्होंने लोगों के बीच बचाव संबंधी जागरूकता फैलाने और पात्र लोगों को टीका लगवाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए राज्यपालों और समाज की विभिन्न हस्तियों को शामिल करने का आह्वान किया था।

उन्होंने कहा था, हमें लोगों को ये बार-बार बताना होगा कि टीका लगने के बाद भी मास्क और अन्य जो उपाय हैं उसका पालन अनिवार्य है। लोगों में मास्क और सावधानी को लेकर जो लापरवाही आई है, उसके लिए फिर से जागरूकता जरूरी है। जागरूकता के इस अभियान में हमें एक बार फिर समाज के प्रभावी व्यक्तियों, सामाजिक संगठनों, हस्तियों को अपने साथ जोड़ना होगा।

इस संवाद के दौरान ही प्रधानमंत्री ने मुख्यमंत्रियों से इस काम में राज्यपालों का भरपूर उपयोग करने का आग्रह किया था और सर्वदलीय बैठक बुलाकर आगे की रणनीति पर काम करने का सुझाव दिया था। उन्होंने कहा था, मेरा आग्रह है कि गवर्नर साहब और मुख्यमंत्री मिल कर जितने भी चुने हुए प्रतिनिधि हैं उनसे डिजीटल माध्यम से संवाद करें। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के प्रयासों से समाज में सकारात्मक संदेश जाएगा।

उन्होंने कहा था, मैं समझता हूं कि गवर्नर के माध्यम से इस प्रकार के लगातार भिन्न-भिन्न समाजों के लोगों को जोड़ने का एक आंदोलन चलाया जाए और इसके माध्यम से बचाव संबंधी उपायों का पालन करने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया जाए। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक, भारत में कोरोना वायरस संक्रमण के अब तक के सर्वाधिक 1,68,912 नए मामले सामने आने के बाद संक्रमितों की कुल संख्या बढ़कर 1,35,27,717 हो गई है। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने पिछले साल मार्च के महीने में राज्यपालों से संवाद किया था जब कोरोना संक्रमण के मामले देश में फैलने लगे थे।

प्रधानमंत्री ने पिछले दिनों मुख्यमंत्रियों के साथ संवाद किया था और उस दौरान कहा था कि लोगों की लापरवाही और प्रशासन की सुस्ती के कारण कोरोना के ताजे मामलों में वृद्धि हुई है। उन्होंने लोगों के बीच बचाव संबंधी जागरूकता फैलाने और पात्र लोगों को टीका लगवाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए राज्यपालों और समाज की विभिन्न हस्तियों को शामिल करने का आह्वान किया था।

कोरोना की रफ्तार में मामूली कमी, 24 घंटे के अंदर आए 1.6 लाख केस, ऐक्टिव केस 12 लाख पार

नई दिल्ली। देश में कोरोना वायरस महामारी का प्रकोप काफी तेजी से बढ़ता जा रहा है। हालांकि, बीते 24 घंटे के अंदर नए मामलों में थोड़ी कमी देखी गई है लेकिन फिर भी ताजा आंकड़े 1 लाख 60 हजार के पार हैं। अब देश में कुल संक्रमितों का आंकड़ा 1 करोड़ 36 लाख के पार पहुंच गया है। विभिन्न राज्यों की ओर से सोमवार देर रात तक मिले आंकड़ों के मुताबिक इस दौरान देश में 1,60,694 नए मामले दर्ज किए गए। इसके साथ ही संक्रमितों की संख्या एक करोड़ 36 लाख 86 हजार 73 हो गई है। इस दौरान 96 हजार 727 मरीज स्वस्थ हुए हैं जिसे मिलाकर अब तक 1 करोड़ 22 लाख 50 हजार 440 मरीज कोरोनामुक्त भी हो चुके हैं। इसी अवधि में सक्रिय मामले 57,897 और बढ़कर 12 लाख 58 हजार 906 हो गए हैं। इसी अवधि में 880 और मरीजों की मौत के साथ इस बीमारी से मरने वालों की संख्या बढ़कर 1 लाख 71 हजार 89 हो गई है। देश में रिकवरी दर आंशिक घटकर 89.51 फीसदी और सक्रिय मामलों की दर बढ़कर 9.19 प्रतिशत हो गया है जबकि मृत्युदर घटकर 1.25 फीसदी रह गयी है। महाराष्ट्र कोरोना के सक्रिय मामलों में शीर्ष पर है लेकिन राहत की बात यह है कि नये मामलों की तुलना में स्वस्थ मरीजों की संख्या अधिक होने से सक्रिय मामलों में गिरावट दर्ज की गई है। इस दौरान सक्रिय मामलों में 841 की और कमी होने से इनकी संख्या आज घट कर 5,64,746 तक पहुंच गई लेकिन यह संख्या भी पूरे देश में सर्वाधिक है। राज्य में इस दौरान संक्रमण के सबसे ज्यादा (पूरे देश में) 51 हजार 751 नए मामले सामने आने से संक्रमितों की कुल संख्या बढ़कर 34,58,996 पहुंच गई है। इसी अवधि में 52,312 मरीजों के स्वस्थ होने से इस संक्रमण से निजात पाने वालों की संख्या बढ़कर 28,34,473 हो गई है तथा सबसे अधिक 258 और मरीजों की मौत होने से मृतकों का आंकड़ा 58,245 तक पहुंच गया है।

15 अप्रैल से केवल 2 घंटे या उससे अधिक की फ्लाइट्स में ही मिलेगी भोजन की सुविधा

नई दिल्ली। देश में कोरोना वायरस के मामलों में बढ़ोतरी के बीच नागर विमानन मंत्रालय ने सोमवार को कहा कि एयरलाइन कंपनियों को उन घरेलू उड़ानों में भोजन देने की अनुमति नहीं होगी, जिनकी यात्रा अवधि दो घंटे से कम है। मंत्रालय ने एक बयान में कहा, अब 15 अप्रैल से घरेलू क्षेत्रों में परिचालन करने वाली वे एयरलाइन्स ही भोजन सेवाएं प्रदान कर सकती हैं, जिनके उड़ान की अवधि दो घंटे या उससे अधिक की है। पिछले साल कोरोना वायरस के प्रसार को रोकने के लिये लॉकडाउन लगाए जाने के बाद जब 25 मई से निर्धारित घरेलू उड़ान सेवाएं शुरु की गई थीं, तब मंत्रालय ने एयरलाइन कंपनियों को कुछ शर्तों के तहत विमानों के भीतर भोजन उपलब्ध कराने की अनुमति दी थी। पूर्व के आदेश में संसोधन करते हुए मंत्रालय के नये निर्देशों में कहा गया है, घरेलू क्षेत्रों में विमानों का परिचालन कर रही एयरलाइन कंपनियां उन उड़ानों के दौरान भोजन उपलब्ध करा सकती हैं, जिनकी उड़ान की अवधि दो घंटे या उससे अधिक हो। मंत्रालय ने कहा कि 'कोविड-19 और उसके विभिन्न स्वरूपों के बढ़ते खतरे को देखते हुए उसने घरेलू उड़ानों में सफर के दौरान भोजन उपलब्ध कराए जाने की सुविधा की समीक्षा करने का फैसला किया है। उसने कहा कि एयरलाइन कंपनियों को उन उड़ानों में केवल पहले से पैक नाश्ता, भोजन और पहले से पैक पेय पदार्थ की मुहैया कराने की अनुमति है, जिनकी अवधि दो घंटे से अधिक है। मंत्रालय ने कहा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, कोविड-19 के ब्रिटेन, दक्षिण अफ्रीका और ब्राजील में सामने आये तीन नए वेरियंट्स के के तेजी से फैलने की बात सामने आयी है। भारत में सोमवार को कोविड-19 के रिकॉर्ड 1,68,912 नये मामले सामने आये, जिससे देश में संक्रमितों की संख्या बढ़कर 1,35,27,717 हो गई। उपचाराधीन मामले बढ़कर 12 लाख से अधिक हो गए हैं, जबकि 904 और मरीजों की मौत होने से मृतक संख्या बढ़कर 1,70,179 हो गई है। कोरोना वायरस महामारी के कारण भारत में 23 मार्च, 2020 से निर्धारित अंतरराष्ट्रीय उड़ानें निलंबित हैं।

दिल्ली-महाराष्ट्र में लॉकडाउन की आहट?

ट्रेन और बसों में भर-भर के घर वापस लौट रहे हैं मजदूर

नई दिल्ली। दिल्ली और महाराष्ट्र से कोरोना के हर रोज रिकॉर्ड संख्या में केस सामने आ रहे हैं। लोगों को अब लॉकडाउन का डर सताने लगा है। कोरोना की दूसरी लहर में अस्पताल भर गए हैं तो वहीं रेलवे स्टेशनों पर भी पैर रखने की जगह नहीं है। कोरोना के बढ़ते मामलों के बीच एक बार फिर से लॉकडाउन लगाए जाने की आहट है और इससे खौफजदा मजदूर जल्द से जल्द अपने-अपने घरों तक पहुंचना चाहते हैं। यही कारण है कि महाराष्ट्र के कई रेलवे स्टेशनों पर कतारें लगी हैं तो वहीं दिल्ली के बस अड्डों पर भी भारी भीड़ देखने को मिल रही है। कोरोना ने एक बार फिर मजदूरों पर कहर बरसाना शुरू कर दिया है। रोजगार छीन जाने के डर से मजदूर इन शहरों को छोड़कर अपने घरों की तरफ रवाना हो रहे हैं। दिल्ली में कई जगहों पर मजदूरों को अपना सामान कंधों पर लादकर बच्चों के साथ बस अड्डों पर गांव जाते हुए देखा गया। कोविड-19 के बढ़ते मामलों पर लगाम कसने के लिए महाराष्ट्र में संपूर्ण लॉकडाउन लगाए जाने की चर्चा के बीच मुंबई में बाहर जाने वाली रेलगाड़ियों में पिछले सप्ताहांत से भीड़भाड़ बढ़ गई है। यह जानकारी सोमवार को रेलवे के सूत्रों ने दी।

बस अड्डों और रेलवे स्टेशन पर भीड़

आनंद विहार बस अड्डे पर दिल्ली से अपने गांव जा रहे एक मजदूर ने कहा, जिस तेजी से मामले बढ़ रहे हैं उससे यह साफ होता है कि लॉकडाउन लगाया जाएगा। इसी वजह से मैं घर जा रहा हूं। वहीं महाराष्ट्र से अपने घर लौट रहे एक मजदूर ने कहा, लोगों के लिए मेडिकल सुविधाएं कम हैं और टीकाकरण भी धीमा चल रहा है। उन्होंने लॉकडाउन की स्थिति की आशंका जताई है इसलिए कुछ समय के लिए घर वापस आने का फैसला किया। बहरहाल, रेल प्रशासन ने गर्मी के मौसम को भीड़ का कारण बताया जिस दौरान बड़ी संख्या में लोग अपने गृह स्थानों की यात्रा करते हैं। सूत्रों ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा इस महीने की शुरुआत में कोविड-19 को लेकर नई पाबंदियां लगाने के बाद से ही बिहार जाने वाली रेलगाड़ियों में भीड़ बढ़ गई है, लेकिन सप्ताहांत में भीड़ ज्यादा देखी गई।

कोरोना के चलते हरियाणा सरकार का बड़ा फैसला, नाइट कर्फ्यू का किया ऐलान

चंडीगढ़। देशभर में कोरोना वायरस के नए मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। विभिन्न राज्यों में कोविड-19 की वजह से स्थिति काफी खराब होने लगी है, जिसके चलते सरकारें अहम फैसले लेने पर मजबूर हैं। हरियाणा की मनोहर लाल खट्टर सरकार ने सोमवार को नाइट कर्फ्यू लगाने का फैसला लिया है। हरियाणा में रात नौ बजे से लेकर सुबह पांच बजे तक नाइट कर्फ्यू लागू किया जा रहा है।

पिछले कुछ हफ्तों में विभिन्न राज्यों ने नाइट कर्फ्यू का ऐलान किया है। कोरोना के मामलों में वृद्धि की वजह से उत्तर प्रदेश, गुजरात, दिल्ली, कर्नाटक, महाराष्ट्र समेत कई राज्य नाइट कर्फ्यू समेत विभिन्न पाबंदियों को लागू कर चुके हैं। यूपी में लखनऊ, मुरादाबाद समेत विभिन्न शहरों में नाइट कर्फ्यू लागू है। सीएम योगी आदित्यनाथ ने ऐलान किया है कि जिन जिलों में रोजाना 100 से अधिक कोरोना के केस मिल रहे हैं या फिर जहां पर कुल एक्टिव केस की संख्या 500 से अधिक है, वहां रात्रि नौ बजे से सुबह 6 बजे तक कोरोना कर्फ्यू लगाया जाए। वहीं, कर्नाटक में बीते शनिवार से बेंगलुरु, मैसूरु, मंगलुरु, कलबुर्गी समेत कई जिलों में नाइट कर्फ्यू का ऐलान किया जा चुका है।

हरियाणा में कोविड-19 से 16 और मौतें होने से बीते दिन मृतकों की संख्या बढ़कर 3,268 हो गई है, जबकि संक्रमण के 3,440 नए मामले सामने आने से राज्य में संक्रमण के कुल मामले बढ़कर 3,16,881 हो गए हैं। जींद में तीन मौतें हुईं, जबकि पानीपत, यमुनानगर, भिवानी, करनाल, अंबाला में दो-दो मौतें और गुड़गांव, हिसार और सिरसा जिलों में एक-एक मौत हुई हैं। हरियाणा में पिछले अधिकतम दैनिक मामले 20 नवंबर, 2020 को आए थे, जब राज्य में 3,104 मामले सामने आए थे। वर्तमान में, राज्य में 20,981 मरीजों का इलाज चल रहा है, जबकि मरीजों के ठीक होने की दर 92.35 प्रतिशत है। बुलेटिन में कहा गया है कि अब तक कुल 2,92,632 लोग संक्रमण से उबर चुके हैं। हरियाणा स्वास्थ्य विभाग ने 1,627 कोविड-19 टीकाकरण केंद्र स्थापित किए हैं।

कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों के बीच AIIMS डायरेक्टर ने किया आगाह, अगर हालात नहीं बदले तो...

नई दिल्ली। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के निदेशक डॉ रणदीप गुलेरिया ने सोमवार को कहा कि लोगों का कोविड-उपयुक्त व्यवहार का पालन नहीं करने और सार्स-कोव-2 के उच्च संक्रामक स्वरूप का प्रसार भारत में कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों का मुख्य कारण हो सकता है। गुलेरिया ने आगाह किया कि अगर हालात नहीं बदले तो संक्रमण की तेजी से बढ़ती दर देश की स्वास्थ्य देखभाल व्यवस्था पर बड़ा दबाव डालेगी। उन्होंने प्रशासन और अधिकारियों द्वारा जमीन पर कोविड-उपयुक्त व्यवहार लागू कराने की मांग की। एम्स निदेशक ने कहा, फरवरी के करीब, जब मामले कम होना शुरू हुए तो लोग कोविड-उपयुक्त व्यवहार के प्रति लापरवाह हो गए और उन्हें लगने लगा कि वायरस अप्रभावी हो गया है।

बीमारी को हल्के में ले रहे लोग

गुलेरिया ने कहा, लोग अब बीमारी को हल्के में ले रहे हैं। अगर आप बाहर जाएं तो आप देखेंगे कि बाजारों, रेस्तरां और शॉपिंग माल में भीड़ है और वे लोगों से भरे पड़े हैं तथा ये सभी सुपर स्प्रेडर (तेजी से प्रसार फैलाने वाली) घटनाएं हैं। उन्होंने कहा कि इससे पहले यदि एक बीमार अपने संपर्क में आए करीब 30 फीसदी लोगों को संक्रमित कर सकता था तो इस बार बीमार पड़ रहे लोग बड़ी संख्या में लोगों को संक्रमित कर रहे हैं। गुलेरिया ने कहा कि इसलिए, संक्रमण के प्रसार की दर तेज है, इसका कारण शायद, अत्यधिक संक्रामक और संचार्य स्वरूप का फैलना है। भारत में सार्स-कोव-2 के विभिन्न स्वरूप फैल रहे हैं और विशेषज्ञों ने उन्हें तेजी से फैलाने वाला बताया है, जिनमें वायरस के ब्रिटेन, दक्षिण अफ्रीका और ब्राजील के प्रकार शामिल हैं।

कठिन समय से गुजर रही है पूरी मनुष्यता-गुलेरिया ने बताया कि पूरी मनुष्यता कठिन समय से गुजर रही है और जबतक जरूरी नहीं हो, तबतक लोगों को घरों से बाहर नहीं निकलना चाहिए। उन्होंने कहा, यह सुनिश्चित किया जाए कि लोग जमा न हों और कोविड-उपयुक्त व्यवहार का कड़ाई से पालन सुनिश्चित किया जाए। एम्स निदेशक ने कहा यदि हमने अभी ध्यान नहीं दिया तो हम वह बढ़त गवां सकते हैं जो हमने हासिल की है तथा स्थिति पूरी तरह से नियंत्रण के बाहर हो सकती है। उन्होंने लोगों से कोविड-19 रोधी टीका लगवाने का आग्रह किया।

कोरोना टीके पर यह बोले रणदीप गुलेरिया

गुलेरिया ने कहा कि टीका लोगों को संक्रमित होने से नहीं बचाएगा लेकिन ये शरीर में इसके बढ़ने की रफ्तार को रोकेगा और संक्रमण को गंभीर रूप नहीं लेने देगा जिससे मृत्यु दर कम होगी। उन्होंने कहा कि इसी के साथ मास्क लगाना और अन्य उपायों का पालन करना समान तौर पर महत्वपूर्ण है।

आखिर किन रास्तों से हरिद्वार आए 31 लाख श्रद्धालु?

हरिद्वार। पुलिस प्रशासन की ओर से जारी किए गए शाही स्नान में आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या 31.23 लाख बताई गई है। प्रशासन के आंकड़ों में कई झोल दिखाई दे रहे हैं। हरिद्वार में हर की पैड़ी छोड़ अधिकांश गंगा घाट सोमवार को पूरी तरह खाली थी। मात्र 349 लोगों ने ही सोमवार के लिए अपना रजिस्ट्रेशन कराया था। रजिस्ट्रेशन के अनुसार मात्र 1774 ही श्रद्धालु हरिद्वार आये थे। जबकि कोविड-19 के अनुसार बिना रजिस्ट्रेशन के हरिद्वार आने की अनुमति नहीं है। सोमवार को हरिद्वार की सीमाओं से 357 वाहनों को लौटाया गया था। जो कोविड-19 का टेस्ट नहीं कराना चाहते थे। हरिद्वार के होटल, धर्मशाला और रैन बसरों में 6 लाख लोगों के रुकने की क्षमता है। सीमाओं से 6045 वाहन सोमवार को सीमा में आये और 32095 यात्रियों ने प्रवेश किया। इससे एक रात पहले रविवार को 6538 वाहन हरिद्वार आये और इनमें 31152 यात्रियों ने सीमाओं से हरिद्वार में प्रवेश किया। सोमवार को 17 ट्रेनों से 8 हजार यात्री ही पहुंचे। बसों से भी 15000 यात्री आये। इन सबको देखा जाये तो भी 70 हजार यात्री ही नजर आ रहे है। जबकि प्रशासन की ओर से दावा किया गया है कि यह आंकड़ा

सीमाओं से घुसे सिर्फ 70 हजार

हरिद्वार और ऋषिकेश का है। इसमें संत और स्थानीय लोग भी शामिल है।

1.80 करोड़ श्रद्धालुओं की थी व्यवस्था

आईजी संजय गुंज्याल की मानें तो पुलिस ने 1.80 करोड़ यात्रियों के हिसाब से तैयारी की थी। और उसी तरह से ट्रैफिक प्लान भी लागू किया गया था। लेकिन मात्र 31.23 लाख ही यात्री पहुंचे। इसी कारण भीड़ कम नजर आई।

शहर की पार्किंग की थी बंद

आईजी गुंज्याल ने बताया कि शहर के अंदर की पार्किंग को बंद किया गया था। वाहनों को आने दिया जाता तो पूरा शहर ही भीड़ दिखाई देती। पार्किंग के आसपास के गंगा घाटों में यात्रियों को स्नान कराया गया। पार्किंग में देर शाम कई हजार वाहन और बसें खड़ी हुई है।

83 लोगों के चालान

सम्पूर्ण मेला क्षेत्र में मेले के दौरान कोविड सम्बंधित गाइड लाइन का पालन न करने वाले पुलिस ने 83 लोगों का चालान किए। संख्या कम होने पर आईजी मेला संजय गुंज्याल ने कहा कि लॉयन आर्डर को देखते हुए कम चालान किए गए है। गंगा घाटों में भीड़ अधिक होने के कारण चालान नहीं किये गए है। चालान करने पर भगदड़ मच सकती थी। इसी लिए चालान कम किए गए थे।

26 पॉजिटिव

सीमा पर चेकिंग के दौरान 26 यात्री पॉजिटिव निकला। जबकि कुल 9678 लोगों के टेस्ट किए गए थे।

डीजीपी और आईजी ने लिया जायजा

शाही स्नान प्रारंभ होने पर डीजीपी एवं आईजी कुंभ ने हर की पैड़ी और मेला नियंत्रण भवन के सीसीटीवी कंट्रोल रूम में जायजा लिया। नियमित तौर से जाकर अखाड़ों के जुलूस की स्थिति, हर की पैड़ी पर स्नान की व्यवस्था, अन्य घाटों पर स्नान की स्थिति, प्रमुख मार्गों, बाजारों और पार्किंग की स्तिथि को कैमरों के माध्यम से देख कर दिशा निर्देश दिए गए।

यूपी सरकार ने गेंहू खरीद में पारदर्शिता लाने के लिए ई-पॉप मशीनों का इस्तेमाल कर क्रांति लाने का काम किया

यूपी सरकार का दावा, एक लाख मी. टन गेहूं खरीद में बनाया रिकॉर्ड

लखनऊ।

उत्तर प्रदेश सरकार का दावा है कि बीते 12 दिनों में किसानों से एक लाख मी. टन गेहूं खरीदा गया है। गेहूं खरीद में तेजी लाते हुए उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने मंडियों में न केवल पहली बार अत्याधुनिक सुविधाओं को बढ़ाया, बल्कि किसानों के लिये मंडियों में पानी, बैठने के लिये छायादार व्यवस्था और कोविड प्रोटोकॉल का पालन करने के सख्त निर्देश भी दिये। कृषक उत्पादक संगठन (एफपीओ) को गेहूं खरीद में शामिल कर प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया। किसानों को उनके खेत के 10 किमी के दायरे में गेहूं खरीदकर उनकी दिक्कतों को भी कम करने का काम किया। यूपी सरकार ने गेंहू खरीद में पारदर्शिता लाने के लिए ई-पॉप मशीनों का इस्तेमाल कर क्रांति लाने का काम किया। इस व्यवस्था से गेहूं खरीद में धांधली और गड़बड़ी की आशंका पूरी तरह से समाप्त हो गई। किसानों को उनके अनाज के हर दाने का भुगतान उनके खातों में मिलना शुरू हो गया। राज्य सरकार की ओर से मिली जानकारी के अनुसार, एक अप्रैल से गेहूं खरीद शुरू की गई है। अभी 12 दिन ही बीते हैं कि एक लाख मीट्रिक टन गेहूं खरीद का रिकार्ड बन गया है। गौरतलब हैं कि किसानों को भुगतान के मामले में योगी सरकार ने पिछली सरकारों को बहुत पीछे छोड़ दिया है। धान खरीद के मामले में भी योगी सरकार नए कीर्तिमान स्थापित कर चुकी है।

राज्य सरकार ने 2553804 धान किसानों को 23328.80 करोड़ रुपये से अधिक का भुगतान किया है, जो कि प्रदेश में अब तक का रिकार्ड है। आंकड़ों के मुताबिक, योगी सरकार ने चार साल के कार्यकाल में 3345065 किसानों से कुल 162.71 लाख मी. टन गेहूं की खरीद की। प्रदेश में सबसे ज्यादा 24256 क्रय केंद्रों के जरिये खरीदे गए गेहूं के लिए राज्य सरकार ने किसानों को कुल 29017.71 करोड़ रुपये का रिकार्ड भुगतान किया है। यूपी की योगी सरकार पहले ही कृषक उत्पादक संगठन (एफपीओ) को गेहूं खरीद का खास तोहफा दिया है।

इससे गेहूं खरीद में प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा मिला है। देश के इतिहास में यह पहली बार है, जब किसी अनाज खरीद प्रक्रिया में कृषक उत्पादक संगठनों को भी शामिल किया गया है। प्रदेश के 150 से अधिक गेहूं केंद्रों पर एफपीओ खरीद प्रक्रिया का हिस्सा बन गए हैं। प्रदेश में एक अप्रैल से शुरू हुई गेहूं खरीद प्रक्रिया के तहत 8 अप्रैल तक 6,000 केंद्रों पर कुल 14,544 मी. टन गेहूं की खरीद की जा चुकी है। राज्य सरकार ने गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य 1,975 रुपये किया है। खरीद केंद्रों पर ऑक्सीमीटर, इफ्रारेड थर्मामीटर की व्यवस्था उपलब्ध कराने के निर्देश भी अफसरों को दिए गए हैं। खरीद केंद्रों पर पहुंचने वाले हर किसान का तापमान चेक किया जा रहा है।

पंचायत चुनाव में सोशल मीडिया बना बड़ा हथियार

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में हो रहे पंचायत चुनाव में सोशल मीडिया इन दिनों प्रचार का बड़ा हथियार बना हुआ है। गांव की सरकार बनाने के लिए हर प्रत्याशी ने इसको अपना माध्यम बनाया है। खासकर युवा वर्ग ज्यादा व्हाट्सएप ग्रुप और सोशल मीडिया के माध्यम से ग्राम प्रधान से लेकर जिला पंचायत सदस्य का प्रचार अपनी उपलब्धियां और विरोधी की खमियां उजागर करने में लगे हैं। चुनाव की घोषणा होते ही कोरोना ने भी अपने पांव जमकर पसार रखे हैं। ऐसे हालातों में सोशल मीडिया का भरपूर इस्तेमाल कर रहे हैं। वर्तमान समय में यह उनके लिए कारगर हथियार बना है। कई प्रत्याशियों ने एक नहीं कई ग्रुप बनाएं हैं। जो जातिगत आधार से लेकर अन्य गतिविधियों की रणनीति इस पर पोस्ट करते हैं, इसके अलावा इन ग्रुपों पर सुबह नमस्कार से लेकर अन्य चुनावी एजेंडों को धार दी जाती है। सोशल मीडिया पर प्रचार प्रसार करने के मामले में बुजुर्ग प्रत्याशी युवाओं से कम नहीं है। बुजुर्ग उम्मीदवार कम पढ़े लिखे होने के बावजूद भी सोशल मीडिया में अपनी धमक बनाए हुए है। वह अपने घर बच्चों से एंड्रायड फोन के जारिए सोशल मीडिया पर अपनी दावेदारी पेश कर रहे हैं। फेसबुक के माध्यम से सैकड़ों लोग जुड़ जाते हैं। यहां की लाइव वीडियो के ऑप्शन का धड़ल्ले से इस्तेमाल किया जा रहा है। समर्थक रैली, मीटिंग और डोर-टू-डोर के इस प्रचार को लाइव फेसबुक पर चला देते हैं। जिसकी मदद से उनका प्रचार कुछ एक लोगों तक न रहकर फैल रहा है। इसीक्रम जो ज्यादा हाईटेक उम्मींदवार ट्वीटर का भी भरपूर उपयोग करते देखे जा रहे हैं। कुशीनगर के पडरौना सीट से पंचायत सदस्य का चुनाव लड़ रही सरिता पांडेय भी सोशल मीडिया के प्लेटफार्म का उपयोग खूब कर रही है। उन्होंने बताया कि आज युग पूरा डिजिटल हो चुका है। कम शब्दों में त्वारित गति से अपनी बात लोगों तक पहुंचाने का सोशल मीडिया अच्छा माध्यम है। इसमें पोस्टर, बैनर, वाल पेंटिंग इत्यादि का खर्च भी होता है। इसी कारण इसका उपयोग किया जा रहा है। अयोध्या के मवई तृतीय से पंचायत सदस्य का चुनाव लड़ रहे भाई लाल यादव ने बताया कि आधुनिकता के दौर में सोशल मीडिया अपनी बात कहने बहुत आसान और सस्ता रास्ता है। बैनर पोस्टर और वाल पेंटिंग में अब वह बात नहीं है। क्योंकि हर व्यक्ति के हांथ में मोबाइल है। चार लाइन लिखकर फोटो भेजने से अपनी बात बहुत असानी से लोगों के बीच पहुंच जाती है। इस लिए इसका प्रयोग कर रहे हैं। जहां कठिनाई होती है घर के नौजवान उसमें मदद कर देते हैं। इस कारण सोशल मीडिया प्लेटफार्म का उपयोग किया जा रहा है। प्रयागराज के बहरिया ब्लाक बीरापुर ग्राम पंचायत से प्रधानी का चुनाव लड़ रही कंचन पाल कहती हैं सोशल मीडिया अपनी बात कहने के बहुत मजबूत माध्यम हैं।

भाजपा नेता का दावा, शुरू हो गई है प्रवासी कश्मीरी पंडितों की वापसी

श्रीनगर।

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की जम्मू-कश्मीर इकाई के महासचिव अशोक कौल ने मंगलवार को दावा किया कि पहली बार प्रवासी कश्मीरी पंडितों ने अब घाटी में वापसी शुरू कर दी है। कौल ने कहा कि वह मंगलवार को श्रीनगर शहर में कुछ मंदिरों में गए, जहां उन्होंने कश्मीरी पंडितों को नवरात्रि के पवित्र त्योहार पर हवन करते हुए देखा, जिसे स्थानीय पंडित नव्रे के रूप में मनाते हैं। उन्होंने कहा, उन कश्मीरी पंडितों के अलावा, जो यहां पहले से रह रहे हैं, मैंने इस समुदाय के प्रवासियों की एक बड़ी संख्या को आज शहर के कुछ मंदिरों में हवन करते हुए देखा है। भाजपा नेता ने कहा, मैंने उनसे बात की और यह स्पष्ट हुआ कि घाटी में उनकी वापसी की प्रक्रिया शुरू हो गई है। कौल ने श्रीनगर में शीतल नाथ मंदिर में संवाददाताओं से बात करते हुए यह टिप्पणी की, जहां नवरात्रि की शुरुआत होने पर विशेष प्रार्थना आयोजित की गई। घाटी में हिंदू मंदिरों के अतिक्रमण के बारे में बोलते हुए, उन्होंने कहा कि कुछ स्थानों पर सरकार द्वारा ऐसे अतिक्रमण किए गए हैं, जबकि अन्य स्थानों पर प्रभावशाली लोगों ने ऐसा किया है। उन्होंने कहा, इन सभी अतिक्रमणों को हटाने और इन मंदिरों की धार्मिक पवित्रता को बहाल करने के लिए एक सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है।

आयोग ने ममता बनर्जी के चुनाव प्रचार करने पर लगाया 24 घंटे का बैन

नई दिल्ली। भारत निर्वाचन आयोग ने भड़काऊ बयानबाजी और आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन करने पर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को 24 घंटे तक किसी भी तरह के प्रचार करने से रोक दिया है। भारत निर्वाचन आयोग ने सोमवार को यह सूचना जारी की है। दरअसल, ममता बनर्जी ने बीते दिनों एक चुनावी रैली में अल्पसंख्यकों से वोट न बंटने देने की अपील की थी। उन्होंने भाषण के दौरान शैतान, मीर जाफर जैसे शब्द भी बोले थे। जिस पर ममता बनर्जी के खिलाफ आदर्श आचार संहिता उल्लंघन की दर्ज हुई शिकायत पर आयोग ने सात अप्रैल को नोटिस जारी किया था। ममता बनर्जी की ओर से उपलब्ध कराए गए जवाब से चुनाव आयोग संतुष्ट नहीं हुआ। आयोग ने ममता बनर्जी पर लगे आरोपों की जांच की तो मामला सही पाया गया। जिस पर ममता बनर्जी को 12 अप्रैल की रात आठ बजे से 13 अप्रैल की रात आठ बजे तक किसी भी तरह के चुनाव प्रचार से आयोग ने प्रतिबंधित करने का फैसला किया है। चुनाव आयोग ने ममता बनर्जी से भविष्य में भड़काऊ और आदर्श आचार संहिता को चोट पहुंचाने वाले बयानों से बचने की नसीहत भी दी है।

सिद्धू की पंजाब कैबिनेट में वापसी के संकेत नहीं, राजनीतिक भविष्य अधर में

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता नवजोत सिंह सिद्धू की पंजाब कैबिनेट में वापसी अधर में लटक गई है, क्योंकि कांग्रेस के नेतृत्व और महासचिव प्रभारी हरीश रावत के प्रयासों के बावजूद मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह की ओर से ऐसा होने के कोई संकेत नहीं हैं। कैप्टन अमरिंदर सिंह और नवजोत सिंह सिद्धू दो बार मिले हैं, लेकिन इस संबंध में अभी तक दोनों तरफ से सफलता का कोई संकेत नहीं मिला है। सूत्रों का कहना है कि सिद्धू अपना पुराना पोर्टफोलियो वापस चाहते हैं, जो अमरिंदर को मंजूर नहीं है। सिद्धू पिछली बार 17 मार्च को सिंह से मिले थे। बैठक के एक दिन बाद, जब पंजाब के मुख्यमंत्री से सिद्धू की कैबिनेट में वापसी के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा, हर कोई चाहता है कि वह हमारी टीम का हिस्सा बने। उन्हें उम्मीद थी कि सिद्धू, जिन्हें वह बाद से जानते थे, एक बच्चा था और जिनके साथ बुधवार को भी उनकी बहुत ही सौहार्दपूर्ण बैठकें होती थीं, जल्द ही वह वापस ज्वाइन करने का फैसला लेंगे। सिद्धू ने सोमवार को हिंदी में ट्वीट करते हुए लिखा कि ख्वाहिशें मेरी अधूरी ही सही, पर कोशिशें मैं पूरी करता हूं। वैसे इस ट्वीट में सिद्धू ने किसी का नाम नहीं लिया, लेकिन इसे ताजा घटनाक्रमों के साथ जोड़कर देखा जा रहा है। बता दें कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) छोड़कर नवजोत सिंह सिद्धू कांग्रेस में आए थे तो उनका कद काफी बढ़ा हुआ माना जा रहा था, लेकिन अब वह धीरे-धीरे कांग्रेस की अंदरूनी गुटबाजी का शिकार हो रहे हैं। अब उनकी पंजाब कैबिनेट में शामिल होने की उम्मीदों पर पानी फिरता दिख रहा है। इस बीच उन्होंने इशारों ही इशारों में ट्वीट करके अपनी बात रखी है। हालांकि खबर यह है कि कांग्रेस का केंद्रीय नेतृत्व पूर्व क्रिकेटर सिद्धू को पार्टी के लिए स्टार प्रचारक बनाने का इच्छुक है। अहम पोर्टफोलियो छीन लिए जाने के बाद जुलाई 2019 में सिद्धू ने पंजाब कैबिनेट से इस्तीफा दे दिया था।

भाजपा ने केजरीवाल से कोरोना पर चर्चा के लिए सर्वदलीय बैठक बुलाने की मांग की

नई दिल्ली।

राष्ट्रीय राजधानी में कोरोना के मामलों में तेजी के बीच, दिल्ली भाजपा ने मंगलवार को अरविंद केजरीवाल सरकार से इस खतरनाक स्थिति पर चर्चा करने के लिए एक सर्वदलीय बैठक बुलाने का आग्रह किया। एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए, दिल्ली भाजपा प्रमुख आदेश गुप्ता ने आरोप लगाया कि केजरीवाल सरकार अपनी पीठ थपथपाने में इतनी व्यस्त है कि हाल के समय में अचानक हुए मामलों के बावजूद कोविड से संबंधित व्यवस्था में सुधार करने का समय नहीं है। गुप्ता ने कहा, कोविद प्रबंधन प्रणाली पूरी तरह से ध्वस्त हो गई है और अब शहर की सरकार स्थिति से निपटने के लिए निजी अस्पतालों पर निर्भर है। गुप्ता ने कहा कि दिल्ली पिछले दस दिनों से कोविड की चौथी लहर देख रहा है, लेकिन केजरीवाल सरकार ने एलएनजेपी सहित अपने किसी भी बड़े अस्पताल को वायरस संक्रमण के इलाज के लिए समर्पित सुविधा के रूप में घोषित नहीं किया है। गुप्ता ने कहा, कल, अचानक केजरीवाल सरकार ने 14 निजी अस्पतालों को कोविड रोगियों के इलाज के लिए समर्पित सुविधाओं के रूप में घोषित किया। यह स्पष्ट रूप से दिखाता है कि दिल्ली सरकार के अस्पताल मौजूदा स्थिति से निपटने में सक्षम नहीं हैं। इन अस्पतालों में उपचार बहुत महंगा और निम्न या मध्यम वर्ग के लोगों की पहुंच से परे है। गुप्ता ने मांग की कि मुख्यमंत्री द्वारा जल्द ही एक सर्वदलीय बैठक बुलाई जानी चाहिए और संकट से निपटने के लिए सरकार को एक स्पष्ट ब्लू प्रिंट लेकर आना चाहिए। उन्होंने आगे मांग की कि दिल्ली सरकार को चिकित्सा परामर्श और परीक्षण केंद्रों को बढ़ाने के अलावा जल्द से जल्द क्वारंटीन सुविधाओं के अलावा आयुष्मान भारत योजना को भी लागू करना चाहिए। दिल्ली भाजपा प्रमुख ने यह भी सुझाव दिया कि राज्य के सरकारी स्कूलों और कॉलेजों को अस्थायी आइसोलेशन क्वारंटीन सेंटर या अस्पताल के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। उन्होंने कहा, यह बेहद अफसोसजनक है कि अब जब मरीजों को अधिक वेंटिलेटर और ऑक्सीजन बेड की जरूरत थी, केजरीवाल सरकार और आप केंद्र सरकार द्वारा चलाए जा रहे टीकाकरण अभियान को कलंकित करने में व्यस्त थे।

चुनाव आयोग ने बंगाल भाजपा अध्यक्ष दिलीप घोष को नोटिस जारी किया

नई दिल्ली। चुनाव आयोग (ईसी) ने मंगलवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के पश्चिम बंगाल के अध्यक्ष दिलीप घोष को एक विवादित सार्वजनिक बयान देने के लिए कारण बताओ नोटिस जारी किया है। चुनाव आयोग ने बयान को भड़काऊ और लोगों को उकसाने वाला माना है, जो कि चुनावी राज्य पश्चिम बंगाल की कानून-व्यवस्था को प्रभावित कर सकता है। इसलिए भाजपा नेता को इस पर जवाब दाखिल करने को कहा गया है। चुनाव आयोग ने घोष को बुधवार की सुबह 10 बजे तक उत्तर 24 परगना (पश्चिम बंगाल) के बारंगर में एक सार्वजनिक रैली को संबोधित करते हुए की गई टिप्पणी पर अपना जवाब देने को कहा है। पश्चिम बंगाल भाजपा के अध्यक्ष दिलीप घोष के रविवार को दिए बयान से नया विवाद खड़ा हो गया है। एक चुनावी रैली में उन्होंने कहा था, अगर सीतलकूची में मारे गए शरारती लड़कों की तरह किसी ने कानून हाथ में लेने का प्रयास किया तो चुनावों के अगले चरण में भी कूचबिहार की तरह हत्याएं हो सकती हैं। इस पर तृणमूल कांग्रेस ने सख्त आपत्ति जताते हुए उन्हें गिरफ्तार करने की मांग की। वहीं माकपा ने कहा कि यह बयान भगवा दल के फासीवादी चेहरे को उजागर करता है। हालांकि अब चुनाव आयोग ने इस विवादित बयान पर संज्ञान लिया है और भाजपा नेता को नोटिस थमाया गया है। बता दें, सीतलकूची विधानसभा क्षेत्र में शनिवार को चौथे चरण के मतदान के दौरान सीआईएसएफ के जवानों से कुछ लोगों द्वारा राइफलें छीनने का प्रयास करने के बाद केंद्रीय बल ने गोलीबारी की, जिसमें चार लोगों की मौत हो गई। तृणमूल कांग्रेस के नेता डेरेक ओ ब्रायन द्वारा चुनाव आयोग को शिकायत करने के बाद यह नोटिस जारी किया गया है। डेरेक ने अपनी शिकायत में कहा कि घोष ने एक भड़काऊ बयान दिया है, जो बंगाल और उसके लोगों के लिए एक खुला खतरा है। वहीं भाजपा नेता राहुल सिन्हा पर भी चुनाव आयोग ने कार्रवाई की है। सिन्हा ने सोमवार को कथित तौर पर विवादित बयान में कहा था कि कूच बिहार के सीतलकुची में चार नहीं, बल्कि आठ लोगों को केंद्रीय बलों द्वारा गोली मार दी जानी चाहिए थी। चुनाव आयोग ने भाजपा नेता राहुल सिन्हा पर अगले 48 घंटों तक किसी भी तरीके से चुनाव प्रचार करने से रोक लगा दी है। उन पर ये रोक चौथे चरण के मतदान के दौरान कूच बिहार के सीतलकूची में हुई हिंसा पर विवादित बयान देने के बाद लगाई गई है।

ग्रामीण क्षेत्रों में पंचायत चुनाव

यूपी में हो रहा कमाल, आपसी रजामंदी से चुने जा रहे ग्राम प्रधान

लखनऊ।

यूपी में हर गांव में आज कल माहौल बदला हुआ है। एक तरफ जहां हर गांव में मुख्यमंत्री के निर्देश पर कोरोना के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए विशेष स्वच्छता (सफाई-सेनिटाइजेशन) अभियान चलाया जा रहा है। वहीं दूसरी तरफ कोरोना संक्रमण से बचाव के निर्देशों का पालन करते हुए प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में पंचायत चुनावों को लेकर जोरशोर से चुनाव प्रचार भी किया जा रहा है।

गांवों के ऐसे माहौल में पंचायत चुनावों के पहले चरण में सूबे के 18 जिलों में 15 अप्रैल को मतदान होना है। इस मतदान को शांतिपूर्ण संपन्न कराने के लिए प्रदेश पुलिस ने पुख्ता सुरक्षा इंतजाम किए हुए हैं। सरकार और पुलिस के सुरक्षा प्रबंधो के चलते सूबे में पंचायत चुनावों का परिदृश्य भी बदला है। जिसके चलते अब बड़ी संख्या में ग्राम प्रधान, जिला पंचायत सदस्य, क्षेत्र पंचायत सदस्य, और ग्राम पंचायत सदस्यों का ग्रामीण निर्विरोध निर्वाचन कर रहे हैं। ग्रामीण लोकतंत्र और आपसी भाई-चारे को मजबूत करने की यह नई पहल है। सूबे के राज्य निर्वाचन आयुक्त मनोज कुमार ने बताया कि इस बार का पंचायत चुनाव कई मायने में अनोखा है। पहली बार राज्य में कोरोना प्रोटोकाल का पालन करते हुए चुनाव कराया जा रहा। चुनाव कराने वाले और चुनाव लड़ने वाले तथा वोट देने वाले सभी को कोरोना से बचाने के प्रबंध करते हुए यह चुनाव कराए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री का इस बारे में साफ निर्देश है कि सभी की कोरोना से सुरक्षा करते हुए पंचायत चुनाव संपन्न कराने हैं। इसके अलावा समूची चुनाव प्रक्रिया को शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराना है। चुनावों के दौरान कहीं कोई गड़बड़ी ना हो इसके लिए शस्त्र जमा करने की कार्रवाई हो रही है, अवैध शराब बनाने वालों की धरपकड़ का अभियान चलाया जा रहा है।

शरारती तत्वों को पाबंद किया जा रहा। इसके साथ ही गांवों में सफाई अभियान चलाया जा रहा है और सभी को कोरोना प्रोटोकाल का पालन करते हुए चुनाव प्रचार करने दिया जा रहा है। पंचायत चुनावों को लेकर गांवों में ऐसी सक्रियता के चलते गांवों का परिदृश्य बदल सा गया है। अब गांवों में बुजुर्गों के साथ -साथ युवाओं को भी तबज्जों दी जाने लगी है। इस कारण अब बुजुर्ग ही नहीं युवाओं को भी आम सहमती से चुना जाने लगा है। पंचायत चुनावों को लेकर पहले चरण की चुनावी सरगर्मी इसका सबूत है। राज्य निर्वाचन आयुक्त मनोज कुमार के अनुसार प्रदेश में पंचायत चुनावों के पहले चरण में 18 जिलों में होने वाले निर्वाचन में 779 जिला पंचायत वार्ड के लिए कुल 12157 नामांकन प्राप्त हुए थे।

जिसमें 233 नामांकन रद्द होने तथा 175 नामांकन वापस लेने के फलस्वरूप 11749 उम्मीदवार मैदान में हैं। इसी प्रकार अब 19313 क्षेत्र पंचायत सदस्य के पद के लिए 71418 उम्मीदवार, 14789 ग्राम पंचायत प्रधान पद के लिए 108562 उम्मीदवार तथा 186583 ग्राम पंचायत वार्ड के लिए 107283 उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं।

15 अप्रैल को होने वाले मतदान में इन उम्मीदवारों की जीत-हार के पक्ष में वोट पड़ेंगे।

संक्षिप्त समाचार

सुशील चंद्रा ने संभाला मुख्य चुनाव आयुक्त का पदभार

नई दिल्ली। चुनाव आयुक्त सुशील चंद्रा ने मंगलवार को भारत के 24वें मुख्य चुनाव आयुक्त के रूप में अपना कार्यभार संभाल लिया है। उन्होंने सुनील अरोड़ा की जगह ली है, जो एक दिन पहले ही रिटायर हुए हैं। सुशील चंद्रा को 14 फरवरी, 2019 को चुनाव आयुक्त के रूप में नियुक्त किया गया था। अरोड़ा और पूर्व चुनाव आयुक्त अशोक लवासा के साथ सुशील चंद्रा ने उस साल लोकसभा चुनाव को सफलतापूर्वक आयोजित करवाया था। सुशील चंद्रा का कार्यकाल 14 मई, 2022 को समाप्त होगा। हालांकि इससे पहले ही पंजाब, उत्तर प्रदेश, गोवा, उत्तराखंड और मणिपुर राज्यों में विधानसभा चुनाव के होने की संभावना है। राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद ने सोमवार को आयोजित सम्मेलन में वरिष्ठतम चुनाव आयुक्त को शीर्ष पद के लिए नियुक्त किया। अरोड़ा के रिटायर होने के बाद अब चुनाव आयोग में दो ही सदस्य हैं। चंद्रा पश्चिम बंगाल में चल रहे विधानसभा चुनावों की देखरेख करेंगे, जहां आठ में से चार चरणों की वोटिंग पूरी हो चुकी है।

लॉकडाउन की स्थिति में सरकार व्यापारियों को मुआवजा दे : कैट

नई दिल्ली। देश भर में एक बार फिर से कोरोना के मामले बढ़ने लगने लगे हैं, जिसके बाद से राज्यों में नाइट कर्फ्यू और लॉकडाउन लगाने की स्थिति बन चुकी है। ऐसे में कन्फेडरेशनऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) ने आज केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन एवं सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियोंको एक पत्र भेज मांग की है कि इस महामारी से बचाव में यदि कोई राज्य लॉकडाउन की घोषणा करता है, जिससे दुकानें बंद हो, तो सरकार को उन सभी व्यापारियों को उचित मुआवजा देना चाहिए। कैट के राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीन खंडेलवाल ने कहा, सरकार के आदेश पर किए गए लॉकडाउन के कारण बंद हुई दुकानों को सरकार से मुआवजा लेने का हक बनता है। कैट ने मुआवजे देने के फॉर्मूले को बताते हुए कहा, जिस दुकान की जो वार्षिक टर्न ओवर है उसके अनुपात में सरकार को ऐसे व्यापारियों को मुआवजा देना चाहिए। कैट के अनुसार, देश में प्रतिवर्ष लगभग 80 लाख करोड़ रुपये का कारोबार होता है, जो प्रति माह लगभग 6 .5 लाख करोड़ का होता है। अकेले महाराष्ट्र का मासिक कारोबार लगभग 1 लाख करोड़ रुपये तथा दिल्ली का मासिक कारोबार लगभग 20 हजार करोड़ रुपये का होता है। खंडेलवाल ने आगे कहा, पिछले वर्ष के लॉकडाउन में व्यापारियों ने न केवल अपनी दुकानें ही बंद कीं, बल्कि प्रधानमंत्री मोदी के आह्वान पर करोना के भीषण समय में भी अपनी जान की परवाह न करते हुए पूरे देश में आवश्यक वस्तुओं की सप्लाई को निर्बाध रूप से जारी रखा, जिसके कारण देशभर के व्यापारियों को अपने व्यापार में बड़ा नुकसान उठाना पड़ा है, जिसकी भरपाई आज तक नहीं हुई है। कैट ने कहा, जहां केंद्र सरकार ने गत वर्ष विभिन्न वर्गों के लिए अनेक पैकेज दिए, वहीं देश के व्यापारियों को किसी भी पैकेज में एक रुपये की भी सहायता नहीं दी गई एवं न ही किसी राज्य सरकार ने व्यापारियों की ओर मदद का हाथ बढ़ाया, जिसके फलस्वरूप व्यापारी वर्ग आज तक वित्तीय तरलता के बड़े संकट का सामना कर रहा है।

बंगाल में हिंसा, घोटाले, पशु तस्करी पर सवाल उठाती है किताब कराहता बंगाल

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के बीच एक किताब प्रकाशित हुई है, जिसमें राज्य में हिंसक घटनाओं, पशु तस्करी, शारधा चिटफंड आदि घोटालों पर गंभीर सवाल खड़े किए गए हैं। कराहता बंगाल नामक किताब में कहा गया है कि बंगाल के औद्योगिक वैभव को किसी की नजर लग गई, जिसकी वजह से आज राज्य निवेश के मोर्चे पर फिसड्डी साबित हो रहा है। लेखक संजय राय शेरपुरिया के मुताबिक, भारतीय संविधान ने देश के हर नागरिक को अभिव्यक्ति की आजादी है। लेकिन, बंगाल में जिस तरह से हिंसा की राजनीति को हवा मिली है है, चिटफंड घोटाले की जांच के लिए बंगाल गई सीबीआई टीम को गिरफ्तार कर देश के संघीय ढांचे को चुनौती दी गई, वह बेहद चिंता का विषय है। ऐसी कई घटनाओं को देखकर मुजे लगा कि लोकतांत्रिक मूल्यों और राष्ट्रीय एकता व अखंडता को पुष्ट करने के लिए पुस्तक का लिखा जाना जरूरी है। संजय राय शेरपुरिया के मुताबिक, बंगाल आज घुसपैठियों और रोहिंग्या का पनाहगार बना हुआ है। राज्य में राष्ट्रद्रोही गतिविधियां चल रही हैं। राष्ट्रद्रोही तत्व आज पूरे देश की आंतरिक सुरक्षा को भस्मासुर की तरह चुनौती देते नजर आ रहे हैं। किताब में बंगाल में पशु तस्करी, बंगाल के औद्योगिक वैभव को किसकी लगी नजर, शारधा चिटफंड घोटाला, श्रीराम और मां दुर्गा जैसे विषयों पर चर्चा की गई है।

सीबीआई ने महाराष्ट्र के पूर्व गृहमंत्री देशमुख को पूछताछ के लिए बुलाया

मुंबई। भ्रष्टाचार और कार्यालय के दुरुपयोग के आरोपों की अपनी जांच को आगे बढ़ाते हुए, केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने महाराष्ट्र के पूर्व गृह मंत्री अनिल देशमुख को 14 अप्रैल को पूछताछ के लिए बुलाया है। जांच से जुड़े एक सीबीआई अधिकारी ने आईएएनएस को बताया, हमने देशमुख से 14 अप्रैल को कार्यालय में उनका बयान दर्ज करने के लिए कहा है। यह पहली बार है कि बॉम्बे हाई कोर्ट के आदेशों पर भ्रष्टाचार और कार्यालय के दुरुपयोग के आरोपों में 6 अप्रैल को प्रारंभिक जांच (पीई) दर्ज करने के बाद सीबीआई ने देशमुख को पूछताछ के लिए बुलाया है। सीबीआई ने यह कार्रवाई उनके दो पीए, पलांडे और कुंदन के बयान दर्ज करने के एक दिन बाद की है। इससे पहले, दिन में, सीबीआई ने अपनी जांच के सिलसिले में दूसरी बार एसीपी संजय पाटिल का बयान भी दर्ज किया। बॉम्बे एचसी ने सीबीआई को मुंबई के पूर्व पुलिस प्रमुख परम बीर सिंह के आरोपों पर देशमुख के खिलाफ जांच करने का आदेश दिया था। देशमुख द्वारा कार्यालय के भ्रष्टाचार और दुरुपयोग के आरोपों की जांच के लिए पुलिस अधीक्षक स्तर के अधिकारियों के नेतृत्व वाली सीबीआई की दो टीमें पहले से ही मुंबई में हैं। सीबीआई ने याचिकाकर्ता जयश्री पाटिल और डीसीपी राजू भुजबल का बयान भी दर्ज किया है।

सार समाचार

अमेरिका में फिर अश्वेत युवक को पुलिस ने मारी गोली, लोगों ने किया प्रदर्शन

ब्रुकलिन सेंटर (अमेरिका)। अमेरिका के मिनियापोलिस उपनगर में ट्रैफिक सिग्नल पर अश्वेत व्यक्ति को गोली मारने वाली पुलिस अधिकारी ने हैंडगन नहीं बल्कि टेजर चलाया था और व्यक्ति की पुलिस अधिकारी के साथ झड़प हुई थी। शहर के पुलिस प्रमुख ने सोमवार को इस बारे में बताया। टेजर एक गैर-घातक इलेक्ट्रोशॉक हथियार है जो किसी को निष्क्रिय करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। ब्रुकलिन सेंट पुलिस प्रमुख टिम गैनन ने रविवार को 20 वर्षीय डौंटे राइट की गोली लगने से मौत को ''दुर्घटनावश गोली चलने से मौत'' बताया है। पुलिस राइट को पकड़ने का प्रयास कर रही थी तभी यह घटना हुई। अधिकारी को यह कहते सुना गया, ''मैं तुम पर टेजर चलाऊंगी टेजर...। टेजर...।'' घटना का यह वीडियो अधिकारी के बॉडी कैमरा में कैद हुआ है जिसे संवाददाता सम्मेलन में जारी किया गया। व्यक्ति के पुलिस की गिरफ्त से निकलकर अपनी कार में बैठने के बाद अधिकारी ने अपना हथियार वापस रख लिया था। अधिकारी ने अपने हैंडगन से गोली चलायी जिसके बाद कार ने गति पकड़ ली।

डब्ल्यूएचओ ने की मांग- कोरोना वायरस को काबू करने के लिए जिंदा जंगली जानवरों की बिक्री पर लगे रोक

जिनेवा। दुनियाभर में जारी कोरोना वायरस के कोहराम के बीच विश्व स्वास्थ्य संगठन ने मंगलवार को मांग की है कि इस महामारी को और फैलने से रोकने के लिए जिंदा जंगली स्तनधारी जानवरों की बाजारों में बिक्री पर रोक लगे। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपने बयान में कहा है, 'इंसानों में फैल रहे 70 प्रतिशत संक्रामक रोग जानवर, खासतौर पर स्तनधारी जंगली जानवरों के कारण हैं। जंगली, जानवरों से नई बीमारियों के पैदा होने का जोखिम होता है।' बता दें कि इसी साल जनवरी में डब्ल्यूएचओ के विशेषज्ञों की एक टीम चीन गई थी। इस टीम ने भी अपनी रिपोर्ट में यह दावा किया था कि संभवत- कोरोना वायरस जानवरों के जरिए इंसानों में आया। रिपोर्ट में कहा गया था कि इस बात की सबसे अधिक आशंका है कि चमगादड़ से कोरोना वायरस किसी अन्य जानवर में गया और वहां से इंसानों में फैल गया। शोधकर्ताओं ने SARS-CoV-2 वायरस की उत्पति के लिए चार प्रमुख कारण बताए। इनमें एक जानवर के माध्यम से दूसरे जानवर में संक्रमण फैलने की संभावना को प्रमुख कारण माना गया है। चमगादड़ से सीधे इंसान में संक्रमण फैलने की संभावना न के बराबर बताई गई है।

फ्रांस के राजदूत को बाहर करने की मांग पर सड़कों पर उतरे हजारों पाकिस्तानी

इस्लामबाद। अपने नेता की गिरफ्तारी के बाद सोमवार को इस्लामवादी निन्दा विरोधी पार्टी के हजारों कार्यकर्ताओं ने फ्रांसीसी राजदूत को पाकिस्तान से बाहर निकालने की मांग को लेकर प्रदर्शन किया। इस दौरान पुलिस ने उनपर आंसू गैस के गोले और पानी की बौछार की। पाकिस्तान में कई महीनों से फ्रांस के विरोध में भावनाएं उबल रही हैं। यह फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रोन की सरकार द्वारा पैगंबर मोहम्मद के चित्र वाले कार्टून को फिर से प्रकाशित करने के अधिकार के लिए समर्थन दिए जाने के बाद हुआ है। इस कार्टून की कई मुस्लिमों द्वारा निंदा की गई है। पार्टी के अधिकारियों ने कहा कि तहरीक-ए-लब्बैक पाकिस्तान (टीएलपी) के नेता साद रिजवी को सोमवार को लाहौर में हिरासत में लिया गया। उनकी गिरफ्तारी की पुष्टि पुलिस ने की, लेकिन यह नहीं बताया कि किस आरोप में उन्हें गिरफ्तार किया गया। इस बीच फ्रांसीसी राजदूत को निष्कासित करने की मांग के लिए 20 अप्रैल को राजधानी इस्लामाबाद में एक मार्च आयोजित करने की कोशिश कर रहा था। रिजवी फायरब्रांड मौलवी के बेटे हैं, और टीएलपी के पिछले प्रमुख, खादिम हुसैन रिज़वी हैं, जिनकी नवंबर में मृत्यु हो गई थी।

ब्रिटिश पीएम बोरिस जॉनसन ने चेताया, पाबंदियों में ढील से फिर बढ़ सकती है कोरोना महामारी

लंदन। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन ने मंगलवार को चेताया कि देश में कोरोना से होने वाली मौतों में आ रही तेज गिरावट का कारण टीकाकरण नहीं बल्कि तीन महीने से जारी लॉकडाउन है। पाबंदियों में ढील देने से महामारी फिर बढ़ सकती है। कोरोना महामारी की दूसरी लहर की चपेट में आए इस यूरोपीय देश में गत जनवरी की शुरुआत में लॉकडाउन लगा दिया गया था। गत फरवरी से नए मामलों और कोरोना से होने वाली मौतों में गिरावट दर्ज की जा रही है। जबकि गत दिसंबर से कोरोना के खिलाफ टीकाकरण अभियान चल रहा है। 50 साल से ज्यादा उम्र के सभी लोगों को टीका लगाया जा चुका है। अब इस अभियान में 45 वर्ष से अधिक उम्र वालों को शामिल किया गया है। प्रधानमंत्री जॉनसन ने कहा, 'महामारी को कम करने में लॉकडाउन ने बड़ा काम किया। अनलॉक का नतीजा नए मामलों और मौतों में बढ़ोतरी के रूप में सामने आएगा।' हालात सुधरने पर इंग्लैंड में शर्तों के साथ सभी खुदरा कारोबारों, जिम, हेयरड्रेसर और पब को खोलने की अनुमति दी गई है।

अमेरिकी थिंक टैंक ने कहा, कोई भी देश भारत से ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं!

वाशिंगटन। (एजेंसी)।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (आईटी) नीति संबंधी मुख्य अमेरिकी थिंक टैंक का कहना है कि अमेरिका उभरते चीन को रोकना चाहता है और ऐसे में उसके लिए भारत के महत्वपूर्ण कोई अन्य देश नहीं है, जिसके पास अत्यंत दक्ष तकनीकी पेशेवर हैं और जिसके अमेरिका के साथ मजबूत राजनीतिक एवं सांस्कृतिक संबंध हैं। थिंक टैंक 'इन्फर्मेशन टेक्नोलॉजी एंड इनोवेशन फाउंडेशन' (आईटीआईएफ) ने सोमवार को जारी रिपोर्ट में यह कहा। उसने अमेरिका को भारत पर ''अत्यधिक निर्भर'' होने को लेकर सचेत करते हुए यह भी कहा कि यदि दोनों देशों के बीच बौद्धिक सम्पदा, डेटा संचालन, शुल्क, कर, स्थानीय विषय वस्तु की आवश्यकताएं या व्यक्तिगत निजता जैसे मामलों पर बड़े मतभेद पैदा होते हैं, तो आईसी सेवा प्रदाता भारत रणनीतिक समस्या बन सकता है।

रिपोर्ट में सबसे खराब और सबसे अच्छे परिदृश्यों पर गौर किया गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि एक परिदृश्य यह है कि भारत और चीन के बीच तनाव कम हो और दोनों पड़ोसी देशों के बीच कारोबारी संबंध मजबूत हों। ऐसी स्थिति में वैश्विक अर्थव्यवस्था पूर्व दिशा की ओर स्थानांतरित हो जाएगी और अमेरिका इस बारे में कुछ खास नहीं कर पाएगा। रिपोर्ट के अनुसार, दूसरा परिदृश्य यह है कि चीन के कारण आर्थिक, सैन्य और अंतरराष्ट्रीय संबंध से जुड़ी चुनौतियां बढ़ने के बीच भारत और अमेरिका के हित समान हों। ऐसी स्थिति में अधिकतर विकसित देशों में लोकतांत्रिक नियम कायम रहेंगे, क्योंकि विकासशील देश 'बीजिंग मॉडल' के बजाए 'दिल्ली मॉडल' को देखेंगे। थिंक टैंक ने कहा, ''अमेरिका उभरते चीन को रोकना चाहता है और ऐसे में, भारत से महत्वपूर्ण कोई अन्य देश नहीं है, जिसका आकार बहुत बड़ा है, जिसके पास अत्यधिक कुशल तकनीकी पेशेवर हैं और जिसके अमेरिका के साथ मजबूत राजनीतिक एवं सांस्कृतिक संबंध हैं।'' आईटीआईएफ के सदस्य एवं रिपोर्ट के सह लेखक डेविड मोशेला ने कहा कि जो ताकतें अमेरिका और चीन के बीच मतभेद बढ़ा रही हैं, वही ताकतें अमेरिका और भारत को निकट ला रही हैं। उन्होंने कहा, ''अमेरिका, भारत और चीन के संबंध आगामी कुई वर्षों तक वैश्विक प्रतिद्वंद्वता और डिजिटल नवोन्मेष को आकार देंगे। व्यापक संभावित परिदृश्य होने के बीच दो बातें स्पष्ट हैं- चीन से मुकाबला करने और उस पर निर्भरता को कम करने के लिए भारत को अमेरिकी प्रयासों का अहम हिस्सा होना चाहिए और इससे अमेरिका की वैश्विक निर्भरताएं विनिर्माण से लेकर सेवा क्षेत्र तक अवश्य बढ़ जाएंगी।'' रिपोर्ट में बताया गया है कि भारत अनुसंधान एवं विकास, नवोन्मेष केंद्रों, मशीनों संबंधी जानकारी, विश्लेषण, उत्पाद के डिजाइन एवं जांच और आईटी एवं जीव विज्ञान समेत विभिन्न क्षेत्रों में अहम प्रगति कर रहा है।

अमेरिका ने तहव्वुर राणा के प्रत्यर्पण संबंधी भारत के अनुरोध को लेकर अपना समर्थन दोहराया

वाशिंगटन (एजेंसी)।

अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन के नेतृत्व वाले अमेरिकी प्रशासन ने देश की एक अदालत के समक्ष ताज़ा अभिवेदन में पाकिस्तानी मूल के कनाडाई कारोबारी तहव्वुर राणा को मुंबई में 2008 में हुए आतंकवादी हमलों के मामले में प्रत्यर्पित किए जाने के भारत के अनुरोध को लेकर अपना समर्थन दोहराया है। अमेरिकी सरकार के सहायक अटॉर्नी जॉन जे लुलेजियान ने इस मामले में लॉस एंजिलिस में अमेरिका डिस्ट्रिक्ट कोर्ट की जज जैकलीन चुलजियान को सोमवार को पत्र के माध्यम से जानकारी दी। जज ने मामले की सुनवाई के लिए 24 जून की तारीख तय की है।

लुलेजियान ने पत्र और उसके साथ सौंपे दस्तावेज में ''प्रत्यर्पण के प्रमाणन संबंधी अनुरोध के पक्ष में अमेरिका के जवाब'' के समर्थन में घोषणा की। लुलेजियान ने दोहराया कि 59 वर्षीय राणा का भारत में प्रत्यर्पण भारत और अमेरिका के बीच हुई प्रत्यर्पण संधि के अनुरूप है। भारत-अमेरिका प्रत्यर्पण संधि के मुताबिक, भारत सरकार ने राणा के औपचारिक प्रत्यर्पण का अनुरोध किया है और अमेरिका ने प्रत्यर्पण की प्रक्रिया शुरू कर दी है। अमेरिका सरकार ने दलील दी है कि भारत प्रत्यर्पण के लिए राणा सभी मापदंडों को पूरा करता है। लुलेजियान ने कहा कि अमेरिका राणा को भारत

प्रत्यर्पित करने के लिए प्रमाणन का अनुरोध करता है। उन्होंने कहा, ''प्रत्यर्पण अनुरोध में संभावित कारण स्थापित करने के लिए पर्याप्त सबूत हैं और राणा ने भारत के अनुरोध को काटने के लिए कोई सबूत नहीं दिया है।''

राणा लश्कर-ए-तैयबा के आतंकवादी डेविड कोलमैन हेडली का बचपन का दोस्त है। भारत के अनुरोध पर राणा को मुंबई आतंकवादी हमले में संलिप्तता के आरोप में लॉस एंजिलिस में 10 जून को फिर से गिरफ्तार किया गया था। इस हमले में छह अमेरिकी नागरिकों समेत 166 लोग मारे गये थे। भारत ने उसे भगोड़ा घोषित किया है। पाकिस्तानी मूल का अमेरिकी नागरिक हेडली 2008 के मुंबई हमलों की साजिश रचने में शामिल था। वह मामले में गवाह बन गया था और वर्तमान में हमले में अपनी भूमिका के लिए अमेरिका में 35 साल जेल की सजा काट रहा है।

पाकिस्तान में पुलिस और इस्लामवादियों के बीच हुई भयानक मारपीट, घायल पुलिस का वीडियो वायरल

लाहौर।(एजेंसी)।

पाकिस्तान के लाहौर शहर में एक इस्लामवादी पार्टी के प्रमुख की गिरफ्तारी के बाद हुई हिंसक झड़पों में मंगलवार को दो प्रदर्शनकारियों और एक पुलिसकर्मी की मौत हो गई। यह जानकारी एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी और स्थानीय मीडिया ने दी। वरिष्ठ पुलिस अधिकारी गुलाम मोहम्मद डोगर ने बताया कि तहरीक-ए-लब्बैक पाकिस्तान के प्रमुख साद रिज़वी को सोमवार को गिरफ्तार किया गया था, जिसके बाद उनके समर्थकों के साथ रात में हुई झड़पों में एक पुलिसकर्मी की मौत हो गई। उन्होंने बताया कि लाहौर के पास शाहदरा कस्बे में झड़पों में 10 पुलिसकर्मी घायल भी हुए हैं। पंजाब प्रांत में दो इस्लामवादियों के मारे जाने की सूचना है।

रिज़वी ने धमकी दी थी कि अगर सरकार पैगंबर मोहम्मद का चित्र प्रकाशित किये जाने को लेकर फ्रांस के राजदूत को निष्कासित नहीं करती है तो प्रदर्शन शुरू किए जाएंगे। इसके बाद पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और सोमवार को हिंसा शुरू हो गई। डोगर के मुताबिक, रिज़वी की गिरफ्तारी कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने के लिए की गई थी, लेकिन रिज़वी को हिरासत में लेने के बाद उनके इस्लामवादी समर्थकों ने देश के कई शहरों में हिंसक प्रदर्शन किए। प्रदर्शनकारियों ने कई शहरों में राजमार्गों और सड़कों को अवरूद्ध कर दिया। झड़पों से दो दिन पहले रिज़वी ने एक बयान में प्रधानमंत्री इमरान खान नीत सरकार से कहा था कि वह पैगंबर मोहम्मद का चित्र प्रकाशित जाने को लेकर 20 अप्रैल से पहले फ्रांस के राजदूत को निष्कासित करने के लिए उनकी पार्टी से फरवरी में किए गए वादे का सम्मान करे।

हालांकि,सरकार का कहना है कि वह सिर्फ संसद में इस विषय पर चर्चा करने के लिए प्रतिबद्ध है। गिरफ्तारी के खिलाफ रिज़वी के समर्थकों की प्रतिक्रिया इतनी त्वारित थी कि पुलिस लाहौर में मुख्य राजमार्ग और सड़कों को खुलवा नहीं सकी है। हजारों लोग अपनी गाड़ियों के साथ फंसे हुए हैं। झड़पों की शुरूआत सोमवार को सबसे पहले लाहौर मेंहुई। इसके बाद रिज़वी के समर्थकों की झड़प सिंध प्रांत के कराची शहर में पुलिस से हुई। उन्होंने इस्लामाबाद के बाहरी इलाके में भी प्रदर्शन किए हैं, जिससे लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ा है।

अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन और प्रथम महिला ने दी रमजान की बधाई

वाशिंगटन। (एजेंसी)।

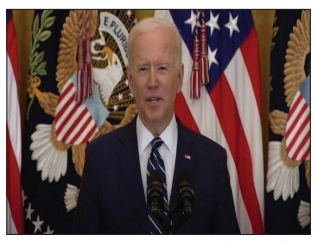

अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन ने रमजान के मौके पर देश और दुनिया भर के मुस्लिमों को बधाई दी और विविधतापूर्ण एवं जीवंत अमेरिका बनाने में अल्पसंख्यक समुदाय के योगदान की प्रशंसा की। रमजान के पवित्र माह के दौरान, मुस्लिम सूर्योदय से सूर्यास्त तक रोजा रखते हैं, धर्मार्थ के काम करते हैं, नमाज अदा करते हैं और कुरान पढ़ते हैं। बाइडन और प्रथम महिला जिल बाइडन ने सोमवार को एक बयान में कहा, ÷कल से हमारे कई देशवासी रोजा रखने वाले हैं, ऐसे में हमें याद आ रहा है कि यह साल कितना मुश्किल रहा है। इस वैश्विक महामारी में, मित्र एवं प्रियजन जश्न एवं सभाओं में साथ नहीं आ पाए और कई परिवार इफ्तार के लिए अपने प्रियजनों की गैरमौजूदगी में बैठेंगे।÷ उन्होंने कहा, ÷इसके बावजूद, हमारा मुस्लिम समुदाय नयी उम्मीदों के साथ इस पाक महीने की शुरुआत करेगा। कई लोग अपनी जिंदगियों में ईश्वर की मौजूदगी का एहसास करेंगे, दूसरों की सेवा की बात सिखाने वाले लोग अपने धर्म के प्रति प्रतिबद्धता को मजबूत करेंगे और स्वास्थ्य, आरोग्य एवं जीवन के रूप में मिले ईश्वर के आशीर्वाद के प्रति आभार व्यक्त करेंगे।÷ यह रेखांकित करते हुए कि, मुस्लिम अमेरिकियों ने अमेरिका की स्थापना के बाद से देश को समृद्ध किया है,बाइडन ने कहा कि वे उतने ही विविधतापूर्ण एवं जीवंत हैं जितना उनकी मदद से बना अमेरिका है। राष्ट्रपति ने कहा, ÷आज, मुस्लिम कोविड-19 से लड़ने के हमारे प्रयासों के अगुवा हैं जो टीका विकसित करने में अग्रणी भूमिका में हैं और अग्रिम मोर्चे के स्वास्थ्य कर्मी के तौर पर सेवा भी दे रहे हैं। वे उद्यमियों और कारोबारों के मालिकों के रूप में रोजगार दे रहे हैं, प्रथम प्रतिक्रियाकर्ताओं के तौर पर अपने जीवन को जोखिम में डाल रहे हैं, हमारे स्कूलों में पढ़ा रहे हैं, देशभर में समर्पित सरकारी कर्मचारी के तौर पर सेवा दे रहे हैं और नस्ली समानता एवं सामाजिक न्याय के लिए जारी संघर्ष में अग्रणी भूमिका में हैं।÷ उन्होंने कहा, ''लेकिन फिर भी मुस्लिम अमेरिकियों को कट्टरता, डराने-धमकाने और नस्ली घृणा से प्रेरित अपराधों का शिकार होना पड़ रहा है। यह पूर्वाग्रह और ये हमले गलत हैं।'' बाइडन ने कहा, ÷यह अस्वीकार्य हैं। और इन्हें रोकना होगा। अमेरिका में किसी को भी अपने धर्म के कारण डर के साये में रहने की जरूरत नहीं है। और मेरा प्रशासन सभी लोगों के अधिकारों के संरक्षण एवं सुरक्षा के लिए अथक प्रयास कर रहा है।

गुइलेर्मो लासो इक्वाडोर के राष्ट्रपति चुने गए, पेरू में शीर्ष दो उम्मीदवारों के बीच होगा मुकाबला

क्रीटो (इक्वाडोर)। इक्वाडोर में दक्षिणपंथी 'क्रिएटिंग ऑपरच्यूनिटीज' पार्टी के उम्मीदवार गुइलेर्मो लासो को राष्ट्रपति चुना गया है और निकटवर्ती देश पेरू में 18 में से किसी भी उम्मीदवार को 50 प्रतिशत से अधिक मत नहीं मिले, जिसके कारण अब शीर्ष दो उम्मीदवारों के बीच मुकाबला होगा। दोनों दक्षिण अमेरिकी देशों में कोरोना वायरस संक्रमण के मद्देनजर कड़े जन स्वास्थ्य सुरक्षा नियमों का पालन करते हुए रविवार को मतगणना हुई। इक्वाडोर में पूर्व बैंकर लासो ने अपने प्रतिद्वंद्वी एवं निवर्तमान राष्ट्रपति आंद्रेस अराउज को कड़े मुकाबले में हराकर जीत हासिल की और देश में लंबे समय से चला आ रहा वामदल 'सिटीजन रेवोल्यूशन मूवमेंट' का करीब एक दशक पुराना शासन समाप्त हो गया। लासो ने जीत के बाद कहा, ''पहला कदम अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाना, निवेश बढ़ाना और रोजगार पैदा करना होगा, ताकि इक्वाडोर के लोग विदेश नहीं जाएं, इक्वाडोर में रहें और यहां रह कर अपने परिवारों के लिए देखे गए सपने पूरे करें।'' इक्वाडोर में चुनाव अधिकारियों ने विजेता की घोषणा नहीं की, लेकिन अराउज ने रविवार को अपनी हार स्वीकार कर ली। इस बीच पेरू में राष्ट्रपति पद के चुनाव में 18 में से किसी भी उम्मीदवार को 50 प्रतिशत मत नहीं मिल सके, जिसके कारण अब छह अप्रैल को शीर्ष दो उम्मीदवारों के बीच मुकाबला होगा।

ऑस्ट्रेलिया जॉनसन एंड जॉनसन की वैक्सीन को टीकाकरण योजना में नहीं करेगा शामिल

कैनबरा। ऑस्ट्रेलिया की सरकार ने मंगलवार को कहा कि उसने जॉनसन एंड जॉनसन का एक खुराक वाला कोरोना वायरस टीका नहीं खरीदने का निर्णय लिया है। दूसरी ओर, यहां रक्त का थक्का जमने का दूसरा मामला सामने आया है जो संभवत: एस्ट्राजेनेका टीका लगने से जुड़ा है। न्यूजर्सी की दवा कंपनी जॉनसन एंड जॉनसन और सरकार की बातचीत चल रही थी। कंपनी ने ऑस्ट्रेलिया के नियामक थेरापेटिक गुड्स एडमिनिस्ट्रेशन से अस्थायी पंजीयन का अनुरोध किया था। हालांकि स्वास्थ्य मंत्री ग्रेग हंट ने कंपनी से अनुबंध की संभावना से इनकार कर दिया है क्योंकि उसका टीका एस्ट्राजेनेका के उत्पाद से मिलता जुलता है जिसके साथ ऑस्ट्रेलिया 5.38 करोड़ खुराकों के लिए पहले ही अनुबंध कर चुका है। उन्होंने कहा कि सरकार ऑस्ट्रेलिया के वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी परामर्श समूह की सलाह पर काम कर रही है। ऑस्ट्रेलिया वायरस को काबू में करने में बहुत हद तक सफल रहा है लेकिन टीकाकरण की सुस्त रफ्तार को लेकर उसकी आलोचना हो रही है। नियामक ने बताया कि यहां के विक्टोरिया राज्य में एक व्यक्ति को रक्त का थक्का जमने की शिकायत के बाद अस्पताल में भर्ती करवाया गया था। उसे 22 मार्च को एस्ट्राजेनेका का टीका लगा था। ऐसा ही एक और मामला मंगलवार को सामने आया। एक महिला को टीकाकरण के बाद रक्त का थक्का जमने की शिकायत हुई और उसे भी एक अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

ताइवान पर आग से न खेले अमेरिका... पहले दर्जनों फाइटर जेट उड़ाए, अब भड़का ड्रैगन

बीजिंग (एजेंसी)।

ताइवान को लेकर चीन ने अमेरिका को आग से न खेलने की हिदायत दी है। वॉशिंगटन की ओर से हाल ही में गाइडलाइंस जारी कर कहा गया था कि उसके अधिकारी ताइवान के अपने समकक्षों से मुलाकात करते रहेंगे। इस पर बिफरे चीन ने अब अमेरिका को आग से न खेलने की चेतावनी दी है। इससे पहले सोमवार को ताइवान में चीन के कई फाइटर जेट्स ने उड़ान भरी। ताइवान के एयर डिफेंस जोन में फाइटर जेट्स के उड़ान भरने से तनाव बढ़ गया है। ताइवान की डिफेंस मिनिस्ट्री का कहना है कि कम से कम 25 चीनी मिलिट्री एयरक्राफ्ट्स ने एयर डिफेंस जोन में उड़ान भरी है। ये एयरक्राफ्ट न्यूक्लियर बम बरसाने की क्षमता से लैस थे।

ताइवान के रक्षा मंत्रालय ने कहा कि उसने चीनी एयरक्राफ्ट्स को चेतावनी देने के लिए अपने जेट्स भी उतार दिए थे। 23 मिलियन की आबादी वाले ताइवान पर चीन अपना हक जताता रहा है। एयरफोर्स से लेकर नेवी तक का इस्तेमाल कर चीन कई बार ताइवान पर अपनी हेकड़ी जताता रहा है। यही नहीं पीपल्स लिबरेशन आर्मी भी सक्रिय रही है। ताइवान पर हेकड़ी जताने वाले चीन ने इसे लेकर भारत को भी चेतावनी दी थी कि ताइपेई के साथ संबंध रखने के गंभीर परिणाम हो सकते हैं। यहां तक कि चीन ने कई बार सैन्य ताकत का इस्तेमाल कर ताइवान को वन चाइना पॉलिसी के तहत शामिल करने की बात कही है।

चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता झाओ लिजियान ने मंगलवार को कहा कि अमेरिका की गाइडलाइंस का विरोध किया गया है। झाओ ने इस दौरान कहा कि अमेरिका को आग से नहीं खेलना चाहिए। उसे अमेरिका-ताइवान के अधिकारियों के बीच किसी भी संबंध को तत्काल समाप्त कर देना चाहिए। हमने इसे लेकर अमेरिका को हिदायत दी है। हमने अमेरिका से कहा है कि वह ताइवान इंडिपेंडेंस फोर्सेज को गलत सिग्नल न दे।

ताइवान बोला, चीन से हम युद्ध के लिए भी तैयार हैं

बता दें कि सोमवार को ताइवान के विदेश मंत्री जोसेफ वू ने चीन को चेतावनी देते हुए कहा था कि हम बिना किसी सवाल के खुद का बचाव करने के लिए तैयार हैं और अगर हमें युद्ध लड़ने की जरूरत है तो हम आखिरी सांस तक लड़ेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि अगर आखिरी तक हमें खुद के लोगों की रक्षा करनी पड़ी तो हम उससे भी पीछे नहीं हटेंगे। ताइवानी विदेश मंत्री के इसी बयान से चीन चिढ़ा हुआ है।

संपादकीय

ऐसी भीड़ के मायने

कोरोना जब विकराल रूप धारण करता जा रहा है, जब शारीरिक दूरी जीवन की एक शर्त है, तब कुंभ में तीस लाख से अधिक लोगों ने सोमवार को स्नान किया है। न केवल दुख, बल्कि चिंता होती है कि कोरोना दिशा-निर्देशों के बारे में वहां लोग क्या सोच रहे हैं? उच्च न्यायालय ने कोरोना जांच के बाद ही लोगों को मेला क्षेत्र में जाने देने का आदेश दिया था, लेकिन क्या प्रशासन के पास ऐसी क्षमता है कि वह तीस लाख से ज्यादा लोगों की कोरोना जांच कर सके? सोमवार को कुंभ में एक महत्वपूर्ण शाही स्नान था, तो साधुओं और नागाओं की धार्मिक भावना समझ में आती है और उन पर प्रशासन ने फूल भी बरसा दिए हैं, लेकिन आम लोगों को लाखों की संख्या में क्यों जाने दिया गया? कोरोना फैलने की स्थिति में आखिर कौन अपनी जिम्मेदारी मानेगा, ज्यादातर सरकारों और प्रशासन को ही कोसा जाएगा? प्रशासन और सरकार की जमकर आलोचना हो रही है, तो इसे भला कौन गलत कह सकता है? क्या प्रशासन ऐसी भीड़ के लिए तैयार बैठा था, अब वह उच्च न्यायालय में क्या जवाब देगा? कोरोना को भूलकर श्रद्धा ऐसी उमड़ी कि नियम तार-तार हो गए और कुंभ मेला क्षेत्र के आईजी को कहना पड़ा, 'हम लोगों से लगातार कोविड नियमों के पालन का आग्रह कर रहे हैं, लेकिन भारी भीड़ के कारण यह व्यावहारिक रूप से असंभव है। यहां घाट पर सामाजिक दूरी जैसे नियम का पालन करा पाना नामुमकिन है। अगर हमने ऐसा कराने की कोशिश की, तो भगदड़ जैसी स्थिति पैदा हो सकती है।' कोरोना की शुरुआत में तबलीगी जमात की खूब आलोचना हुई थी, ठीक वैसी ही आलोचना अब हो रही है, तो आश्चर्य नहीं। भारत में सदियों से चले आ रहे कुंभ का आयोजन कभी भी आसान नहीं था। हरिद्वार में 1915 में भी कुंभ मेला लगा था, जिसमें गांधी जी भी शामिल हुए थे और उन्होंने अपना पूरा ध्यान वहां साफ-सफाई करने, व्यवस्थाएं ठीक करने पर लगा दिया था। उन्होंने सत्य के प्रयोग में लिखा है, 'कुंभ का दिन आया। मेरे लिए वह धन्य घड़ी थी। मैं यात्रा की भावना से हरिद्वार नहीं गया था। तीर्थक्षेत्र में पवित्रता की शोध में भटकने का मोह मुझे कभी नहीं रहा। किंतु 17 लाख लोग पाखंडी नहीं हो सकते थे। कहा गया था कि मेले में 17 लाख लोग आए होंगे। इनमें असंख्य लोग पुण्य कमाने के लिए, शुद्धि प्राप्त करने के लिए आए थे, इसमें मुझे कोई शंका न थी। यह कहना असंभव नहीं, तो कठिन अवश्य है कि इस प्रकार की श्रद्धा आत्मा को किस हद तक ऊपर उठाती होगी।' गांधी जी की 106 साल पुरानी इस अभिव्यक्ति में कई प्रश्न हैं, जो आज भी कुंभ क्षेत्र में भटक रहे हैं। हमें जवाब खोजना चाहिए। यह खुद को परखने का वक्त है। हर समाज की बुनियादी मजबूती लोगों के साथ समान व्यवहार पर टिकी होती है। ऐसा हो नहीं सकता कि कहीं एक मोटरकार के भीतर मास्क न लगाने वाले व्यक्ति को जुर्माना भरना पड़े और कहीं कुंभ या चुनावी रैली में जुटे हजारों-लाखों लोगों से कोई सवाल भी न करे। यह सफलतापूर्वक भीड़ जुटा लेने और अपने प्रबंधन की पीठ थपथपा देने का समय नहीं है, यह समय है, जब भीड़ से बचा जाए और कोई खतरा मोल न लिया जाए। शायद आज के समय अपनी और सबकी जान व जीविका बचा लेना ही सबसे बड़ा पुण्य है।

आज के ट्वीट

परिवर्तन

बंगाल की जनता तृणमूल सरकार की सोच से मुक्ति चाहती है। जय श्री राम बोल कर वह ममता जी को संदेश दे रही है कि उन्हें परिवर्तन चाहिए।

-- पियुष गोयल

श्रमिकों की उत्पादकता भी बढ़ाए लेबर कोड

भरत झुनझुनवाला

वर्तमान में देश में लगभग 40 श्रम कानून लागू हैं। सरकार ने इन्हें समेट कर 4 लेबर कोड में संकलित कर दिया है। इन नये कानूनों को एक अप्रैल से लागू होना था, जिसे सरकार ने चुनाव के कारण कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया है। चुनाव के बाद इन्हें शीघ्र ही लागू किये जाने की पूरी संभावना है। इन लेबर कोड को बनाने के पीछे सरकार की मंशा श्रम कानूनों को सरल करने की थी, जिससे कि देश के उद्यमियों के लिए श्रमिकों को रोजगार देना आसान हो जाए और मैन्युफैक्चरिंग क्षेत्र में अधिक संख्या में रोजगार उत्पन्न हो सकें। लेबर कोड के प्रावधानों में कुछ श्रमिकों के पक्ष में हैं तो कुछ उनके विपरीत हैं। जैसे यदि किसी श्रमिक को कोई आरोप लगाकर मुअत्तल किया जाता है तो अब व्यवस्था कर दी गयी है कि 90 दिन में उसकी जांच पूरी की जायेगी। पूर्व में ग्रेच्युटी कई वर्षों के बाद लागू होती थी, जिसे अब एक वर्ष के बाद लागू कर दिया गया है। अल्पकाल के लिए रखे गये श्रमिकों को अब वे सभी सुविधाएं उपलब्ध होंगी जो स्थाई श्रमिकों को उपलब्ध हैं। ये प्रावधान श्रमिकों के हित में हैं। इसके विपरीत उद्यमों को बंद करने अथवा श्रमिकों की छंटनी करने के लिए पूर्व में 100 से अधिक श्रमिकों को रोजगार देने वाली कम्पनियों के लिए सरकार से अनुमति लेनी जरूरी थी। अब इसे 300 से अधिक श्रमिकों को रोजगार देने वाली कम्पनियों पर लागू किया गया है। 100 से 300 श्रमिकों को रोजगार देने वाली कम्पनियों को सरकार से अनुमति लेने से मुक्त कर दिया गया है। यह श्रमिकों के विपरीत है। इस प्रकार नया लेबर कोड मिश्रित है। देखना यह है कि नये लेबर कोड से रोजगार उत्पन्न करने को कितना प्रोत्साहन दिया जाएगा? इसके लिए हमें समझना होगा कि उद्यमी द्वारा रोजगार किन परिस्थितियों में उत्पन्न किये जाते हैं। उद्यमी को सस्ता माल बनाना होता है, जिससे कि वह बाजार में अपना माल बेच सके। सस्ता माल बनाने के लिए जरूरी है कि वह उत्पादन में श्रम की लागत को कम करे। उसके लिए जरूरी है कि वह श्रम की उत्पादकता बढ़ाये, यानी एक श्रमिक से ही पूर्व की तुलना में अधिक उत्पादन कराए। जैसे एक श्रमिक पूर्व में 10 मीटर कपड़ा एक दिन में बुनाई करता था वही श्रमिक यदि अब 20 मीटर कपड़ा बुनाई करने लगे तो उद्यमी की उत्पादन लागत कम हो जाती है और वह बाजार में अपने सस्ते माल को बेच पाता है। लेकिन अधिक उत्पादन करने के कारण अब कम श्रमिकों की जरूरत पड़ती है। मान लीजिये पूर्व में उद्यमी प्रतिदिन 100 मीटर कपड़ा एक दिन में बेच पाता था और वह 10 मीटर प्रति श्रमिक की दर से 10 श्रमिकों को रोजगार देता था। उत्पादकता बढ़ाने के बाद उसी 100 मीटर कपड़े का उत्पादन करने के लिए अब 20 मीटर प्रति श्रमिक की दर से उसे केवल पांच श्रमिकों की जरूरत होगी। इस प्रकार सस्ते माल और रोजगार के बीच सीधा अन्तर्विरोध है। यदि माल सस्ता बनाते हैं तो रोजगार कम होते है। चीन का माडल इससे भिन्न था जो विशेष परिस्थितियों में लागू हुआ था। चीन ने श्रमिक की उत्पादकता बढ़ाने के साथ-साथ अपने बाजार का भारी विस्तार किया। जैसे मान लीजिये पूर्व में चीन में एक श्रमिक 10 मीटर कपड़े की बुनाई करता था, उत्पादकता बढ़ाने के बाद वह 20 मीटर कपड़ा बुनने लगा। लेकिन इसी अवधि में चीन का बाजार 100 मीटर से बढ़कर 400 मीटर हो गया तो 400 मीटर कपड़े का उत्पादन करने के लिए बढ़ी हुई उत्पादकता के बावजूद 20 श्रमिकों की जरूरत पड़ेगी। 20 श्रमिक 20 मीटर कपड़ा प्रतिदिन बुनेंगे तब 400 मीटर कपड़े का उत्पादन होगा। इस प्रकार यदि बाजार का भारी विस्तार होता रहे तो श्रमिक की उत्पादकता के बढ़ने के साथ-साथ रोजगार भी बढ़ सकते हैं। लेकिन यह विशेष परिस्थिति थी जब चीन ने विश्व बाजार पर अपना प्रभुत्व बनाया था। यदि बाजार का तीव्र विस्तार न हो तो उत्पादकता बढ़ने के साथ-साथ रोजगार के बढ़ने की संख्या निश्चित रूप से घटेगी। कटु सत्य यह है कि यदि श्रम की उत्पादकता बढ़ाई जाती है तो सीमित बाजार होने के कारण रोजगार घटते हैं और यदि श्रम की उत्पादकता नहीं बढ़ाई जाती है तो उद्यमी के लिए श्रम के स्थान पर मशीन का उपयोग करना लाभप्रद हो जाता है और पुनः रोजगार में गिरावट आती है। इन दोनों कठिन विकल्पों के बीच हमें श्रम की उत्पादकता तो बढ़ानी ही पड़ेगी। यदि श्रम की उत्पादकता नहीं बढ़ाई जायेगी तो उद्यमी स्वचालित मशीनों का उपयोग करेगा और श्रमिक पूरी तरह बाजार से बाहर हो जाएगा। अतः कम ही सही लेकिन श्रमिक को कुछ रोजगार मिलता रहे, इसके लिए जरूरी है कि श्रम की उत्पादकता को बढ़ाया जाए।

श्रम की उत्पादकता बढ़ाने के दो प्रमुख उपाय हैं। एक यह कि उत्तम मशीनों का उपयोग किया जाये, जिससे कि उसी कुशलता के स्तर का श्रमिक अधिक उत्पादन कर सके। दूसरा यह है कि श्रमिक की कुशलता में विस्तार किया जाए। अक्सर उद्योगों में देखा जाता है कि श्रमिक पूरी तत्परता और मनोयोग से काम नहीं करते। वर्तमान श्रम कानून में व्यवस्था है कि यदि कोई उद्यमी श्रमिक को बर्खास्त करना चाहे तो उसे प्राकृतिक न्याय के अनुरूप उसकी सुनवाई करनी होती है और उसके बाद श्रम न्यायालय में उसका विवाद चलता है, जिस भय के कारण उद्यमी अक्सर श्रमिक को रखना ही नहीं चाहते। लेबर कोड ने श्रम कानून की इस बाधा को दूर नहीं किया है। पश्चिमी देशों में उद्यमी को छूट है कि वह अपनी मर्जी से श्रमिकों को रख सकता है अथवा बर्खास्त कर सकता है। इसलिए पश्चिमी देशों में उद्यमी के लिए कुशल श्रमिक को रखना और अकुशल श्रमिक को बर्खास्त करना, दोनों ही आसान हैं। श्रम कानून में इस दिशा में कोई सुधार नहीं किया गया है। इसलिए यह लेबर कोड नये रोजगार उत्पन्न करने में सहायक नहीं होगा। अपने देश के श्रमिक चीन आदि देशों के श्रमिकों की तुलना में अकुशल हैं और उनकी कुशलता में सुधार करने के लिए लेबर कोड असफल है। ऐसे में अपने देश में श्रम की उत्पादकता न्यून स्तर पर बनी रहेगी, उद्यमी अधिकाधिक मशीनों का उपयोग करते रहेंगे और हमारे श्रमिकों के रोजगार के अवसर घटते ही जायेंगे। इस दिशा में लेबर कोड में मूल चिन्तन बदलने की जरूरत है।

लेखक आर्थिक मामलों के जानकार हैं।

ज्ञान गंगा

तप साधना

श्रीराम शर्मा आचार्य

संसार को, मानव जाति को सुखी और समुन्नत बनाने के लिए अनेक प्रयत्न हो रहे हैं। उद्योग- धंधे, कल-कारखाने, रेल, तार, सड़क, बांध, स्कूल, अस्पतालों आदि का बहुत कुछ निर्माण कार्य चल रहा है। इससे गरीबी और बीमारी, अशिक्षा और असभ्यता का बहुत कुछ समाधान होने की आशा की जाती है; पर मानव अन्तःकरणों में प्रेम और आत्मीयता का, स्नेह और सौजन्य का आस्तिकता और धार्मिकता का, सेवा और संयम का निर्झर प्रवाहित किए बिना, विश्व शान्ति की दिशा में कोई कार्य न हो सकेगा। जब तक सन्मार्ग की प्रेरणा देने वाले गांधी, दयानन्द, शंकराचार्य, बुद्ध, महावीर, नारद, व्यास जैसे आत्मबल सम्पन्न मार्गदर्शक न हों, तब तक लोक मानस को ऊंचा उठाने के प्रयत्न सफल न होंगे। लोक मानस को ऊंचा उठाए बिना पवित्र आदर्शवादी भावनाएं उत्पन्न किये बिना लोक की गतिविधियां ईर्ष्या-द्वेष, शोषण, अपहरण आलस्य, प्रमाद, व्यभिचार, पाप से रहित न होंगी, तब तक क्लेश और कलह से, रोग और दारिद्र से कदापि छुटकारा न मिलेगा। लोक मानस को पवित्र, सात्विक एवं मानवता के अनुरूप, नैतिकता से परिपूर्ण बनाने के लिए जिन सूक्ष्म आध्यात्मिक तरंगों को प्रवाहित किया जाना आवश्यक है, वे उच्चकोटि की आत्माओं द्वारा विशेष तप साधन से ही उत्पन्न होगी। मानवता की, धर्म और संस्कृति की यही सबसे बड़ी सेवा है। आज इन प्रयत्नों की तुरन्त आवश्यकता अनुभव की जाती है, क्योंकि जैसे-जैसे दिन बीतते जाते हैं असुरता का पलड़ा अधिक भारी होता जाता है, देरी करने में अति और अनिष्ट की अधिक सम्भावना हो सकती है। समय की इसी पुकार ने हमें वर्तमान कदम उठाने को बाध्य किया। यों जबसे यज्ञोपवीत संस्कार संपन्न हुआ, 6 घण्टे की नियमित गायत्री उपासना का क्रम चलता रहा है; पर बड़े उद्देश्यों के लिए जिस सघन साधना और प्रचंड तपोबल की आवश्यकता होती है, उसके लिए यह आवश्यक हो गया कि 1 वर्ष ऋषियों की तपोभूमि हिमालय में रहा और प्रयोजनीय तप सफल किया जाय। इस तप साधना का कोई वैयक्तिक उद्देश्य नहीं। स्वर्ग और मुक्ति की न कभी कामना रही और न रहेगी। अनेक बार जल लेकर मानवीय गरिमा की प्रतिष्ठा का संकल्प लिया है, फिर पलायनवादी कल्पनाएं क्यों करें।

आज का राशिफल

मेष व्यावसायिक योजना सफल होगी। किया गया परिश्रम सार्थक होगा। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी। ससुराल पक्ष से लाभ होगा। धार्मिक प्रवृत्ति में वृद्धि होगी।

वृषभ बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा। रुका हुआ कार्य सम्पन्न होगा। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। वाहन प्रयोग में सावधानी रखें। धन लाभ होगा।

मिथुन पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। वाणी पर नियंत्रण रखकर वाद विवाद की स्थिति को टाला जा सकता है। संतान के संबंध में सुखद समाचार मिलेगा।

कर्क आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा। व्यावसायिक योजना सफल होगी। भाग्यवश कुछ ऐसा होगा जिसका आपको लाभ मिलेगा। स्वास्थ्य शिथिल होगा। विरोधी परास्त होंगे। व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी।

सिंह प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता के योग हैं। उदर विकार या त्वचा के रोग से पीड़ित रहेंगे। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। अधीनस्थ कर्मचारी से तनाव मिलेगा। प्रणय संबंध प्रगाढ़ होंगे।

कन्या दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा। जीवनसाथी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। आय और व्यय में संतुलन बना कर रखें। खान पान में संयम रखें। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी।

तुला आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। आय और व्यय में संतुलन बना कर रखें। प्रणय संबंधों में कटुता आ सकती है। विरोधियों का पराभव होगा।

वृश्चिक आर्थिक दिशा में किए गए प्रयास सफल होंगे। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। नेत्र विकार की संभावना है। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

धनु पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। भाई या पड़ोसी से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ससुराल पक्ष से लाभ मिलेगा। धन लाभ की संभावना है।

मकर पारिवारिक जनों का सहयोग मिलेगा। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। स्थानान्तरण व परिवर्तन के योग हैं। आय के नवीन स्त्रोत बनेंगे।

कुम्भ शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। जीविका के क्षेत्र में प्रगति होगी स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। वाणी पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता है। धार्मिक प्रवृत्ति में वृद्धि होगी।

मीन पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। वाणी पर नियंत्रण रखें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। मनोरंजन के अवसर प्राप्त होंगे। वाहन प्रयोग में सावधानी रखें।

ग्लोबल वार्मिंग व बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण के कारण आग उगल रहा है आसमान

(अशोक भाटिया)

धरती का तापमान लगातार बढ़ रहा है और दुनियाभर के लोग इसको लेकर चिंतित हैं। इसके दुष्प्रभाव भी देखने को मिल रहे हैं।इसका पहला कारण हैं ग्लोबल वार्मिंग का असर जो हमारे मौसम चक्र पर भी पड़ा है, जिसके कारण अब पहले की अपेक्षा अब ज्यादा गर्मी और ज्यादा समय तक पड़ती है। ऐसे में चिलचिलाती धूप और उमस में लोगों का जीना मुहाल हो जाता है।यूं तो ग्लोबल वार्मिंग की समस्या पूरी दुनिया में बढ़ रही है। किसी समस्या का यह सबसे खतरनाक पहलु होता है कि हमें यह पता होता है कि समस्या की जड़ कहां है और हम उस जड़ को खत्म करने की बजाय उसको सहला रहे होते हैं। दुनिया में बदलती जलवायु और भयानक होते मौसम परिवर्तनों का यही हाल है। हर कोई जानता है कि यह सब क्यों हो रहा है और कैसे हो रहा है लेकिन कोई भी वह सब करने को तैयार नहीं कि यह रुके और दुनिया का सामूहिक भविष्य बचा रहे। ग्लोबल वार्मिंग या वैश्विक तापमान बढ़ने का मतलब है कि पृथ्वी लगातार गर्म होती जा रही है। वैज्ञानिकों का कहना है कि आने वाले दिनों में सूखा बढ़ेगा, बाढ़ की घटनाएँ बढ़ेगी और मौसम का मिज़ाज पूरी तरह बदला हुआ दिखेगा। आसान शब्दों में समझें तो ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ है 'पृथ्वी के तापमान में वृद्धि और इसके कारण मौसम में होने वाले परिवर्तन' पृथ्वी के तापमान में हो रही इस वृद्धि (जिसे 100 सालों के औसत तापमान पर 10 फारेनहाईट आँका गया है) के परिणाम स्वरूप बारिश के तरीकों में बदलाव, हिमखण्डों और ग्लेशियरों के पिघलने, समुद्र के जलस्तर में वृद्धि और वनस्पति तथा जन्तु जगत पर प्रभावों के रूप के सामने आ सकते हैं।ग्लोबल वार्मिंग दुनिया की कितनी बड़ी समस्या है, यह बात एक आम आदमी समझ नहीं पाता है। उसे ये शब्द थोड़ा टेक्निकल लगता है। इसलिये वह इसकी तह तक नहीं जाता है। लिहाजा इसे एक वैज्ञानिक परिभाषा मानकर छोड़ दिया जाता है। ज्यादातर लोगों को लगता है कि फिलहाल संसार को इससे कोई खतरा नहीं है।

भारत में भी ग्लोबल वार्मिंग एक प्रचलित शब्द नहीं है और भाग-दौड़ में लगे रहने वाले भारतीयों के लिये भी इसका अधिक कोई मतलब नहीं है। लेकिन विज्ञान की दुनिया की बात करें तो ग्लोबल वार्मिंग को लेकर भविष्यवाणियाँ की जा रही हैं। इसको 21वीं शताब्दी का सबसे बड़ा खतरा बताया जा रहा है। यह खतरा तृतीय विश्वयुद्ध या किसी क्षुद्रग्रह के पृथ्वी से टकराने से भी बड़ा माना जा रहा है।ग्लोबल वार्मिंग के कारण होने वाले जलवायु परिवर्तन के लिये सबसे अधिक जिम्मेदार ग्रीन हाउस गैस हैं। ग्रीन हाउस गैसें, वे गैसें होती हैं जो बाहर से मिल रही गर्मी या ऊष्मा को अपने अंदर सोख लेती हैं। ग्रीन हाउस गैसों का इस्तेमाल सामान्यतः अत्यधिक सर्द इलाकों में उन पौधों को गर्म रखने के लिये किया जाता है जो अत्यधिक सर्द मौसम में खराब हो जाते हैं। ऐसे में इन पौधों को काँच के एक बंद घर में रखा जाता है और काँच के घर में ग्रीन हाउस गैस भर दी जाती है। यह गैस सूरज से आने वाली किरणों की गर्मी सोख लेती है और पौधों को गर्म रखती है। ठीक यही प्रक्रिया पृथ्वी के साथ होती है। सूरज से आने वाली किरणों की गर्मी की कुछ मात्रा को पृथ्वी द्वारा सोख लिया जाता है। इस प्रक्रिया में हमारे पर्यावरण में फैली ग्रीन हाउस गैसों का महत्वपूर्ण योगदान है।अगर इन गैसों का अस्तित्व हमारे में न होता तो पृथ्वी पर तापमान वर्तमान से काफी कम होता। ग्रीन हाउस गैसों में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण गैस कार्बन डाइआक्साइड है, जिसे हम जीवित प्राणी अपने साँस के साथ उत्सर्जित करते हैं। पर्यावरण वैज्ञानिकों का कहना है कि पिछले कुछ वर्षों में पृथ्वी पर कार्बन डाइआक्साइड गैस की मात्रा लगातार बढ़ी है। वैज्ञानिकों द्वारा कार्बन डाइआक्साइड के उत्सर्जन और तापमान वृद्धि में गहरा सम्बन्ध बताया जाता है। कुछ वर्ष पूर्व एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म आई - 'द इन्कन्वीनियेंट ट्रुथ'। यह डॉक्यूमेंट्री फिल्म तापमान वृद्धि और कार्बन उत्सर्जन पर केन्द्रित थी। इस फिल्म में मुख्य भूमिका में थे - अमेरिकी उपराष्ट्रपति 'अल गोरे' और इस फिल्म का निर्देशन 'डेविड गुग्न्हेम' ने किया था। इस फिल्म में ग्लोबल वार्मिंग को एक विभीषिका की तरह दर्शाया गया, जिसका प्रमुख कारण मानव गतिविधि जनित कार्बन डाइऑक्साइड गैस माना गया। इस फिल्म को सम्पूर्ण विश्व में बहुत सराहा गया और फिल्म को सर्वश्रेष्ठ डॉक्यूमेंट्री का ऑस्कर एवार्ड भी मिला। यद्यपि ग्लोबल वार्मिंग पर वैज्ञानिकों द्वारा शोध कार्य जारी है, मगर मान्यता यह है कि पृथ्वी पर हो रहे तापमान वृद्धि के लिये जिम्मेदार कार्बन उत्सर्जन है जोकि मानव गतिविधि जनित है। इसका प्रभाव विश्व के राजनीतिक घटनाक्रम पर भी पड़ रहा है। सन 1988 में 'जलवायु परिवर्तन पर अन्तरशासकीय दल' किया गया था। सन 2007 में इस अन्तरशासकीय दल और तत्कालीन अमेरिकी उपराष्ट्रपति 'अल गोरे' को शांति का नोबल पुरस्कार दिया गया। भारत में मौसमों का अति की पराकाष्ठा तक जाना हमेशा से रहा है। भारत में हमेशा भीषण गर्मी और जबरदस्त बारिश होती रही है। ठंड भी खूब पड़ती रही है लेकिन मौसम की तमाम अतियों के बावजूद उसमें हमेशा संतुलन रहा है। हमारी जीवनशैली से लेकर हमारी सोच-विचार तक का इन मौसमों के अनुकूल रहा है। ग्लोबल वार्मिंग के आलावा हम बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण के जरिये धरती के पर्यावरणीय संतुलन और उसके पारिस्थितिकीय संतुलन को तो बिगाड़ ही रहे हैं, अपनी जीवनशैली और सोच-विचार को भी मौसमों के अनुरूप बनाए रखने की बजाय उनके विरोध में खड़ा कर रहे हैं। बस्तियों को कंक्रीट के जंगलों में तब्दील करके और अपने खानपान में पश्चिम में अंधानुकरण करके हमें भूगोल के साथ-साथ सामाजिक रूप से भी भीषण आग उगलती गर्मी को आमंत्रित कर रहे हैं । एक जमाना था जब लोग भयानक लू के दिनों में भी नीम और बरगद के पेड़ों के नीचे पना और शर्बत पीकर सहजता से उसे झेल लेते थे लेकिन आज हमने घरों को ईंट और सीमेंट का घोसला बनाकर उसे इस कदर हवा-पानी से मरहूम कर दिया है कि बिना एसी के यहां गुजारा ही सम्भव नहीं है। एसी ने नई किस्म की समस्याएं पैदा की हैं। एक आदमी जब एसी का आनंद लेता है तो 12 लोग एसी से निकलने वाली गर्मी को भुगतते हैं और पूरी दुनिया उस एसी से पैदा होने वाली क्लोरोफ्लोरोकार्बन की भुक्तभोगी बनती है। पूरी दुनियाभर में तेल की खपत बढ़ रही है, सड़कों पर वाहन विषाक्त धुआं उगल रहे हैं। अब सवाल उठना वाजिब है कि प्राकृतिक परिवर्तनों से जूझने के लिए क्या कदम उठाए गए, कहीं ऊंचे शैल शिखरों पर ग्लेशियर धीरे-धीरे खत्म हो रहे हैं तो कहीं रेगिस्तानी अरब देशों से सर्दियों में बर्फ पड़ने की खबर आ जाती है। कहीं वर्षा के मौसम में विदर्भ सूखा रह जाता है तो कहीं वर्षों की बादल तोड़ बारिश से इंसान कांपने लगता है। मगर क्या इसे प्रकृति का भी आज के बदलते इंसान के समान ही जल्दबाजी का स्वभाव मान लिया जाए। मौसम वैज्ञानिक कह रहे हैं कि वर्षा का अर्थ यह नहीं है कि गर्मी कम पड़ेगी।

भारत रत्न बाबासाहेब

भारत के संविधान निर्माता.... दलितों व पिछड़ो के मसीहा... समाज सुधार के प्रेरक...

डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर (14 अप्रैल , 1891 – 6 दिसंबर, 1956) एक भारतीय विधिवेत्ता थे। वे एक बहुजन राजनीतिक नेता, और एक बौद्ध पुनरुत्थानवादी होने के साथ साथ, भारतीय संविधान के मुख्य वास्तुकार भी थे। उन्हें बाबासाहेब के नाम से भी जाना जाता है। इनका जन्म एक गरीब अस्पृश्य परिवार मे हुआ था। बाबासाहेब आंबेडकर ने अपना सारा जीवन हिंदू धर्म की चतुवर्ण प्रणाली, और भारतीय समाज में सर्वव्यापित जाति व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष में बिता दिया। हिंदू धर्म में मानव समाज को चार वर्णों में वर्गीकृत किया है। उन्हें बौद्ध महाशक्तियों के दलित आंदोलन को प्रारंभ करने का श्रेय भी जाता है। बाबासाहेब अम्बेडकर को भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया है, जो भारत का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार है।

कई सामाजिक और वित्तीय बाधाएं पार कर, आंबेडकर उन कुछ पहले अछूतों मे से एक बन गये जिन्होने भारत में कॉलेज की शिक्षा प्राप्त की। आंबेडकर ने कानून की उपाधि प्राप्त करने के साथ ही विधि, अर्थशास्त्र व राजनीतिक विज्ञान में अपने अध्ययन और अनुसंधान के कारण कोलंबिया विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स से कई डॉक्टरेट डिग्रियां भी अर्जित कीं। आंबेडकर वापस अपने देश एक प्रसिद्ध विद्वान के रूप में लौट आए और इसके बाद कुछ साल तक उन्होंने वकालत का अभ्यास किया। इसके बाद उन्होंने कुछ पत्रिकाओं का प्रकाशन किया, जिनके द्वारा उन्होंने भारतीय अस्पृश्यों के राजनैतिक अधिकारों और सामाजिक स्वतंत्रता की वकालत की। डॉ. आंबेडकर को भारतीय बौद्ध भिक्कू ने बोधिसत्व की उपाधि प्रदान की है।

प्रारंभिक जीवन

भीमराव रामजी आंबेडकर का जन्म ब्रिटिशों द्वारा केन्द्रीय प्रांत (अब मध्य प्रदेश में) में स्थापित नगर व सैन्य छावनी मऊ में हुआ था।[1] वे रामजी मालोजी सकपाल और भीमाबाई मुरबादकर की 14 वीं व अंतिम संतान थे।[2] उनका परिवार मराठी था और वो अंबावडे नगर जो आधुनिक महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले मे है, से संबंधित था। वे हिंदू महार जाति से संबंध रखते थे, जो अछूत कहे जाते थे और उनके साथ सामाजिक और आर्थिक रूप से गहरा भेदभाव किया जाता था। अम्बेडकर के पूर्वज लंबे समय तक ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में कार्यरत थे, और उनके पिता,भारतीय सेना की मऊ छावनी में सेवा में थे और यहां काम करते हुये वो सूबेदार के पद तक पहुँचे थे। उन्होंने मराठी और अंग्रेजी में औपचारिक शिक्षा की डिग्री प्राप्त की थी। उन्होने अपने बच्चों को स्कूल में पढने और कड़ी मेहनत करने के लिये हमेशा प्रोत्साहित किया।

कबीर पंथ से संबंधित इस परिवार में, रामजी सकपाल, अपने बच्चों को हिंदू ग्रंथों को पढ़ने के लिए, विशेष रूप से महाभारत और रामायण प्रोत्साहित किया करते थे। उन्होने सेना मे अपनी हैसियत का उपयोग अपने बच्चों को सरकारी स्कूल से शिक्षा दिलाने मे किया, क्योंकि अपनी जाति के कारण उन्हें इसके लिये सामाजिक प्रतिरोध का सामना करना पड़ रहा था। स्कूली पढ़ाई में सक्षम होने के बावजूद आंबेडकर और अन्य अस्पृश्य बच्चों को विद्यालय मे अलग बिठाया जाता था और अध्यापकों द्वारा न तो ध्यान ही दिया जाता था, न ही कोई सहायता दी जाती थी। उनको कक्षा के अन्दर बैठने की अनुमति नहीं थी, साथ ही प्यास लगने प ?र कोई ऊँची जाति का व्यक्ति ऊँचाई से पानी उनके हाथों पर पानी डालता था, क्योंकि उनको न तो पानी, न ही पानी के पात्र को स्पर्श करने की अनुमति थी। लोगों के मुताबिक ऐसा करने से पात्र और पानी दोनों अपवित्र हो जाते थे। आमतौर पर यह काम स्कूल के चपरासी द्वारा किया जाता था जिसकी अनुपस्थिति में बालक आंबेडकर को बिना पानी के ही रहना पड़ता था। 1894 मे रामजी सकपाल सेवानिवृत्त हो जाने के बाद सपरिवार सतारा चले गए और इसके दो साल बाद, अम्बेडकर की मां की मृत्यु हो गई। बच्चों की देखभाल उनकी चाची ने कठिन परिस्थितियों में रहते हुये की। रामजी सकपाल के केवल तीन बेटे, बलराम, आनंदराव और भीमराव और दो बेटियाँ मंजुला और तुलासा ही इन कठिन हालातों मे जीवित बच पाये। अपने भाइयों और बहनों मे केवल अम्बेडकर ही स्कूल की परीक्षा में सफल हुए और इसके बाद बड़े स्कूल मे जाने में सफल हुये। अपने एक देशस्त ब्राह्मण शिक्षक महादेव अम्बेडकर जो उनसे विशेष स्नेह रखते थे के कहने पर अम्बेडकर ने अपने नाम से सकपाल हटाकर अम्बेडकर जोड़ लिया जो उनके गांव के नाम 卐अंबावडे卐 पर आधारित था।

रामजी सकपाल ने 1898 मे पुनर्विवाह कर लिया और परिवार के साथ मुंबई (तब बंबई)चले आये। यहाँ अम्बेडकर एल्फिंस्टोन रोड पर स्थित गवर्न्मेंट हाई स्कूल के पहले अछूत छात्र बने।[3] पढाई में अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन के बावजूद, अम्बेडकर लगातार अपने विरुद्ध हो रहे इस अलगाव और, भेदभाव से व्यथित रहे। 1907 में मैट्रिक परीक्षा पास करने के बाद अम्बेडकर ने बंबई विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया और इस तरह वो भारत में कॉलेज में प्रवेश लेने वाले पहले अस्पृश्य बन गये। उनकी इस सफलता से उनके पूरे समाज मे एक खुशी की लहर दौड़ गयी , और बाद में एक सार्वजनिक समारोह उनका सम्मान किया गया इसी समारोह में उनके एक शिक्षक कृष्णजी अर्जुन केलूसकर ने उन्हें महात्मा बुद्ध की जीवनी भेंट की, श्री केलूसकर, एक मराठा जाति के विद्वान थे। अम्बेडकर की सगाई एक साल पहले हिंदू रीति के अनुसार दापोली की, एक नौ वर्षीय लड़की, रमाबाई से तय की गयी थी।[3] 1908 में, उन्होंने एलिफिंस्टोन कॉलेज में प्रवेश लिया और बड़ौदा के गायकवाड़ शासक सहयाजी राव तृतीय से संयुक्त राज्य अमेरिका मे उच्च अध्ययन के लिये एक पच्चीस रुपये प्रति माह का वजीफ़ा प्राप्त किया। 1912 में उन्होंने राजनीतिक विज्ञान और अर्थशास्त्र में अपनी डिग्री प्राप्त की, और बड़ौदा राज्य सरकार की नौकरी को तैयार हो गये। उनकी पत्नी ने अपने पहले बेटे यशवंत को इसी वर्ष जन्म दिया। अम्बेडकर अपने परिवार के साथ बड़ौदा चले आये पर जल्द ही उन्हें अपने पिता की बीमारी के चलते बंबई वापस लौटना पड़ा, जिनकी मृत्यु 2 फरवरी 1913 को हो गयी।

छुआछूत के विरुद्ध संघर्ष

भारत सरकार अधिनियम 1919, तैयार कर रही साउथबोरोह समिति के समक्ष, भारत के एक प्रमुख विद्वान के तौर पर अम्बेडकर को गवाही देने के लिये आमंत्रित किया गया। इस सुनवाई के दौरान, अम्बेडकर ने दलितों और अन्य धार्मिक समुदायों के लिये पृथक निर्वाचिका और आरक्षण देने की वकालत की। 1920 में, बंबई में, उन्होंने साप्ताहिक मूकनायक के प्रकाशन की शुरूआत की। यह प्रकाशन जल्द ही पाठकों मे लोकप्रिय हो गया, तब्, अम्बेडकर ने इसका इस्तेमाल रूढ़िवादी हिंदू राजनेताओं व जातीय भेदभाव से लड़ने के प्रति भारतीय राजनैतिक समुदाय की अनिच्छा की आलोचना करने के लिये किया। उनके दलित वर्ग के एक सम्मेलन के दौरान दिये गये भाषण ने कोल्हापुर राज्य के स्थानीय शासक शाहू चतुर्थ को बहुत प्रभावित किया, जिनका अम्बेडकर के साथ भोजन करना रूढ़िवादी समाज मे हलचल मचा गया। अम्बेडकर ने अपनी वकालत अच्छी तरह जमा ली, और बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना भी की जिसका उद्देश्य दलित वर्गों में शिक्षा का प्रसार और उनके सामाजिक आर्थिक उत्थान के लिये काम करना था। सन् 1926 में, वो बंबई विधान परिषद के एक मनोनीत सदस्य बन गये। सन 1927 में डॉ. अम्बेडकर ने छुआछूत के खिलाफ एक व्यापक आंदोलन शुरू करने का फैसला किया। उन्होंने सार्वजनिक आंदोलनों और जुलूसों के द्वारा, पेयजल के सार्वजनिक संसाधन समाज के सभी लोगों के लिये खुलवाने के साथ ही उन्होनें अछूतों को भी हिंदू मंदिरों में प्रवेश करने का अधिकार दिलाने के लिये भी संघर्ष किया। उन्होंने महड में अस्पृश्य समुदाय को भी शहर की पानी की मुख्य टंकी से पानी लेने का अधिकार दिलाने कि लिये सत्याग्रह चलाया।

1 जनवरी 1927 को डॉ अम्बेडकर ने द्वितीय आंग्ल – मराठा युद्ध, की कोरेगाँव की लड़ाई के दौरान मारे गये भारतीय सैनिकों के सम्मान में कोरेगाँव विजय स्मारक मे एक समारोह आयोजित किया। यहाँ महार समुदाय से संबंधित सैनिकों के नाम संगमरमर के एक शिलालेख पर खुदवाये। 1927 में, उन्होंने अपना दूसरी पत्रिका बहिष्कृत भारत शुरू की, और उसके बाद रीक्रिश्टेन्ड जनता की। उन्हें बाँबे प्रेसीडेंसी समिति मे सभी यूरोपीय सदस्यों वाले साइमन आयोग 1928 में काम करने के लिए नियुक्त किया गया। इस आयोग के विरोध मे भारत भर में विरोध प्रदर्शन हुये, और जबकि इसकी रिपोर्ट को ज्यादातर भारतीयों द्वारा नजरअंदाज कर दिया गया, डॉ अम्बेडकर ने अलग से भविष्य के संवैधानिक सुधारों के लिये सिफारिशों लिखीं।

संविधान निर्माण

अपने विवादास्पद विचारों, और गांधी और कांग्रेस की कटु आलोचना के बावजूद अम्बेडकर की प्रतिष्ठा एक अद्वितीय विद्वान और विधिवेत्ता की थी जिसके कारण जब, 15 अगस्त, 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद, कांग्रेस के नेतृत्व वाली नई सरकार अस्तित्व मे आई तो उसने अम्बेडकर को देश का पहले कानून मंत्री के रूप में सेवा करने के लिए आमंत्रित किया, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। 29 अगस्त 1947 को, अम्बेडकर को स्वतंत्र भारत के नए संविधान की रचना कि लिए बनी के संविधान मसौदा समिति के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया। अम्बेडकर ने मसौदा तैयार करने के इस काम मे अपने सहयोगियों और समकालीन प्रेक्षकों की प्रशंसा अर्जित की। इस कार्य में अम्बेडकर का शुरुआती बौद्ध संघ रीतियों और अन्य बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन बहुत काम आया।

संघ रीति मे मतपत्र द्वारा मतदान, बहस के नियम, पूर्ववर्तिता और कार्यसूची के प्रयोग, समितियाँ और काम करने के लिए प्रस्ताव लाना शामिल है। संघ रीतियाँ स्वयं प्राचीन गणराज्यों जैसे शाक्य और लिच्छवि की शासन प्रणाली के निदर्श (मॉडल) पर आधारित थीं। अम्बेडकर ने हालांकि उनके संविधान को आकार देने के लिए पश्चिमी मॉडल इस्तेमाल किया है पर उसकी भावना भारतीय है।

अम्बेडकर द्वारा तैयार किया गया संविधान पाठ मे संवैधानिक गारंटी के साथ व्यक्तिगत नागरिकों को एक व्यापक श्रेणी की नागरिक स्वतंत्रताओं की सुरक्षा प्रदान की जिनमें, धार्मिक स्वतंत्रता, अस्पृश्यता का अंत और सभी प्रकार के भेदभावों को गैर कानूनी करार दिया गया। अम्बेडकर ने महिलाओं के लिए व्यापक आर्थिक और सामाजिक अधिकारों की वकालत की, और अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोगों के लिए सिविल सेवाओं, स्कूलों और कॉलेजों की नौकरियों मे आरक्षण प्रणाली शुरू के लिए सभा का समर्थन भी हासिल किया, भारत के विधि निर्माताओं ने इस सकारात्मक कार्यवाही के द्वारा दलित वर्गों के लिए सामाजिक और आर्थिक असमानताओं के उन्मूलन और उन्हे हर क्षेत्र मे अवसर प्रदान कराने की चेष्टा की जबकि मूल कल्पना मे पहले इस कदम को अस्थायी रूप से और आवश्यकता के आधार पर शामिल करने की बात कही गयी थी. 26 नवंबर, 1949 को संविधान सभा ने संविधान को अपना लिया। अपने काम को पूरा करने के बाद, बोलते हुए, अम्बेडकर ने कहा =

मैं महसूस करता हूं कि संविधान, साध्य (काम करने लायक) है, यह लचीला है पर साथ ही यह इतना मज़बूत भी है कि देश को शांति और युद्ध दोनों के समय जोड़ कर रख सके। वास्तव में, मैं कह सकता हूँ कि अगर कभी कुछ गलत हुआ तो इसका कारण यह नही होगा कि हमारा संविधान खराब था बल्कि इसका उपयोग करने वाला मनुष्य अधम था।

1951 मे संसद में अपने हिन्दू कोड बिल के मसौदे को रोके जाने के बाद अम्बेडकर ने मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया इस मसौदे मे उत्तराधिकार, विवाह और अर्थव्यवस्था के कानूनों में लैंगिक समानता की मांग की गयी थी। हालांकि प्रधानमंत्री नेहरू, कैबिनेट और कई अन्य कांग्रेसी नेताओं ने इसका समर्थन किया पर संसद सदस्यों की एक बड़ी संख्या इसके खिलाफ़ थी। अम्बेडकर ने 1952 में लोक सभा का चुनाव एक निर्दलीय उम्मीदवार के रूप मे लड़ा पर हार गये। मार्च 1952 मे उन्हें संसद के ऊपरी सदन यानि राज्य सभा के लिए नियुक्त किया गया और इसके बाद उनकी मृत्यु तक वो इस सदन के सदस्य रहे।

देश में अलग-अलग जाति नहीं सिर्फ इंसान रहें

भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण रखते हुए देश और समाज में दलितों का सम्मान बढ़े और उन्हें वांछित अधिकार मिल सकें- यही चाहते थे डा. अंबेदकर।

स्वतंत्रता प्राप्ति में बड़े-बड़े नेताओं की अपनी भूमिका रही है, लेकिन सामाजिक न्याय के संदर्भ में डा. भीमराव अंबेदकर का योगदान भुलाया नहीं जा सकता। डा. अंबेदकर का जीवन संघर्षों का एक सफरनामा है। इतने पढ़े-लिखे होने के बावजूद एक गरीब परिवार में जन्म लेने के कारण उन्हें अनेक मुश्किलों का सामना करना पड़ा। कांशीराम और मायावती जैसे राजनेताओं ने दलितों के आंदोलन को नई दिशा देने का ह्श्चयास किया। काफी हद तक वे कामयाब भी रहे, लेकिन अंबेदकर का दृष्टिकोण इनसे पृथक था। उन्होंने अपने विचार और कार्यशैली से किसी भी स्तर पर दलित समाज को जो दिया, वैसा योगदान राष्ट्रहित को दृष्टिगत रखते हुए कोई नहीं दे सकता। वे चाहते थे कि भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण रखते हुए देश और समाज में दलितों का सम्मान बढ़े और उन्हें वांछित अधिकार मिल सकें।

अंतत: डा. अंबेदकर का संघर्ष रंग लाया। दलित कामयाबी की राह पर अग्रसर हुआ। शिखर पर पहुंचा, लेकिन धीरे-धीरे दलित आंदोलन में भटकाव आया। वह सामाजिक परिवर्तन को ताक पर रखकर समानता, भाईचारा और दलित आंदोलन को भूल बैठा और अवसरवादी समझौते करते हुए टुकड़ों में बंटता गया। इसके बावजूद दलित स्वर मुखर एवं देश की भागीदारी में शिखर स्वर है। अभी भी दलितों में राजनीतिक इच्छाशा ित का अभाव है। अन्य वर्गों की दलितों के प्रति सहानुभूति कभी परिलक्षित नहीं हुई। आज का दलित नेतृत्व भी मनोवैज्ञानिक पीड़ा, सामाजिक शोषण, आर्थिक दुर्दशा और मानसिक उत्पीड़न का शिकार है। ऐसे में कैसे अपेक्षा करें कि दलित अपनी अस्मिता को बचाकर रख सकता है ? दलित अलग-अलग प्रतिध्रुव बना रहे हैं। दलित ही आपस में कई फाकों में विभ त हैं, योंकि आज की विषम परिस्थितियों में दलित नेतृत्व के पास न तो वैचारिक सोच है, न ही सामाजिक ढांचे को मापदंड में लाने का पैमाना जो डा. अंबेदकर की सोच को अंजाम दे सके। अंग्रेजों के शासनकाल में देश में 2000 जातियां थीं। इस कारण नेतृत्व में डा. अंबेदकर सबल थे। आज जातियां बंटकर 4000 हो गई हैं। कहने का भाव यह है कि उतने ही संवेग में दलितों को संघर्ष करना होगा, तभी इसका लाभ मिल सकेगा। इसीलिए अंबेदकर चाहते थे कि देश में जाति न रहे, इंसान रहे। फरवरी 1933 में इंग्लैंड के गार्जियन समाचार पत्र और अमरीका के न्यूयार्क टाइ स के प्रतिनिधि भारतीय नेताओं का इंटरव्यू लेने आए। गांधी, जिन्ना और डा. अंबेदकर ने उन्हें मिलने का अलग-अलग समय दिया। रात्रि नौ बजे से 11 बजे के बीच समय दिए जाने के बावजूद गांधी और जिन्ना सोए हुए मिले। दो बजे दोनों संवाददाता डा. अंबेदकर के पास पहुंचे। उन्होंने प्रश्न किया कि आप इतनी रात तक जाग रहे हैं, जबकि गांधी और जिन्ना तो हमें सोए हुए मिले। डा. अंबेदकर ने बड़े ही सहज भाव सें उत्तर दिया कि वे सोए हुए हैं, क्योंकि उनका समाज जाग रहा है और मैं इसलिए जाग रहा हूं क्योंकि मेरा समाज सोया हुआ है। वे अनभिज्ञ हैं, वे उनकी तरह जागरूक नहीं हैं। कहने का आशय है कि डा. अंबेदकर के विचारों के अनुकूल दलित नेतृत्व को नई दिशा देने वाला सही कर्णधार अभी दलितों में नहीं आ सका है। डा. अंबेदकर ने अपनी भोगी हुई पीड़ा से दलितों को दूर रखा। वे स्कूल में पढ़ नहीं सके, लेकिन दलितों को शिक्षा के अधिकार दिलाए। जो उन्होंने महसूस किया, उससे दलितों को दो-चार नहीं होने दिया लेकिन अंबेदकर को मानने वालों से कैसा व्यवहार किया जाता है, यह सर्वविदित है। डा. अंबेदकर का कहना था कि हमारा राष्ट्र हजारों जातियों में बंटा हुआ है, इसलिए हम एक राष्ट्र नहीं हो सकते। जब तक वर्णवादी व्यवस्था, जातिवाद कायम है, दलितों का उत्पीड़न एवं अत्याचार कम नहीं हो सकते। इसी मुद्दे पर उन्होंने गांधी से बड़ी मुश्किल से समझौता किया।

अंबेदकर की सोच थी कि संगठित होकर ही दलित सरकार बना सकते हैं, क्योंकि सुखभोगी सभी वर्ग अलग-अलग धर्मों में विभ त हैं। आज भी अनुसूचित वर्ग संगठित नहीं है, इसलिए तीसरी ताकत का गठन नहीं हो पा रहा है। कांशीराम के प्रयासों से दलित न केवल सत्ता में आए, बल्कि राष्ट्र की मुज्यधारा में भी शामिल हो गए, लेकिन उनके मु ित के द्वार नहीं खुले। यही कारण है कि दलित वर्ग सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में व्याप्त अंतर्विरोधों को कम नहीं कर सका और कष्ट भोगने को मजबूर है। बाबासाहब अंबेदकर ने दलितों को शिक्षा, संगठन और संघर्ष का नारा दिया। डा. अंबेदकर को कानूनमंत्री से नवाजे जाने का श्रेय केवल उनकी काबिलियत को जाता है। उन्हें जहां भी अवसर मिला वह दलित विकास की संरचना लागू करते गए। चाहे वह समय गोलमेज परिषद का हो, संविधान निर्माण की बात हो या गांधी से टकराव हो। वे जानते थे कि किसी भी पार्टी के साथ गठबंधन कर वे दलितों का विकास नहीं कर सकते। आज भी दलित निष्ठावश डा. अंबेदकर का दिली स मान करते हैं किंतु वोट दूसरी पार्टी को देते हैं। दलित इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि आज नहीं तो कल यह ब्राह्मणवादी और दलित गठबंधन सभी को दिखाई देगा। इसलिए वे न तो बसपा को वोट देते हैं, न मायावती को, वे तो बाबा साहब के अहसानों को चुकाने के लिए विवश हैं। डा. अंबेदकर द्वारा निर्मित प्रावधानिक संविधान के उपभोग करने के बाद दलितों ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा कि उनका समाज कहां है, इसलिए दलित राजनीति दिशाहीन हो गई है।

बौद्ध धर्म मे परिवर्तन

सन् 1950 के दशक में अम्बेडकर बौद्ध धर्म के प्रति आकर्षित हुए और बौद्ध भिक्षुओं व विद्वानों के एक सम्मेलन में भाग लेने के लिए श्रीलंका(तब सीलोन) गये। पुणे के पास एक नया बौद्ध विहार को समर्पित करते हुए, अम्बेडकर ने घोषणा की कि वे बौद्ध धर्म पर एक पुस्तक लिख रहे हैं, और जैसे ही यह समाप्त होगी वो औपचारिक रूप से बौद्ध धर्म अपना लेंगे।[9] 1954 में अम्बेडकर ने बर्मा का दो बार दौरा किया; दूसरी बार वो रंगून मे तीसरे विश्व बौद्ध फैलोशिप के सम्मेलन में भाग लेने के लिए गये। 1955 में उन्होने भारतीय बुद्ध महासभा या बौद्ध सोसाइटी ऑफ इंडिया की स्थापना की। उन्होंने अपने अंतिम लेख, द बुद्ध एंड हिज़ धम्म को 1956 में पूरा किया। यह उनकी मृत्यु के पश्चात प्रकाशित हुआ। 14 अक्टूबर 1956 को नागपुर में अम्बेडकर ने खुद और उनके समर्थकों के लिए एक औपचारिक सार्वजनिक समारोह का आयोजन किया. अम्बेडकर ने एक बौद्ध भिक्षु से पारंपरिक तरीके से तीन रत्न ग्रहण और पंचशील को अपनाते हुये बौद्ध धर्म ग्रहण किया। इसके बाद उन्होने एक अनुमान के अनुसार लगभग 500000 समर्थको को बौद्ध धर्म मे परिवर्तित किया।[9] नवयान लेकर अम्बेडकर और उनके समर्थकों ने हिंदू धर्म और हिंदू दर्शन की स्पष्ट निंदा की और उसे त्याग दिया। इसके बाद वे नेपाल में चौथे विश्व बौद्ध सम्मेलन मे भाग लेने के लिए काठमांडू गये। उन्होंने अपनी अंतिम पांडुलिपि बुद्ध या कार्ल मार्क्स को 2 दिसंबर 1956 को पूरा किया।

डा बी.आर. अम्बेडकर ने दीक्षा भूमि, नागपुर, भारत में ऐतिहासिक बौद्ध धर्म में परिवर्तन के अवसर पर,15 अक्टूबर 1956 को अपने अनुयायियों के लिए 22 प्रतिज्ञाएँ निर्धारित कीं.800000 लोगों का बौद्ध धर्म में रूपांतरण ऐतिहासिक था क्योंकि यह विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक रूपांतरण था.उन्होंने इन शपथों को निर्धारित किया ताकि हिंदू धर्म के बंधनों को पूरी तरह पृथक किया जा सके.ये 22 प्रतिज्ञाएँ हिंदू मान्यताओं और पद्धतियों की जड़ों पर गहरा आघात करती हैं. ये एक सेतु के रूप में बौद्ध धर्म की हिन्दू धर्म में व्याप्त भ्रम और विरोधाभासों से रक्षा करने में सहायक हो सकती हैं.इन प्रतिज्ञाओं से हिन्दू धर्म,जिसमें केवल हिंदुओं की ऊंची जातियों के संवर्धन के लिए मार्ग प्रशस्त किया गया, में व्याप्त अंधविश्वासों, व्यर्थ और अर्थहीन रस्मों, से धर्मान्तरित होते समय स्वतंत्र रहा जा सकता है.

सोने में 130 रुपये की गिरावट, चांदी 305 रुपये टूटी

नयी दिल्ली, अंतरराष्ट्रीय बाजारों में बहुमूल्य धातुओं की कीमतों में गिरावट के बीच दिल्ली सर्राफा बाजार में मंगलवार को सोना 130 रुपये की नरम हो कर 46,093 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। एचडीएफसी सिक्योरिटीज ने यह जानकारी दी। पिछले दिन भाव 46,223 पर बंद हुआ था। चांदी भी 305 रुपये की गिरावट के साथ 66,040 रुपये प्रति किलोग्राम पर आ गयी। पिछले कारोबारी सत्र में चांदी 66,345 पर बंद हुई थी। अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने का भाव गिरावट के साथ 1,726 डॉलर प्रति औंस पर था। चांदी 24.89 डॉलर प्रति औंस पर लगभग अपरिवर्तित रही। एचडीएफसी सिक्योरिटीज के वरिष्ठ विश्लेषक (जिंस) तपन पटेल ने कहा, ''न्यूयॉर्क जिंस बाजार में सोने की हाजिर दर घटकर 1,726 डॉलर प्रति औंस पर चल रही थी।''

पाइन लैब्स ने 4.5 करोड़ डॉलर में फेव का अधिग्रहण किया

नयी दिल्ली, भुगतान समाधान प्रदाता पाइन लैब्स ने उपभोक्ता वित्तीय प्रौद्योगिकी मंच फेव का 4.5 करोड़ डॉलर (339 करोड़ रुपये) में अधिग्रहण किया है। एक बयान में यह जानकारी दी गई है। इसके तहत फेव के संस्थापकों की भूमिका का विस्तार होगा और वे एशिया भर में कुल उपभोक्ता मंच की अगुवाई करेंगे। फेव दक्षिण-पूर्व एशिया और भारत में 100 नए कर्मचारियों की नियुक्ति भी कर रही है। इस सौदे के तहत निवेशकों को पूरी तरह नकद भुगतान किया जाएगा। वहीं फेव के महत्वपूर्ण कर्मचारियों को नकद तथा पाइन लैब्स के शेयर दोनों मिलेंगे। फेव ने 2016 से दक्षिण-पूर्व एशिया में 60 लाख उपभोक्ताओं को 40,000 रिटेलरों पर 40 करोड़ डॉलर की बचत में मदद की है। यह मलेशिया, सिंगापुर और इंडोनेशिया में 35 शहरों में परिचालन करती है।

अडाणी ग्रीन एनर्जी की इकाई ने चित्रकूट में 50 मेगावाट क्षमता का सौर संयंत्र चालू किया

नयी दिल्ली, अडाणी ग्रीन एनर्जी लि. की अनुषंगी इकाई अडाणी सोलर एनर्जी चित्रकूट वन लि. ने उत्तर प्रदेश के चित्रकूट में 50 मेगावाट क्षमता का सौर बिजली संयंत्र चालू किया है। अडाणी ग्रीन एनर्जी लि. (एईजीएल) ने मंगलवार को शेयर बाजार को दी सूचना में कहा कि संयंत्र का उत्तर प्रदेश पावर कॉरपोरेशन लि. (यूपीपीसीएल) के साथ 25 साल के लिये बिजली खरीद समझौता है। यह समझौता 3.07 रुपये प्रति यूनिट की दर पर किया गया है। इसके साथ एजीईएल की परिचालन वाली कुल नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता 3,520 मेगावाट हो गयी है। कंपनी ने 2025 तक 25,000 मेगावाट उत्पादन क्षमता का लक्ष्य रखा है। नये संयंत्र के चालू होने से कंपनी की सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता 3,000 मेगावाट से अधिक हो गयी है। कंपनी की कुल नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता 15,240 मेगावाट है। इसमें से 11,720 मेगावाट क्रियान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं।

देसी शॉर्ट वीडियो एप मित्रों के हुए 1 साल पूरे, 5 करोड़ नए यूजर्स को जोड़ने का लक्ष्य

नई दिल्ली। स्वदेशी शॉर्ट वीडियो ऐप मित्रों टीवी ने अगले छह महीनों के दौरान अपने उपयोगकर्ताओं की संख्या को दोगुना कर 10 करोड़ करने का लक्ष्य तय किया है। कंपनी के परिचालन को 1 साल पूरे हुए हैं और पिछले साल सरकार द्वारा टिकटॉक सहित कई चीनी ऐप पर प्रतिबंध लगाने के बाद उसके उपयोगकर्ताओं की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी हुई। मित्रों टीवी के सह-संस्थापक और सीईओ शिवांक अग्रवाल ने कहा कि 'पहले साल की यात्रा बेहद रोमांचक यात्रा रही है। हमारे ऐप को सहज रूप से पांच करोड़ से अधिक बार डाउनलोड किया है। पिछले साल हमने दो सदस्यीय दल के रूप में काम शुरू किया था, अब हमारे पास 55 से अधिक सदस्य हैं।'' उन्होंने कहा कि कंपनी का लक्ष्य अगले 6 महीनों में प्लेटफॉर्म पर उपयोगकर्ताओं की संख्या को बढ़ाकर 10 करोड़ से अधिक करना है। लगभग 22 फीसदी उपयोगकर्ता ऐसे हैं, जिन्होंने प्लेटफॉर्म पर दो से अधिक वीडियो पोस्ट किए हैं।

कोविड-19 का विनिर्माताओं को उत्पादन बढ़ाने के लिए सहायता दे सरकार: फिक्की

नयी दिल्ली,

कोविड-19 वैक्सीन विनिर्माताओं को उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन दिये जाने की आवश्यकता है। उद्योग मंडल फिक्की ने मंगलवार को यह राय रखी। फिक्की ने कहा है कि सरकार को ऐसे उन टीका विनिर्माताओं को तत्काल एवं पर्याप्त अनुदान और सब्सिडी का प्रावधान करने की जरूरत है, जो देश में पहले से ही कोविड टीके को विकसित कर रहे हैं या बना रहे हैं। फिक्की ने एक बयान में कहा, ''टीका विनिर्माताओं को उत्पादन के लिए अपनी क्षमताओं को बढ़ाने के लिए उन्हें प्रोत्साहित की तत्काल एवं महत्वपूर्ण आवश्यकता है। चूंकि सरकार द्वारा टीकों की लागत पर मूल्य की एक सीमा लगा दी गई है, इसलिए टीका निर्माताओं को उत्पादन बढ़ाने के लिए उचित प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है।'' उद्योग संगठन ने टीके के निर्माताओं को समर्थन देने के लिए पीएलआई के तरह की योजना के तहत वित्तपोषण करने की सिफारिश की है। आपातकालीन उपयोग के लिए रुस में विकसित कोविड19 वैक्सीन स्पुतनिक को मंजूरी दिये जाने का स्वागत करते हुए, उद्योग निकाय ने कहा कि बाकी जगहों में जो टीका सिद्ध एवं सफल रहा है उसे भारत में जल्द से जल्द लाने के प्रयासों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि आपूर्ति श्रृंखला बरकरार रहे। फिक्की ने कहा, ''देश में इस तरह के टीकों के निर्माण के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय टीकों के आयात और बिक्री के बारे में विचार किया जाना चाहिए। कई राज्य पिछले कुछ दिनों से कोविड टीकों की कमी का सामना कर रहे हैं, जिनमें पंजाब, राजस्थान, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, झारखंड और बिहार जैसे स्थान शामिल हैं। फिक्की ने कहा, ''अगस्त 2021 तक भारत प्राथमिकता वाले 30 करोड़ की आबादी का टीकाकरण करने का इरादा रखता है। देश में 10.85 करोड़ लोगों को कोविड टीकाकरण की पहली खुराक लगने और प्रति दिन 30 लाख टीकाकरण करने के मौजूदा दर को ध्यान में रखते हुए हमें प्राथमिकता समूह वाले लोगों को टीके की दो खुराक देने के लिए 38 करोड़ से अधिक टीके के खुराक की आवश्यकता होगी।

भारतीय अर्थव्यवस्था 2021 में दर्ज करेगी12 फीसद की वृद्धि

नई दिल्ली । मूडीज ने कहा कि कोविड-19 संक्रमण की दूसरी लहर से भारत के वृद्धि पूर्वानुमान के लिए जोखिम पैदा हुआ है, लेकिन फिर भी पिछले साल के निम्न स्तर को देखते हुए जीडीपी वृद्धि दर दोहरे अंक में रह सकती है। मूडीज ने कहा कि वायरस का प्रकोप बढ़ने से आर्थिक गतिविधियों पर असर पड़ेगा। मूडीज ने उम्मीद जताई कि संक्रमण की मौजूदा लहर से निपटने के लिए एक देशव्यापी लॉकडाउन के विपरीत छोटे-छोटे कटेंटमेंट जोन पर जोर दिया जाएगा, जिससे 2020 के मुकाबले आर्थिक गतिविधियां कम प्रभावित होंगी। मूडीज इन्वेस्टर्स सर्विस ने कहा, ''भारत में कोरोना वायरस की बहुत कम मृत्यु दर (12 अप्रैल तक 1,70,179 मौतें दर्ज की गई हैं) और अपेक्षाकृत युवा आबादी भी जोखिम को कम करने में मदद करती है। 2020 में आर्थिक गतिविधियों के निचले स्तर को देखते हुए जीडीपी के अभी भी दो अंकों में बढ़ने की संभावना है।'' मूडीज ने अपनी टिप्पणी में कहा कि संक्रमण की दूसरी लहर से आर्थिक सुधार को लेकर कुछ जोखिम पैदा हुए हैं, लेकिन लक्षित रोकथाम के उपायों और तेजी से टीकाकरण से नकारात्मक असर कम होगा।

इन डायरेक्ट टैक्स कलेक्शन में इस साल आया 12% का उछाल, 10.71 लाख करोड़ रुपए का आंकड़ा छुआ

बिजनेस डेस्क: वित्त मंत्रालय ने मंगलवार को कहा कि वित्त वर्ष 2020-21 में शुद्ध अप्रत्यक्ष कर संग्रह इससे पिछले वित्त वर्ष की तुलना में 12.3 प्रतिशत बढ़कर 10.71 लाख करोड़ रुपए हो गया, जो संशोधित अनुमान से अधिक है। वित्त वर्ष 2019-20 में अप्रत्यक्ष कर संग्रह 9.54 लाख करोड़ रुपए था, जिसमें जीएसटी, सीमा शुल्क और उत्पाद शुल्क शामिल हैं। वित्त वर्ष 2020-21 के संशोधित अनुमान (आरई) में 9.89 लाख करोड़ रुपए के संग्रह का लक्ष्य तय किया गया था। वर्ष 2020-21 में केंद्र का शुद्ध जीएसटी संग्रह 5.48 लाख करोड़ रुपए रहा, जबकि सीमा शुल्क से 1.32 लाख करोड़ रुपए मिले। मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि केंद्रीय उत्पाद शुल्क और सेवा कर (बकाया) के मद में शुद्ध कर संग्रह 3.91 लाख करोड़ रुपए रहा, जो इससे पिछले वित्त वर्ष के दौरान 2.45 लाख करोड़ रुपए था। इसमें 59.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। बयान में कहा गया, ''वित्त वर्ष 2020-21 के लिए अप्रत्यक्ष कर संग्रह (जीएसटी और गैर-जीएसटी) के अस्थायी आंकड़े बताते हैं कि वित्त वर्ष 2019-20 के 9.54 लाख करोड़ रुपए की तुलना में शुद्ध राजस्व संग्रह 10.71 लाख करोड़ रुपए है, जो 12.3 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है।'' शुद्ध अप्रत्यक्ष कर संग्रह के आंकड़ों से पता चलता है कि समीक्षाधीन अवधि में कर संग्रह संशोधित अनुमान के मुकाबले 108.2 प्रतिशत रहा। मंत्रालय ने कहा कि वास्तविक जीएसटी संग्रह कुल लक्षित संग्रह (आरई के अनुसार) का 106 प्रतिशत है, हालांकि ये इससे पिछले वित्त वर्ष (2019-20) की तुलना में आठ प्रतिशत कम हैं।

बिटकॉइन को फिर लगे पंख, रिकॉर्ड उच्चतम स्तर पर पहुंची एक सिक्के की कीमत

बिजनेस डेस्क:

क्रिप्टोकरेंसी बिटकॉइन मंगलवार को नए रिकॉर्ड उच्चतम स्तर पर पहुंच गई है। बिटकॉइन की कीमत मंगलवार को 62,575 डॉलर पर पहुंच गई। इसके साथ ही साल 2021 में बिटकॉइन में आ रही तेजी नई ऊंचाइयों पर पहुंच गई है। पिछले कई दिनों से बिटक्वॉइन में बड़ा उछाल देखने को मिल रहा था। एक साल पहले एक बिटक्वॉइन की कीमत महज 5000 डॉलर थी तो वहीं अब यह बढ़कर 62,000 डॉलर के पार पहुंच गई है। इस समय दुनियाभर में बिटकॉइन का क्रेज तेजी से बढ़ रहा है। बड़े निवेशक तुरंत मुनाफे के लिए इसका रुख कर रहे हैं, जिसके चलते इसकी कीमत में तेजी से उछाल आ रहा है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने 1.9 ट्रिलियन डॉलर की आर्थिक मदद के ऐलान के बाद से ग्लोबल मार्केट में काफी उछाल देखने को मिला था। इसका असर बिटक्वॉइन पर भी दिखाई दिया है। वहीं, मार्केट एक्सपर्ट का मानना है कि यह तेजी कुछ समय के लिए है। बता दें बिटक्वॉइन में काफी जोखिम रहता है। बता दें बीच में क्रिप्टोकरेंसी की कीमतों में अचानक गिरावट भी देखने को मिली थी।

तेजी का क्या है कारण?

आपको बता दें क्रिप्टोकरेंसी में कई बड़ी कंपनियों और दिग्गज निवेशकों ने निवेश किया है, जिसकी वजह से इसमें तेजी देखने को मिल रही है। बीएनवाई मेलन, मास्टरकार्ड और टेस्ला जैसी कई ऐसी बड़ी कंपनियां हैं, जिन्होंने या तो क्रिप्टोकरेंसी को अपनाया है या उसमें निवेश किया है। इसके अलावा हाल ही में एलन मस्क की दिग्गज इलेक्ट्रिक कार कंपनी टेस्ला ने बिटकॉइन में 1.5 बिलियन डॉलर का निवेश किया था। टेस्ला के इस निवेश के बाद से बिटकॉइन में बंपर तेजी देखने को मिली है।

जानिए कैसे होती है बिटकॉइन में ट्रेडिंग?

बिटकॉइन ट्रेडिंग डिजिटल वॉलेट के जरिए होती है। बिटकॉइन की कीमत दुनियाभर में एक समय पर समान रहती है। इसलिए इसकी ट्रेडिंग मशहूर हो गई। दुनियाभर की गतिविधियों के हिसाब से बिटकॉइन की कीमत घटती बढ़ती रहती है। इसे कोई देश निर्धारित नहीं करता बल्कि डिजिटली कंट्रोल होने वाली करंसी है। बिटकॉइन ट्रेडिंग का कोई निर्धारित समय नहीं होता है। इसकी कीमतों में उतार-चढ़ाव भी बहुत तेजी से होता है।

Air India को बेचने के लिए सरकार ने उठाया ये कदम, सालों से घाटे में चल रही एयरलाइन कंपनी

बिजनेस डेस्क:

सरकार ने राष्ट्रीय विमानन कंपनी एयर इंडिया की बिक्री के लिए वित्तीय बोलियों को आमंत्रित करने की प्रक्रिया शुरू की है और सूत्रों के मुताबिक इस सौदे के सितंबर तक पूरा होने की उम्मीद है। पिछले साल दिसंबर में घाटे में चल रही एयर इंडिया को खरीदने के लिए लगाई गईं शुरुआती बोलियों में टाटा समूह की बोली भी शामिल है। सूत्रों ने कहा कि प्रारंभिक बोलियों का विश्लेषण करने के बाद योग्य बोलीदाताओं को एयर इंडिया के वर्चुअल डेटा रूम (वीडीआर) तक पहुंच दी गई, जिसके बाद निवेशकों के सवालों के जवाब दिए जाएंगे। सूत्रों ने बताया कि यह सौदा अब वित्तीय बोलियों के चरण में चला गया है और इसके सितंबर तक पूरा होने की उम्मीद है। सरकार एयर इंडिया में अपनी पूरी 100 प्रतिशत हिस्सेदारी बेच रही है। यह विमानन कंपनी 2007 में घरेलू परिचालक इंडियन एयरलाइंस के साथ विलय के बाद से घाटे में है। कोविड-19 महामारी के कारण हिस्सेदारी बिक्री प्रक्रिया में देरी हुई और सरकार ने प्रारंभिक बोलियां प्रस्तुत करने की समय सीमा को पांच बार बढ़ाया। इस विमानन कंपनी के सफल बोलीदाता को घरेलू हवाई अड्डों पर 4,400 घरेलू और 1,800 अंतरराष्ट्रीय लैंडिंग और पार्किंग स्लॉट के साथ ही विदेशों में 900 स्लॉट पर नियंत्रण मिलेगा। इस नीलामी में सस्ती सेवाएं देने वाली इसकी अनुषंगी एयर इंडिया एक्सप्रेस और माल एवं यात्री सामान चढ़ाने उतारने वाली साझा इकाई एआईएसएटीएस की 50 प्रतिशत हिस्सेदारी भी शामिल है।

कंपनी पर है 60,000 करोड़ रुपए का बकाया कर्ज

कंपनी पर कुल संचित कर 60,000 करोड़ रुपए का बोझ पड़ जाने से इसकी हालत पतली हो गयी है। नागर विमानन मंत्री हरदीप पुरी ने पिछले महीने कहा था कि एयर इंडिया का निजीकरण करने या इसे बंद करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है।

जगुआर लैंड रोवर की खुदरा बिक्री 12 प्रतिशत बढ़कर 1.23 लाख इकाई हुई

नयी दिल्ली,

टाटा मोटर्स के स्वामित्व वाली जगुआर लैंड रोवर (जेएलआर) ने मंगलवार को कहा कि 2020-21 की चौथी तिमाही में उसकी खुदरा बिक्री 12.4 प्रतिशत बढ़कर 1,23,483 इकाई हो गई। जेएलआर ने कहा कि कोविड-19 के प्रकोप से उबरते हुए सुधार जारी है और बीते वित्त वर्ष की चौथी तिमाही में चीन में उसकी बिक्री एक साल पहले की तुलना में 127 प्रतिशत बढ़ी। जेएलआर ने एक बयान में कहा कि उत्तरी अमेरिका में बिक्री एक साल पहले की समान अवधि के मुकाबले 10.4 प्रतिशत अधिक रही, जबकि ब्रिटेन और यूरोपीय संघ सहित अन्य बाजारों में बिक्री कोविड-पूर्व स्तर के मुकाबले कम रही। जेएलआर ने कहा कि पूरे वित्त वर्ष 2020-21 में उसकी वैश्विक बिक्री 4,39,588 इकाई रही, जो इससे पिछले साल के मुकाबले 13.6 प्रतिशत कम है।

सेंसेक्स 660 अंक मजबूत; वित्तीय, वाहन कंपनियों के शेयर चमके

मुंबई,

वैश्विक स्तर पर मजबूत रुख के बीच शेयर बाजार में मंगलवार को तेजी लौट आयी और सेंसेक्स 660 अंक उछलकर बंद हुआ। वाहन और वित्तीय कंपनियों के शेयरों की अगुवाई में यह तेजी आयी। शेयर बाजार में सोमवार को बड़ी गिरावट आयी थी। सरकार के लोकों की उपलब्धता बढ़ाने और देश में टीकाकरण की गति तेज करने के इरादे से अन्य देशों में विकसित वैक्सीन को आपात इस्तेमाल के लिए मंजूरी देने की प्रक्रिया तेज करने के निर्णय से निवेशकों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। औषधि नियामक ने रूस के कोविड-19 रोधी टीके 'स्पूतनिक वी' के सीमित आपात इस्तेमाल को सोमवार को कुछ शर्तों के साथ मंजूरी दे दी। इससे देश में तीसरे कोविड रोधी टीके का रास्ता साफ हो गया है। कारोबारियों के अनुसार हालांकि कोविड-19 की स्थिति चिंताजनक बनी हुई है और निकट भविष्य में बाजार की गति को निर्धारित करेगी। तीस शेयरों पर आधारित सेंसेक्स में शुरूआत बढ़त के साथ हुई और दोपहर कारोबार में इसमें गति आयी। अंत में यह 660.68 अंक यानी 1.38 प्रतिशत की बढ़त के साथ 48,544.06 अंक पर बंद हुआ। इसी प्रकार, नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी 194 अंक यानी 1.36 प्रतिशत मजबूत होकर 14,504.80 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स के शेयरों में सर्वाधिक लाभ में महिंद्रा एंड महिंद्रा रहा। इसमें 8.02 प्रतिशत की तेजी आयी।

इसके अलावा बजाज फिनसर्व, बजाज फाइनेंस, मारुति, एक्सिस बैंक, ओएनजीसी और एचडीएफसी बैंक में भी तेजी रही। दूसरी तरफ, सॉफ्टवेयर सेवा प्रदाता कंपनी टीसीएस के शेयर में सर्वाधिक 4.21 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गयी। कंपनी के वित्तीय परिणाम की घोषणा के एक दिन बाद में यह गिरावट आयी। देश की सबसे बड़ी सॉफ्टवेयर निर्यातक कंपनी का एकीकृत शुद्ध लाभ मार्च तिमाही में 14.9 प्रतिशत उछलकर 9,246 करोड़ रुपये रहा। हालांकि पूरे वित्त वर्ष 2020-21 में कंपनी का शुद्ध लाभ मामूली बढ़त के साथ 32,430 करोड़ रुपये रहा। इसके अलावा डा. डा. रेड्डीज, टेक महिंद्रा, इन्फोसिस और नेस्ले इंडिया में भी 4.18 प्रतिशत तक की गिरावट दर्ज की गयी।

सीसीआई ने उच्च न्यायालय को बताया, व्हाट्सएप की नयी निजता नीति की जांच का आदेश दिया है

नयी दिल्ली,

भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (सीसीआई) ने अदालत में कहा कि व्हॉट्सएप की नयी निजता-नीति से इस नेटवर्क-मंच का उपयोग करने वालों के डाटा (नजी जानकारियों) का अत्यधिक संग्रहण होगा और यह अधिक से अधिक प्रयोगकर्ताओं को जोड़ने के उद्येश्य से लक्षित विज्ञापन करने के लिए उपभोक्ताओं का 'पीछा' करने जैसा होगा। यह एक तरह से बाजार में अपने दबदबे की स्थिति का दुरुपयोग करना है। दिल्ली उच्च न्यायालय में इस मामले में मंगलवार को प्रतिस्पर्धा आयोग के वकली अमन लेखी ने मंगलवार को न्यायमूर्ति नवीन चावला के समक्ष यह बात रखी। सीसीआई ने संदेश भेजने के मंच व्हॉट्सएप की नयी निजता नीति की जांच आदेश दिया है। अपनी जांच को उचित ठहराते हुए सीसीआई ने अदालत के समक्ष अपना पक्ष रखा। लेखी ने कहा कि सीसीआई इस मामले में प्रतिस्पर्धा के पहलुओं पर गौर कर रहा है। प्रतिस्पर्धा नियामक व्यक्तिगत निजता के उल्लंघन के मामले को नहीं देख रहा है। निजता के अधिकार से जुड़ा मामला उच्चतम न्यायालय में है। सीसीआई के अधिवक्ता ने कहा कि इस मामले में अधिकार क्षेत्र की गलती का सवाल नहीं है। उन्होंने कहा कि व्हॉट्सएप और फेसबुक ने सीसीआई के फैसले को चुनौती देने वाली जो याचिकाएं दी हैं वे 'अनुचित और मिथ्या अवधारणा पर आधारित हैं।' इस मामले में व्हॉट्सएप और फेसबुक की पैरवी वरिष्ठ अधिवक्ता हरीश साल्वे और मुकुल रोहतगी कर रहे हैं। इन कंपनियों ने सीसीआई के 24 मार्च के नयी निजता नीति की जांच के आदेश को चुनौती दी है। उच्च न्यायालय ने इस मामले में अपना आदेश सुरक्षित रखा है। लेखी ने अदालत को बताया कि व्हॉट्सएप द्वारा डाटा का संग्रहण और उसके फेसबुक से साझा करना प्रतिस्पर्धा रोधी है या नहीं, यह सिर्फ जांच के बाद ही तय हो सकेगा।

हायर इंडिया ने सेहतमंद हवा के लिए यूवी क्लीन प्रो एयर कंडीशनर प्रस्तुत किया

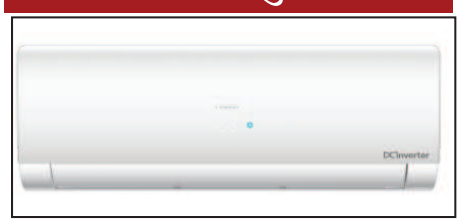

होम अप्लायंसेस एवं कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स में ग्लोबल लीडर एवं लगातार 12 सालों तक बड़े होम अप्लायंसेस में दुनिया के नं. 1 ब्रांड, हायर ने यूवीक्लीन प्रो के लॉन्च के साथ गर्मियों के मौसम में अपनी एसी श्रृंखला को मजबूत किया है। ये एयर कंडीशनर उपभोक्ताओं को बिजली की बचत सुनिश्चित करते हुए स्वच्छ व ताजा हवा प्रदान करने की बढ़ती जरूरत को ध्यान में रखकर डिज़ाईन किए गए हैं। इसका नया वैरिएंट, एचएसयू18एफ-यूवीएसडब्लू4बी (आईएनवी) 1.5 टन एवं 4-स्टार रेटिंग में उपलब्ध होगा।

नए एसी के लॉन्च के बारे में श्री एरिक ब्रैगेंज़ा, प्रेसिडेंट, हायर अप्लायंसेस इंडिया ने कहा, ''हायर में हम अभिनव टेक्नॉलॉजीज़ वाले उत्पाद डिज़ाईन करने में यकीन रखते हैं, जो उपभोक्ताओं के जीवन को ज्यादा सुविधाजनक एवं आसान बनाएं। हमारे नए यूवी क्लीन प्रो एयर कंडीशनर भारतीयों की आज की सबसे बड़ी समस्या - हवा के प्रदूषण का समाधान लेकर आए हैं, जो घर के अंदर एवं बाहर, दोनों जगह मौजूद है। इस नए स्मार्ट एसी के लॉन्च के साथ, हम उपभोक्ताओं को सांस लेने के लिए स्वच्छ हवा दे रहे हैं। वायरस-फ्री हवा प्रदान करने के अलावा, हमारी एसी श्रृंखला में ये नए उत्पाद उपभोक्ताओं को ऑप्टिमाईज़्ड स्मार्ट क्षमताओं एवं कनेक्टिविटी द्वारा 60 डिग्री सेल्सियस की भीषण गर्मी में भी राहत देंगे। हम व्हाईट गूड्स स्पेस में स्मार्ट टेक्नॉलॉजीज़ के नए युग की शुरुआत कर रहे हैं और हमारे यूवी क्लीन प्रो एसी इसमें मदद करेंगे।''

प्लेटिनम डेज़ ऑफ लव आपसे #CommitToLove का आग्रह करता है

निरंतर बदलते समय में यदि युगलों के लिए कोई चीज स्थिर रही है, तो वह है, उनके बीच का प्रेम। वो दोनों एक दूसरे की शक्ति एवं सुकून का स्रोत बने रहे। यदि कोई समस्या आई भी, तो अप्रत्याशित परिस्थितियों ने उन्हें अहसास करा दिया कि उनके बीच के प्रेम को मजबूत करना और भी ज्यादा जरूरी है और एक दूसरे के प्रति समर्पित भाव में अगला कदम बढ़ाने की इच्छा से उन्हें ओतप्रोत कर दिया। इस जुझारू भावना का गुणगान करते हुए प्लेटिनम डेज़ ऑफ लव अपने रुब्बउउपजज्वस्वअम अभियान के साथ उन्हें एक दूसरे के प्रति समर्पित होने के दिन, यानि अपनी इंगेज़मेंट के दिन इस दुर्लभ प्यार को चिन्हित करने का आग्रह करता है।

महामारी के बीच इंगेज़मेंट के दौरान बाहर निकलने के लिए बिल्कुल नए नियम स्थापित रहे। युगलों के बीच भावनाओं की शक्ति, उनके अहसास में प्रतिबद्धता, इस अवसर एवं इसे याद रखने के तरीकों के मायने अन्य चीजों के मुकाबले काफी महत्वपूर्ण हो गए। इंगेज़मेंट युगल के मिलन में निश्चितता के पहले पड़ावों में से एक है, जबकि महामारी ने युगलों को इस बात का पुन: आंकलन करने के लिए मजबूर कर दिया कि वो इस अवसर को कैसे मनाते हैं। सच्चाई यह है कि लागू की गई अंतरंगता ने इंगेज़मेंट्स को और ज्यादा ईमानदार व सार्थक बना दिया। संबंधों की इस समय से बड़ी परीक्षा और कोई नहीं हो सकती और इस सच्चाई को उन्हें भलीभांति जानकारी है। उन्हें जीवन दुर्लभ मूल्यों व कार्यों के साथ जीना होगा और उन्हें अनेक विशाल एवं क्षीण रोमांटिक इशारों से ज्यादा प्राथमिकता देनी होगी।

खेल

डब्ल्यूएफआई ने आईएसडब्ल्यूएआई को दी चुनौती, खेल मंत्रालय को लिखा पत्र

नई दिल्ली। भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) ने राष्ट्रीय खेल महासंघ (एनएफएस) के तौर पर 'भारतीय शैली की भारतीय कुश्ती संघ (आईएसडब्ल्यूएआई)' को मान्यता देने के फैसले को चुनौती देते हुए खेल मंत्रालय को लिखा है कि यह खेल संहिता का उल्लंघन है। खेल मंत्रालय ने पिछले महीने मिट्टी पर आयोजित होने वाले इस खेल की पारंपरिक शैली (दंगल) के मामलों के संचालन के लिए आईएसडब्ल्यूएआई को राष्ट्रीय महासंघ के रूप में मान्यता दी थी। डब्ल्यूएफआई ने तर्क दिया कि आईएसडब्ल्यूएआई खेल संहिता 2011 में निर्धारित मानदंडों को पूरा नहीं करता है और देश में एक खेल के प्रबंधन करने के लिए दो संघ नहीं हो सकते हैंइस मामले की जानकारी रखने वाले डब्ल्यूएफआई के एक सूत्र ने कहा, '' हम समझ नहीं पा रहे है कि मंत्रालय ने किस आधार पर इस संघ को मान्यता दी है। हमने इस बारे में 23 मार्च को मंत्रालय को लिखा था। खेल संहिता के मुताबिक एक खेल के लिए दो संघ नहीं हो सकते है।'' अपने पत्र में डब्ल्यूएफआई ने पूछा है कि मूक-बधिर पहलवानों के लिए संघ के मामले की तरह इस बार उसकी राय क्यों नहीं मांगी गई। हाल ही में मूक-बधिर पहलवानों के खेल के प्रबंधन के लिए एक संघ ने मान्यता मांगी तो मंत्रालय ने हमारी राय मांगी थी। हमने इस पर आपत्ति जताई थी कि चूंकि इस खेल के लिए हम एकमात्र निकाय हैं। मंत्रालय ने इस बार हमसे सलाह क्यों नहीं ली?'' डब्ल्यूएफआई ने पत्र में कहा है कि खेल संहिता में स्पष्ट रूप से इस बात का उल्लेख है कि कि एनएसएफ के रूप में मान्यता प्राप्त करने वाली संस्था को कानूनी विवाद में नहीं फंसा होना चाहिये, लेकिन डब्ल्यूएफआई और आईएसडब्ल्यूएआई से जुड़ा मामला 2018 से चल रहा है।

बैडमिंटन : इंडिया ओपन 11 मई से, दर्शकों के बिना होगा आयोजन

नई दिल्ली।

योनेक्स सनराइज इंडिया ओपन बैडमिंटन टूर्नामेंट का आयोजन 11 से 16 मई तक यहां के. डी. जाधव इंडोर हॉल में दर्शकों के बिना आयोजित किया जाएगा। यह टूर्नामेंट ओलंपिक क्वालीफायर इवेंट है जिसमें 114 पुरुष और 114 महिला सहित कुल 33 देशों के 228 खिलाड़ी हिस्सा लेंगे। इस साल होने वाले टोक्यो ओलंपिक को देखते हुए यह उन चुनिंदा टूर्नामेंट में से एक है जो ओलंपिक का क्वालीफाईंग इवेंट है। हालांकि देश में बढ़ते कोरोना वायरस के मामले को देखते हुए यह टूर्नामेंट बायो बबल प्रोटोकॉल के तहत दर्शकों के बिना आयोजित किया जाएगा। दक्षिण अफ्रीका, ब्राजील, मध्य पूर्व और ब्रिटेन सहित यूरोपियन देशों से आने वाले खिलाड़ियों को तीन मई को यहां पहुंचना होगा और सात दिन क्वारेंटीन में रहना पड़ेगा जबकि अन्य देशों के खिलाड़ियों को चार दिन का क्वारेंटीन पीरियड करना पड़ेगा। दिल्ली सरकार तीन, छह, नौ और 14 मई को आरटी पीसीआर टेस्ट कराएगी। भारतीय बैडमिंटन संघ (बाई) के महासचिव अजय सिंघानिया ने कहा, हमें खुशी है कि अंततः बैडमिंटन की शुरीआत हो रही है और हम दुनिया के शीर्ष बैडमिंटन खिलाड़ियों की मेजबानी करेंगे लेकिन हाल में कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए हमें ध्यान देने की जरूरत है। खिलाड़ियों की सुरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। इस टूर्नामेंट में भारत 27 महिला और 21 पुरुषों सहित कुल 48 खिलाड़ियों के साथ सबसे बड़ा दल उतारेगा। इंडिया ओपन में तीन बार की विश्व चैंपियन कैरोलिना मारिन, भारत की पीवी सिंद्धू और पूर्व नंबर एक सायना नेहवाल महिला एकल वर्ग में चुनौती पेश करेंगी। विश्व के नंबर-

1 जापान के केंतो मोमोता, गत विजेता डेनमार्क के विक्टर एक्सेलसन, ऑल इंग्लैंड चैंपियन मलेशिया के जी जिया ली, पूर्व नंबर एक भारत के श्रीकांत किदांबी, बी. साई प्रणीत, एचएस. प्रनय और परूपल्ली कश्यप पुरुष एकल वर्ग में मुकाबला करेंगे। भारतीय पुरुष युगल जोड़ी की चुनौती चिराग शेट्टी और सात्विकसाईराज रैंकिरेड्डी संभालेंगे जबकि महिला युगल वर्ग का दारोमदार अश्विनी पोनप्पा और एन. सिक्की रेड्डी पर होगा।

संक्षिप्त समाचार

ओलंपिक मशाल रिले में भाग लेने वाली दुनिया की सबसे वृद्ध महिला बनीं कगावा

टोक्यो। 109 वर्ष की शिगेको कगावा नारा प्रायद्वीप में टोक्यो ओलंपिक मशाल रिले में भाग लेने वाली दुनिया की सबसे उम्रदराज महिला बन गई हैं। कगावा का जन्म 1911 में हुआ था और उन्होंने ब्राजील की एडा मेंजेस का रिकॉर्ड तोड़ा जिन्होंने 2016 में 107 वर्ष की उम्र में रियो ओलंपिक मशाल रिले में हिस्सा लिया था। कगावा दूसरी वृद्ध हैं जिन्होंने इस साल 25 मार्च से शुरू हुए मशाल रिले में हिस्सा लिया है। उनसे पहले 104 वर्षीय शितसुई हाकोएशी ने 28 मार्च को नासुकारासुयामा में इस इवेंट में हिस्सा लिया था। इस बीच, विश्व रिकॉर्ड अगले महीने टूटना की संभावना है जब दुनिया के सबसे उम्रदराज कैन तनाका ओलंपिक मशाल पकड़ेंगी। तनाका 117 वर्ष की हैं और उनका नाम गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड में दुनिया की सबसे उम्रदराज के रूप में दर्ज है।

कप्तानों का अनकैप्ड भारतीयों पर भरोसा करना एक अच्छा चलन : पटेल

चेन्नई। रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (आरसीबी) के तेज गेंदबाज हर्षल पटेल, जिन्होंने मुंबई इंडियंस के खिलाफ सीजन के पहले ही मैच में 27 रन देकर पांच विकेट लिए थे, ने मंगलवार को कहा कि वह इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की टीमों के कप्तानों के बीच बढ़ता यह चलन देखकर खुश हैं कि अहम मुकाम पर गेंदबाजी के लिए वे वे अनकैप्ड भारतीय खिलाड़ियों पर भरोसा कर रहे हैं। पटेल को आरसीबी के कप्तान विराट कोहली ने डेथ ओवर गेंदबाज के रूप में रखा है। 2012 से आईपीएल खेल रहे पटेल ने मंगलवार को मीडिया से बातचीत में कहा, मैं एक ऐसा गेंदबाज बनना चाहता हूं जो अपने पक्ष की जिम्मेदारी लेता हो। एक बोझ होने के बजाय, मैं इसे एक विशेषाधिकार मानता हूं। पटेल ने कहा, यह अच्छा है कि कोहली ने मेरे लिए भूमिका को स्पष्ट कर दिया है क्योंकि आपकी भूमिका में स्पष्टता हमेशा अच्छी रहती है। किसी भी खेल की तैयारी करते समय यह मानसिक और कौशल-वार मदद करता है। यह एक अच्छा चलन है कप्तान इस बात का एहसास कर रहे हैं कि अनकैप्ड भारतीय गेंदबाज भी विकेट और जिम्मेदारी ले सकते हैं। पटेल ने अब तक 49 आईपीएल मैच खेले हैं और इस दौरान 51 विकेट लिए हैं और उनका इकॉनमी रेट 8.69 रन प्रति ओवर है। गुजरात में पैदा हुए पटेल ने हरियाणा के लिए खेलना शुरू कर दिया क्योंकि गुजरात में उन्हें मौका नहीं मिल रहा था। 2018 के बाद पटेल ने अपनी बैटिंग भी काम करना शुरू किया। पटेल ने कहा, 2018 तक, लोगों ने मुझमें बहुत दिलचस्पी नहीं ली क्योंकि उन्होंने मुझे एक गेंदबाज के रूप में देखा था। मैंने इसे अपमान के रूप में लिया और अपनी बल्लेबाजी पर भी काम करना शुरू कर दिया। मैं कोई ऐसा व्यक्ति नहीं हूं जो तकनीकी रूप से अच्छा हो लेकिन मैं स्कोर कर सकता हूं।

जीत की लय बनाए रखने उतरेगी RCB, सनराइजर्स की नजरें पहली जीत पर

चेन्नई ।

जीत के साथ आगाज करने वाली विराट कोहली की रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर का इरादा इंडियन प्रीमियर लीग में बुधवार को सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ इस लय को कायम रखने का होगा। आरसीबी ने 5 बार की गत चैम्पियन मुंबई इंडियंस को हराकर अपने अभियान का आगाज किया। वहीं डेविड वार्नर की कप्तानी वाली सनराइजर्स को पहले मैच में कोलकाता नाइट राइडर्स ने मात दी। पहले मैच में शानदार प्रदर्शन के बाद आरसीबी की बल्लेबाजी प्रतिभाशाली देवदत्त पडीक्कल की वापसी से और मजबूत होगी। पडीक्कल कोरोना संक्रमण से उबर चुके हैं और अब खेलने के लिए पूरी तरह से फिट है।

वह 22 मार्च को कोरोना संक्रमण की चपेट में आए थे और पृथकवास पर थे। पडीक्कल बुधवार को नहीं भी खेल पाते हैं तो आरसीबी के लिए कोहली और वाशिंगटन सुंदर पारी की शुरूआत करेंगे। आरसीबी आने वाले मैचों में मोहम्मद अजहरूद्दीन और आस्ट्रेलियाई लेग स्पिनर एडम जाम्पा को उतार सकती है। आरसीबी के लिए बल्लेबाजी का दारोमदार एबी डिविलियर्स और कोहली पर होगा जबकि आस्ट्रेलियाई हरफनमौला ग्लेन मैक्सवेल भी अपनी उपयोगिता साबित करना चाहेंगे। पहले मैच में वह सहज दिखे और कप्तान कोहली समेत टीम प्रबंधन का उन्हें समर्थन हासिल है। कर्नाटक के 20 वर्ष के खब्बू बल्लेबाज पडीक्कल ने पिछले सत्र में 15 मैचों में टीम के लिए सर्वाधिक 473 रन बनाए थे। अपने पहले ही सत्र में उन्होंने पांच अर्धशतक जड़े थे। इसके बाद सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में छह मैचों में 218 और विजय हजारे ट्रॉफी में सात मैचों में 737 रन बनाए। पहले मैच में नाकाम रहने के बाद रजत पाटीदार और सुंदर सनराइजर्स के खिलाफ योगदान देना चाहेंगे।

मुंबई के खिलाफ मैच में आरसीबी के सभी गेंदबाज किफायती साबित हुए। हर्षल पटेल ने 27 रन देकर पांच विकेट लिए और वह इस प्रदर्शन को दोहराना चाहेंगे। दूसरी ओर सनराइजर्स के दोनों सलामी बल्लेबाज रिधिमान साहा और वॉर्नर केकेआर के खिलाफ नाकाम रहे। वे लय में लौटने की कोशिश करेंगे। सनराइजर्स वॉर्नर के साथ पारी की शुरूआत के लिए जॉनी बेयरस्टो को भी उतार सकते हैं। बेयरस्टो ने पहले मैच में अर्धशतक जमाया जबकि मनीष पांडे ने 44 गेंद में 61 रन का योगदान दिया। केन विलियमसन का इस मैच में भी खेलना संभव नहीं है क्योंकि कोच ट्रेवर बेलिस ने कहा कि उन्हें पूरी तरह फिट होने में समय लगेगा। भुवनेश्वर कुमार ने केकेआर के खिलाफ काफी रन दिए लेकिन वह ज्यादा समय खराब फॉर्म में रहने वाले गेंदबाजों में से नहीं हैं।

टीमें :

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर : विराट कोहली (कप्तान), देवदत्त पडीक्कल, फिन एलेन, एबी डिविलियर्स, पवन देशपांडे, वाशिंगटन सुंदर, डेनियल सैम्स, युजवेंद्र चहल, एडम जाम्पा, शाहबाज अहमद, मोहम्मद सिराज, नवदीप सैनी, केन रिचर्डसन, हर्षल पटेल, ग्लेन मैक्सवेल, सचिन बेबी, रजत पाटीदार, मोहम्मद अजहरूद्दीन, काइल जैमीसन, डेनियल क्रिस्टियन, सुयश प्रभुदेसाई , के एस भरत।

सनराइजर्स हैदराबाद : डेविड वार्नर (कप्तान), केन विलियमसन, विराट सिंह, मनीष पांडे, प्रियम गर्ग, ऋद्धिमान साहा, जॉनी बेयरस्टो, जेसन रॉय, श्रीवत्स गोस्वामी, विजय शंकर, मोहम्मद नबी, केदार जाधव, जे सुचित, जेसन होल्डर, अभिषेक शर्मा अब्दुल समद, भुवनेश्वर कुमार, राशिद खान, टी नटराजन, संदीप शर्मा, खलील अहमद, सिद्धार्थ कौल, बासिल थम्पी, शाहबाज़ नदीम और मुजीब उर रहमान।

एएफसी कप : त्रिभुवन आर्मी से भिड़ंत को तैयार बेंगलुरू एफसी

पणजी (गोवा)।

बेंगलुरू एफसी हीरो इंडियन सुपर लीग के सातवें सीजन के निराशाजनक प्रदर्शन को भुलाकर बुधवार को एएफसी कप प्रीलिम राउंड-2 मैच में नेपाल के त्रिभुवन आर्मी एफसी का सामना करेगी।बोम्बोलिम में होने वाले इस मैच में नेपाली टीम का मनोबल ऊंचा होगा क्योंकि वह हाल ही में अपने राउंड-1 मुकाबले में श्रीलंका पुलिस एससी को 5-1 से हराकर आई है। अब उसका सामना सुनील छेत्री की टीम से है, जो 2018-19 सीजन में आईएसएल चैम्पियन रही थी लेकिन बीते सीजन में वह सातवां स्थान ही हासिल कर सकी थी। यह पहला मौका था जब 2017-18 में लीग ज्वाइन करने वाली यह टीम प्लेऑफ के लिए क्वालीफाई नहीं कर सकी थी। अब बेंगलुरू के पास मार्को पेजाफली के रूप में एक नया मुख्य कोच है। 52 साल के इस जर्मन कोच के लिए त्रिभुवन आर्मी के साथ होने वाला मैच पहला एसाइनमेंट होगा और वह हर हाल में इसे पास करना चाहेंगे। बीते सीजन की तुलना में बेंगलुरू एफसी ने अपनी टीम के में कई बदलाव किए हैं और अब वह इन्हीं तमाम बदलावों के बीच एएफसी कप में अच्छा प्रदर्शन करना चाहता है। दोनों टीमों के बीच प्लेऑफ के लिए मुकाबला होगा और इसे जीतने वाली टीम बांग्लादेश के अबाहानी ढाका और मालदीव के क्लब इगल्स के बीच होने वाले मुकाबले के विजेता से भिड़ेगी।

टेनिस महिला रैंकिंग : अंकिता भारत की शीर्ष रैंकिंग खिलाड़ी के तौर पर बरकरार

नई दिल्ली।

भारत की महिला टेनिस खिलाड़ी अंकिता रैना डब्ल्यूटीए एकल और युगल वर्ग की ताजा रैंकिंग में भारत की शीर्ष रैंकिंग खिलाड़ी के रूप में बरकरार हैं। ताजा रैंकिंग के अनुसार, अंकिता एकल में 174वें स्थान पर हैं जबकि युगल में 96वें नंबर पर हैं। अखिल भारतीय टेनिस संघ (एआईटीए) ने ट्वीट कर कहा, अंकिता एकल और युगल रैंकिंग में भारत की शीर्ष रैंकिंग की खिलाड़ी बनी हुई हैं। उनके अलावा करमन कौर थांडी 16 स्थान के सुधार के साथ 621वें नंबर पर आ गई हैं। रिया भाटिया एकल रैंकिंग में 352वें स्थान पर हैं जबकि रुतुजा भोंसले 519वें, जील देसाई 568वें और सोवजन्या बाविसेती 611वें स्थान पर हैं। सानिया मिर्जा युगल रैंकिंग में 154वें स्थान पर हैं। लेकिन छह बार की ग्रैंड स्लैम विजेता सानिया अपनी सुरक्षित रैंकिंग नौवें स्थान के कारण इस साल होने वाले टोक्यो ओलंपिक में भाग लेंगी। सानिया ने अक्टूबर 2017 में चीन ओपन के बाद

लिए मातृत्व अवकाश के कारण डब्ल्यूटीए से उनकी रैंकिंग सुरक्षित रखने का आवेदन किया था। बाविसेती के अलावा सभी शीर्ष भारतीय महिला खिलाड़ी बिली जीन किंग कप के लिए लात्विया की राजधानी रीगा में हैं।

राष्ट्रीय महिला मुक्केबाजी शिविर में 2 कोच कोविड पॉजिटिव

नई दिल्ली।

भारतीय महिला मुक्केबाजों के राष्ट्रीय शिविर का हिस्सा 2 सहायक कोच कोविड-19 पॉजिटिव पाई गई हैं और उन्हें हल्के लक्षणों के बीच पृथकवास में रखा गया है। पॉजिटिव नतीजों की पुष्टि की। टीम यहां इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में ट्रेनिंग कर रही है। अब तक 2 महिला कोच पॉजिटिव पाई गई हैं। उन्हें पृथकवास में रखा गया है लेकिन शिविर पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार चल रहा है। इससे पहले पटियाला में पुरुष मुक्केबाजी दल के 10 सदस्य भी कुछ दिन पहले पॉजिटिव पाए गए थे जिसमें राष्ट्रीय मुख्य कोच सीए कटप्पा भी शामिल हैं। यह भी पता चला है कि बुखार का सामना कर रही दोनों कोचों के पॉजिटिव आने के बाद सोमवार को शिवर के अन्य सदस्यों का परीक्षण किया। कुछ मुक्केबाजों की तबीयत भी खराब है लेकिन उनके से कोई ओलंपिक के लिए जाने वाले समूह का हिस्सा नहीं है। शिविर में हुए परीक्षण के नतीजों का अब भी इंतजार है। उन्होंने कहा, ''कुछ सुरक्षा गार्ड भी बीमार हैं और कुछ अन्य सहयोगी स्टाफ के साथ उन्हें पृथकवास में रखा गया है लेकिन वे कोविड से संक्रमित हैं या नहीं इसकी जानकारी नहीं है।'' भारत के अब तक नौ मुक्केबाजों ने तोक्यो में होने वाले ओलंपिक खेलों के लिए क्वालीफाई किया है जिसमें पांच पुरुष और चार महिला मुक्केबाज शामिल हैं। ओलंपिक के लिए जाने वाले मुक्केबाज 21 से 31 मई तक दिल्ली में एशियाई चैंपियनशिप में हिस्सा लेंगे। इस टूर्नामेंट के लिए महिला टीम की घोषणा पहले ही हो चुकी है। भारतीय चुनौती की अगुआई छह बार की विश्व चैंपियन एमसी मैरीकोम (51 किग्रा) करेंगी। तोक्यो खेलों के लिए मैरीकोम के अलावा सिमरनजीत कौर (60 किग्रा), लवलीना बोरगोहेन (69 किग्रा) और पूजा रानी (75 किग्रा) ने क्वालीफाई किया है। पुरुष खिलाड़ियों में अमित पंघाल (52 किग्रा), मनीष कौशिक (63 किग्रा), विकास कृष्ण (69 किग्रा), आशीष कुमार (75 किग्रा) और सतीश कुमार (+91 किग्रा) तोक्यो ओलंपिक के लिए क्वालीफाई कर चुके हैं जिसे महामारी के कारण पिछले साल स्थगित कर दिया गया था। पिछले कुछ दिनों में भारत में कोविड-19 संक्रमण के मामलों में काफी तेजी से इजाफा हुआ है और प्रतिदिन एक लाख से अधिक नए मामले सामने आ रहे हैं। दिल्ली में रविवार को 10 हजार से अधिक नए मामले सामने आए।

कोकोनट थियेटर प्रस्तुत चायवाय एन्ड रंगमंच सिजन- 3, जिसकी शुरुआत होगी 12 एप्रिल 2021 से

"चाय वाय एन्ड रंगमंच 2020" जो कोकोनट थियेटर सफल सिझन रहा है । जिसमें समग्र भारत और विदेशके रंगमंच से जुड़े मेहमानोनें एक के बाद एक 108 सेशन्स कर इतिहास रचा । जिसमें भारत के भिन्न भिन्न राज्यों से नामवंत, प्रतिभा संपन्न, सुप्रसिद्ध लोक कलाके कलाकार और मेहमानोनें अपने अनुभवोंकी एक एक कड़ी जोड़ कर भारतीय रंगमंच के विभिन्न स्वरूप लोगो तक पहुंचाए हु आप सिजन 1 और सिजन 2 के हरेक सत्र कोकोनट थियेटर्स की यु-ट्यूब चैनल पर देख सकते है हु जो फ्री ऑफ कोस्ट दुनियाके सभी लोगोके लिए उपलब्ध है ।

श्री शत्रुघ्न सिन्हा, श्री सुभाष घई, पद्म विभूषण पुरस्कृत श्रीमती शबाना आज़मी, श्रीमती सुप्रिया पाठक, पद्मश्री और संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार विजेता श्रीमती रिटा गांगुली, श्री एमएस सत्यु, स्वर्गीय बंसी कौल, श्री मनोज जोशी। श्रीमती नीलम मानसिंह, श्री वामन केंद्रे, श्री सतीश आलेकर, श्रीमती डॉली अहलूवालिया, श्री प्रसन्ना, श्री सुरेश शर्मा (निदेशक - एनएसडी), श्रीमती रोहिणी हट्टंगडी और कई सारे.. मेहमानो के ऑन-लाइन सत्र आयोजित किए जिससे थिएटर के सभी क्षेत्र से जुड़े लोगोके लिए ये महेमान उनके प्रेरणास्रोत बन गए ।

चाय वाय रंगमंच सिजन 1 और 2 की सफलताके बाद कोकोनट थियेटर गौरव के साथ "चायवाय एन्ड रंगमंच गुजराती तख्ताने संग" सिजन - 3 की घोषणा 12 अप्रैल 2021 को टिकिट निन्जा के सहयोग से रोज शाम 6:00 बजे करेगा।

जिसमे गुजराती रंगभूमि के प्रसिद्द कलाकार ,लेखक ,दिग्दर्शक और टेक्नीशियन्स जैसे की श्री सिद्धार्थ रांदेरिया, श्रीमती रोहिणी हट्टंगड़ी, श्री विपुल मेहता, श्री प्रतीक गांधी, श्रीमती काजल ओझा वैद, श्री मिहिर भूता, श्री प्रवीण सोलंकी, श्री दिलीप रावल, श्रीमती वंदना पाठक, और भी कई अन्य मेहमान कोकोनट थिएटर के फेसबुक पेज पर लाइव आएंगे और अपने यादगार अनुभवों और सुझावों को सभी थिएटर प्रेमियों के साथ साझा करेंगे ।

आईपीएल टीमों के लिए कोरोना टेस्ट कर रहा है न्युबर्ग डायग्नोस्टिक्स

नई दिल्ली। भारत का चौथा सबसे बड़ा पैथोलॉजी प्लेयर, न्युबर्ग डायग्नोस्टिक्स, आईपीएल की सभी टीम के सदस्यों के लिए कोविड-19 आरटी पीसीआर टेस्ट कर रहा है। दिशानिर्देशों के अनुसार, सभी खिलाड़ियों, प्रबंधन टीम, प्रसारण दल, राज्य और केंद्रीय क्रिकेट समिति के सदस्य, ग्राउंडस्काइपर, होटल स्टाफ और इवेंट मैनेजमेंट टीम का परीक्षण किया जा रहा है। परीक्षण विभिन्न होटलों में आयोजित किए जा रहे हैं, जहां टीमें बायो बबल में रह रहे हैं और नियमित अंतराल पर अन्य स्टाफ सदस्यों के लिए स्टेडियम में परीक्षण किया जा रहा है। टीमों की स्क्रीनिंग मुंबई और चेन्नई में शुरू हो चुकी है, जहां शुरुआती मैच खेले जा रहे हैं। इससे पहले, न्युबर्ग डायग्नोस्टिक्स ने चेन्नई में भी आईपीएल की नीलामी के दौरान स्क्रीनिंग आयोजित की थी। इस अवसर पर न्युबर्ग डायग्नॉस्टिक्स की ग्रुप चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर ऐश्वर्या वासुदेवन ने कहा, आईपीएल 2021 के सुचारू कामकाज के लिए हम मैदान पर सभी टीम के सदस्यों के लिए परीक्षण करने और उन्हें वायरस के प्रसार को रोकने में मदद करने के लिए खुश हैं। न्युबर्ग आईपीएल के सभी आयोजन स्थलों में परीक्षण करेगा, जिसमें मुंबई, चेन्नई, दिल्ली, अहमदाबाद और कोलकाता शामिल हैं।

पेरेज की रियल मैड्रिड के अध्यक्ष के रूप में निर्विरोध वापसी

मैड्रिड।

फ्लोरेंटिनो पेरेज 2025 तक स्पेनिश फुटबाल क्लब रियल मैड्रिड के अध्यक्ष बने रहेंगे। क्लब द्वारा मंगलवार को इसकी पुष्टि की गई। पेरेज 2000 के बाद से ही इस पद पर काबिज हैं। 2006-2009 के बीच बीच में तीन साल के ब्रेक के साथ के बाद किसी ने उन्हें चुनाव लड़ने के बाद उनका विरोध करने के लिए उम्मीदवारी पेश नहीं की। यह चौथी बार है जब 74 वर्षीय पेरेज निर्विरोध रूप से चुने गए हैं। 2009 में जब वह लौटे थे तब भी किसी ने उनका विरोध नहीं किराय था। इसका एक कारण यह है कि 2012 में पेरेस ने किसी उम्मीदवार के लिए आवश्यक शर्तों को बदलकर उनके लिए इन्हें अधिक कठिन बना दिया था। इनमें प्रमुख शर्त यह थी कि सम्भावित उम्मीदवार को कम से कम 20 वर्षों तक रियल मैड्रिड क्लब का सदस्य होना होगा।

१४ वर्ष से बंद श्मशान रातों रात शुरू किया गया

कोरोना महामारी चल रही है इस दौरान १० तारीख से ही श्मशान भूमि में अंतिम संस्कार की क्रिया शुरू कर दी

सूरत।
सूरत में कोरोना का आतंक देखने को मिल रहा है और श्मशान गृह में लोगों के परिजनों को अंतिम संस्कार के लिए इंतजार में बैठना पड़ा है। तब लिंबायत स्थित मुक्तिधाम हिंदू श्मशान भूमि श्मशान कार्यरत कर दिया गया है। इसके अलावा पाल स्थित तापी नदी के किनारे श्मशान भूमि बनाने का कार्य शुरू किया गया है। सूरत में कोरोना का आतंक देखने को मिल रहा है। रोजाना रिकॉर्ड ब्रेक केस सामने आ रहे हैं। इसके अलावा अस्पताल में बेड की कमी की रिपोर्ट भी सामने आ रही है। दूसरी तरफ श्मशान भूमि के अंदर लोगों को परिजनों के अंतिम संस्कार के लिए भी अब इंतजार में बैठने का समय आ रहा है। अब सूरत में नया श्मशान भूमि तैयार करने का काम शुरू किया गया है। लिंबायत स्थित मुक्तिधाम हिंदू श्मशान भूमि श्मशान कार्यरत कर दिया गया है। मुक्तिधाम हिंदू श्मशान भूमि ट्रस्ट के प्रमुख सुरेशभाई ने बताया कि हाल में करोना की महामारी चल रही है इस दौरान १० तारीख से ही श्मशान भूमि में अंतिम संस्कार की क्रिया शुरू कर दी है। उन्होंने हाल में ३ फट्ठी पर अंतिम संस्कार हो रहा है कल से और ६ भट्ठी को कार्यरत किया जाएगा। इसके साथ ही उन लोगों को विशेष सावधानी रखने की अपील की थी। सूरत के पाल स्थित तापी नदी के किनारे नया श्मशान गृह बनाने का काम हाल में शुरू किया गया है। भाजपा के पूर्व शहर प्रमुख नीतिन भज ियावाला ने बताया कि २००६ से प्लान मंजूरी की वजह से बद पडी थी। वहां काम शुरू किया जा रहा है। कई ट्रस्टी और युवकों और मनपा के सहयोग से यहां श्मशान गृह का निर्माण कार्य शुरू किया गया है। भगवान से प्रार्थना है कि यहां लोगों को आना नहीं पड़े ऐसी प्रार्थना की है।

केस बढ़ने पर ब्लड बैंकों में प्लाजमा के स्टोक की कमी

सूरत।
कोरोना वायरस की पहली लहर के दौरान डायमंड सिटी के तौर पर जाना जाता सूर ने राज्य में सबसे ज्यादा ब्लड प्लाजमा डोनेट करके रिकॉर्ड बनाया गया था। लेकिन आठ महीने के बाद शहर जहां महामारी की दूसरी लहर के खिलाफ लड़ रही है तब शहर की ब्लड बैंकों ब्लड प्लाजमा को स्टोक करने के लिए संघर्ष कर रही है। गत वर्ष के अगस्त महीने में ब्लड बैंकों सिर्फ ३६ दिन के अंदर ब्लड प्लाजमा के ४५५ यूनिट इकट्ठा कर सकी थी। अभी न्यू सिविल अस्पताल और स्रूढ्ढरूश्वक्र अस्पताल में स्थित ब्लड बैंक सहित की चार मुख्य ब्लड बैंकों, वायरस से स्वस्थ हुए लोगों को आगे आने के लिए और ब्लड प्लाजमा का डोनेशन करने के लिए अपील की है, क्योंकि पिछले कई दिनों में मांग में भारी वृद्धि हुई है। ब्लड बैंकों ने दावा किया कि, ब्लड प्लाजमा का कम होने पर स्टोक डोनर्स की संख्या घटने का परिणाम है। जनवरी और मार्च में केस में कमी होने पर डोनर्स की संख्या भी घट गई। हमने रोजाना की जांच मिलती है लेकिन हमने सभी को पूरा कराने के लिए सक्षम नहीं है यह लोक समर्पण रक्तदान केंद्र के प्रमुख हरी कथीरिया ने बताया कि कमी होने पर भी वह रोजाना छह से सात यूनिट ब्लड प्लाजमा देने के लिए सक्षम है।

मोबाइल चुराते पकडे जाने पर भी रौब जमाने वाले को पीटा

चोरों को उधना पुलिस के साथ घर का संबंध होने का और १० लोग से ज्यादा की गैंग सक्रिय होने का यात्रियों का आरोप

सूरत।
उधना रेलवे स्टेशन पर ट्रेन में श्रमिकों के मोबाइल छीनते रंगेहाथ गिरफ्तार हुए एक शख्स को यात्रियों ने पीटने का विडियो वायरल हुआ है। दानापुर ट्रेन में एक नहीं ४-५ यात्रियों के मोबाइल चुराने जाने का सामने आने पर यात्रियों ने हाथ जोड़कर मोबाइल वापस देने की विनंती करने के बाद पुलिस को बुलाने का रौब जमाते मोबाइल चोर को सबक सिखाने के लिए कानून हाथ में लिए जाने का स्पष्ट होता है। बारबार यात्रियों को पुलिस के पास चल ऐसी धमकीभरे सूर में मोबाइल चोर का उधना पुलिस के साथ घर जैसा संबंध कई प्रश्नों को खड़ा करता है। स्थानीय लोगों ने बताया कि ट्रेन में मोबाइल चोरी, कीमती सामान की चोरी, पर्स और गहने के चोर गैंग के साथ रेलवे पुलिस के संबंधों को लेकर पर्यटक यात्रियों को लूटते है। नाम नहीं लिखने की शर्त पर एक यात्री ने बताया कि यह तो रोजाना है। चोर पकड़ा जाए और पुलिस स्टेशन में ले जाए तो यात्रियों को घंटों तक बिठाकर सवाल-ज बाव और निवेदन में ट्रेन छूट जाती है। यात्री परेशान होकर शिकायत नहीं करे इसीलिए चोर आसानी से छूटकर दूसरे यात्रियों को टार्गेट करने की लाइन में खड़े रहता है। उन्होंने आगे बताया कि यह कोई यात्री चोर नहीं है स्थानीय है हिस्ट्री लंबी है, पुलिस चोपडे में कुख्यात है। ऐसे चोरों के खिलाफ गुजसीटोक दर्ज करके स्थाई समाधान लाना चाहिए। यह सभी चोर सिर्फ ट्रेन के यात्री श्रमिकों को निशाना बनाते है। इसके पीछे एक कारण है कि यह कहा जा सकता है कि यात्री कहां शिकायत करेंगे। दूसरा एक कारण यह भी है कि, यह चोर सभी एक-दो काम करते थे। ऐसी १० से ज्यादा गैंग है। जबकि यात्री अकेला हो जाए तब इसे मारपीट करके या धमकी देकर छीन लेते है।

सूरत : कोविड अस्पताल में गंदगी के दृश्य सामने आये

सूरत।
सूरत में कोरोना वायरस के बढ़ रहे संक्रमण की वजह से अस्पताल भर रहे है। मरीजों को भर्ती करने के लिए लंबा वेंटिंग चल रहा है। हालांकि, बढ़ रहे संक्रमण के साथ सूरत के कोविड अस्पताल में गंदगी के दृश्य सामने आये है। जिसमें शौचालय-बाथरुम में पानी नहीं आने से मरीजों की हालत बदतर बन चुकी है। इस मामले में कई विडियो भी सामने आये है। सूरत में कोरोना का संक्रमण काफी तेजी से बढ़ रहा है। जिसे लेकर सूरत की सिविल अस्पताल में मरीज भर गये है। दूसरी तरफ यह कोविड अस्पताल में गंदगी के दृश्य सामने आये है। प्रशासन की लापरवाही से फैली हुई गंदगी को लेकर मरीज परेशान हो रहे है। टॉयलेट-बाथरुम में पानी नहीं आने से बाथरुम और टॉयलेट करने जाना मरीजों के लिए मुश्किल हो गया है। अस्पताल की छठ्ठी मंजिल में पैदा हुई परिस्थिति में कोई सुधार नहीं होने पर मरीजों ने विडियो बनाकर प्रशासन की कमी को सुधारने का प्रयास किया गया है। हालांकि, प्रशासन द्वारा प्राथमिक सुविधा पर ध्यान नहीं दिए जाने पर उपचार लेते मरीजों का सिर फट जाए ऐसी दुर्गंध के बीच उपचार लेने के लिए मजबूर बन गये हो ऐसी स्थिति सामने आई है। एक जागरूक नागरिक ने बताया कि, पिछले तीन दिन से कोविड-१ की छठ्ठी मंजिल के डी विभाग के बाथरुम में पानी नहीं आता है। जहां देखे वहां शौचालय जाते ढेर के बीच जाने के लिए मरीज मजबूर बन गये है। इतना ही नहीं बहुत बदबू के बीच उपचार ले रहे मरीजों की हालत से बदतर बन रही है। जागरूक नागरिक ने आगे बताया है कि, सरकार बाहर से दिखावा कर रही है। यहां वार्ड में आकर देखे तो मालूम होगा कि, मरीज कैसे और किस हालत में उपचार ले रहे है। इसकी अपेक्षा तो सार्वजनिक शौचालय अच्छी हालत में होती है हम इसमें क्यों उपचार ले रहे है भगवान मौत क्यों नहीं दे देते ऐसे विचार आ रहे है।

गुजरात हाईकोर्ट के जज बोले- सब कुछ भगवान भरोसे

अहमदाबाद।
गुजरात हाईकोर्ट ने राज्य में कोरोना से बिगड़ रहे हालात पर प्रदेश सरकार को कड़ी फटकार लगाई। एक जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए कोर्ट ने सोमवार को कहा कि प्रदेश और लोग जिस तरह की दिक्कतें झेल रहे हैं, वह सरकार के दावे से बहुत अलग है। चीफ जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस भार्गव करिया की बेंच ने कहा कि लोगों को लगने लगा है कि वे अब भगवान भरोसे हैं। एडवोकेट जनरल कमल त्रिवेदी ने कोर्ट को सरकार की ओर से उठाए गए कदमों के बारे में बताया। उन्होंने हॉस्पिटल में बेड्स की संख्या और एंटी वायरल ड्रग रेमडेसिविर की उपलब्धता बढ़ाने की जानकारी दी। हालांकि, बेंच ने ज्यादातर दलीलों को मानने से इनकार कर दिया। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से हुई सुनवाई में कोर्ट ने कहा कि आप जो दावा कर रहे हैं, स्थिति उससे काफी अलग है। आप कह रहे हैं कि सब कुछ ठीक है। लेकिन हकीकत में ऐसा नहीं है। इस समय लोगों में भरोसे की कमी है। लोग सरकार को कोस रहे हैं और सरकार लोगों को। इससे कुछ नहीं होगा। हमें संक्रमण की चेन तोडने् की जरूरत है।

सरकार बोली-वे भी लाइन में खड़े हैं, जिन्हें जरूरत नहीं

कोर्ट ने कहा कि कुछ मीडिया रिपोर्टों में दावा किया गया था कि रेमडेसिविर इंजेक्शन की शॉर्टेज है और इसके लिए एक अस्पताल के बाहर लंबी लाइन लगी है। इस पर एडवोकेट जनरल त्रिवेदी ने कहा कि जिन लोगों को दवा की जरूरत नहीं है, वे भी एहतियात के तौर पर इसे खरीदने की कोशिश कर रहे थे। अगर मरीज होम ट्रीटमेंट में है, उसे लक्षण नहीं हैं या उसकी हालत गंभीर नहीं है तो उसे रेमडेसिविर की जरूरत नहीं होती।

हर दिन 25 हजार रेमडेसिविर इंजेक्शन खरीद रही सरकार

त्रिवेदी ने कहा कि कंपनियों से सप्लाई भी कम है। सिर्फ 7 कंपनियां यह इंजेक्शन बनाती हैं। उनकी एक दिन की प्रोडक्शन कैपेसिटी सिर्फ 1.75 लाख की है। सरकार हर दिन लगभग 25 हजार इंजेक्शन खरीद रही है। इस पर हाईकोर्ट ने पूछा कि सरकार क्यों इसकी सप्लाई पर कंट्रोल कर रही थी, जब लोग इसके लिए भागदौड़ कर रहे थे। जिन हॉस्पिटलों में ये इंजेक्शन मिल रहे थे, वे भी कह रहे थे कि उनके पास दवा नहीं है। कोर्ट ने कहा कि दवा उपलब्ध है, लेकिन सरकार की ओर से इसकी सप्लाई कंट्रोल की जा रही है। लोग इसे क्यों नहीं खरीद सकते? सरकार ये सुनिश्चित करे कि यह हर जगह उपलब्ध हो। हम कारण नहीं रिजल्ट चाहते हैं।

शहर में कोरोना के गंभीर मरीज के लिए अस्पताल में जगह नहीं

वेंटिलेटर बिना के कुल ८४५ बेड में से ८२६ भर गये, वेंटिलेटर के साथ ४०० आईसीयू बेड में से ३९१ फुल

अहमदाबाद।
कोरोना के लगातार बढ़ रहे मामले के बीच अस्पताल में एडमिट होने के लिए लोगों को यहां से वहां चक्कर लगाना पड़ रहा है। फिलहाल के आंकड़े अनुसार, अहमदाबाद में ही हाल की स्थिति में वेंटिलेटर बिना के कुल ८४५ आईसीयू बेड में से ८२६ भर गये है और सिर्फ १९ ही खाली रहे हैं। इसी तरीके से वेंटिलेटर के साथ ४०० आईसीयू बेड में से ३९१ फुल है और सिर्फ ९ बेड खाली है। इस तरह गंभीर मरीजों के लिए ९८ फीसदी बेड फुल हो गये हैं। यह आंकड़ा १३ अप्रैल, सुबह में ९.३० बजे की स्थिति अनुसार प्राइवेट अस्पतालों में उपलब्ध बेड के है। अहमदाबाद की कई प्राइवेट अस्पतालों में कुल ५,७९४ बेड कोरोना के मरीज के लिए उपलब्ध है। जिसमें से ५३२७ बेड हाल में फुल हो चुके है, जबकि खाली बेड की संख्या सिर्फ ४६७ रही है। आईसोलेशन वार्ड में कुल २३१८ बेड उपलब्ध है, जिसमें से ८८ फीसदी बेड भर गये है और हाल सिर्फ २८० उपलब्ध है। जबकि एचडीयू बेड की संख्या २२३१ है, जिसमें से २०७२ भर गये है और १५९ खाली है। इस तरह, अहमदाबाद में प्राइवेट अस्पताल में उपलब्ध कुल ५७९४ बेड में से सिर्फ ८ फीसदी ही बेड खाली है। हालांकि, क्रिटिकल मरीज के लिए उपलब्ध बेड में तो फिलहाल सिर्फ २ फीसदी ही खाली है। उल्लेखनीय है कि, अहमदाबाद में पिछले कई दिनों से लगातार डेइली एक हजार के करीब केस आ रहे हैं। इसके अलावा, क्रिटिकल मरीजों की संख्या भी लगातार बढ़ रही होने से मरीजों को अस्पताल में एडमिट होने के लिए प्रयास कर रहे है। कई नामांकित प्राइवेट अस्पतालों में तो एडवांस रुपया चुकाने के बाद भी बेड नहीं मिल रहे होने का आरोप लग रहा है। अहमदाबाद की सरकारी अस्पतालों में भी हाल हालत बहुत ही गंभीर है।

परिजनों के अंतिम संस्कार में परिजन श्मशान में नहीं जाते है

स्वयंसेवक भय या डर रखे बिना किसी भी प्रकार की जाति धर्म का भेद रखे बिना अपनी ड्यूटी कर रहे है

राजकोट।
राजकोट शहर में तथा जिले में कोरोना संक्रमित मरीजों की मौत के आंकड़े में लगातार वृद्धि देखने को मिल रही है। दूसरी तरफ श्मशान में भी इंतजार देखने को मिल रहा है। कोरोना की वजह से मृतक के परिजन भी श्मशान में अंतिम संस्कार में जाने का टाल रहे हैं। तब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक हाल श्मशान में अंतिम संस्कार की क्रिया में भी अपना सहयोग दे रहे है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सौराष्ट्र क्षेत्र के प्रचारक पंकजभाई रावल ने बताया कि, हाल वैश्विक कोरोना महामारी का आतंक भारत सहित पूरे विश्वभर में देखने को मिल रहा है। तब राजकोट शहर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक द्वारा चार अलग-अलग श्मशानों में अंतिम क्रिया में अपना सहयोग दिया जा रहा है। २५ स्वयंसेवक भय या डर रखे बिना किसी भी प्रकार की जाति धर्म का भेद रखे बिना अपनी ड्यूटी कर रहे है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक श्मशान में अंतिम संस्कार की क्रिया में भी अपना योगदान दे रहे है। इसके साथ लोगों को उबली हुई दवाई तथा खाने सहित की व्यवस्था में भी अपना योगदान दे रहे है।

राजकोट शहर के रामनाथपरा श्मशान में अंतिम संस्कार की क्रिया में भी अपना सहयोग देने वाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक मेहुलभाई ने बताया कि, हाल कोरोना महामारी चल रही है। तब हम श्मशान में अंतिम संस्कार की क्रिया में सहयोग दे रहे है। हमें हमारे परिवार की तरफ से भी यह काम करने के लिए काफी सहयोग मिल रहा है। घर में प्रवेश करने के पहले हमने सेनिटाइज करते है। घर में जाने के बाद गर्म पानी से स्नान करके परिवार के सदस्यों को मिलते है। उल्लेखनीय है कि जबकि राष्ट्र पर विपदा आ गई है तब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का स्वयंसेवक घर के बाहर निकलकर लोगों की मदद के लिए आगे आये है। मोरबी की घटना या फिर २६ जनवरी की भूकंप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक ने हमेशा लोगों की मदद की है।

मराठी समुदाय द्वारा गुड़ी पड़वा (नया वर्ष) के मौके पर गुड़ी पूजा की गई।

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादकः संजय रमाशंकर मिश्रा द्वारा ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सुरत (गुजरात) प्रिन्टर्स- भूनेश्वरा प्रिन्टर्स, प्लाट नं. 29, परमानन्द इण्डस्ट्रीयल सोसायटी, चौकसी मील के पास, उधना मगदल्ला रोड़ (गुजरात) से मुद्रित एवं ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सूरत (गुजरात) से प्रकाशित। कार्यालय फोनः 0261-2274271, (न्यायिक क्षेत्र सूरत रहेगा)